ॐ

स्वामी रामतीर्थ

भाग २१ वां।

परमहंस स्वामी रामतीर्थ

प्रकाशक,

श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग।

लखनऊ।

श्री

स्वामी रामतीर्थ

उनके सदुपदेश–भाग २१ ।

प्रकाशक

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग ।

लखनऊ ।

प्रथम संस्करण प्रति २००० —:※:— जून १९२३ ज्येष्ठ दूसरा १९८०

फुटकर

बिना जिल्द ॥=) } डाक व्यय रहित। { सजिल्द ॥।=)

विषय सूची ।

श्री स्वामी रामतीर्थ

पहिली फोटो, आगरा, १६०२

भूमिका

यह संक्षिप्त जीवनी जो पं० चन्द्रिकाप्रसाद गुप्तने बड़े उत्साह से लिखी है, इसे श्रीरामतीर्थ ग्रन्थावली में इसलिये स्थान दिया गया है कि जो सविस्तर जीवनी श्री मन्नारायण स्वामी जी ने पहले उर्दू भाषा में प्रकाशित की थी, उसका यह हूबहू फोटो है; लेखक की शैली लिखने की ऐसी मनोहर और आकर्षक है कि पाठक यह नहीं भाँप सकता कि यह जीवनी किसी अन्य भाषा में से उद्धृत है या नवीन है। जब से हिन्दी ग्रन्थावली प्रकाशित हुई है उसमें उर्दू भाषा के लेखों का अनुवाद इसी पण्डित चन्द्रिकाप्रसाद जी की लेखनी से ही प्रकाशित हुआ था, इस लिये इस अनुवाद के कार्य्य ने इनमें न केवल राम के प्रति भक्ति का ही प्रवाह जारी कर दिया था बल्कि लेखनी की शैली भी राम की लेखनी वत् बना दी थी जिससे यह जीवनी मानो राम के हाथ ही से लिखी प्रतीत होती है। दूसरे, श्रीमन्नारायण स्वामीजी की आज्ञा से ही लेखक ने इसके लिखने का उत्साह किया था, और जिसे पढ़कर न केवल स्वामी जी का ही चित्त कृत-कृत्य हुआ है बल्कि जो भी इसे प्रेम की दृष्टि से पढ़ेगा स्वामी जी महाराज के चित्त की दाद देगा।

अन्य सज्जन भी यदि इसी प्रकार राम के प्रेम में निमग्न हो कर कोई लेख स्वामी राम तथा उनके उद्देश्यों के सम्बन्ध में भेजेंगे, तो लीग सहर्ष उनको ग्रन्थावली में स्थान देगी। ईश्वर करे राम-प्रेमियों के चित्त रामोपदेश को पढ़ते पढ़ते ऐसे ही प्रफुल्लित और उत्साह पूर्ण होते रहें।

मन्त्री

निवेदन ॥

परमहंस स्वामी रामतीर्थ जी महाराज की यह संक्षिप्त जीवनी लेखक की कम्पित लेखनी से एक-नई नवेली हिन्दी की माधुरी-पत्रिका में प्रकाशित कराने के विचार से लिखी गई थी, किन्तु कुछ स्वार्थ-वासनायें बीच में आजाने से इसके छपने में एक झगड़े की सम्भावना देखकर तीन महीने बाद, उसके श्रद्धेय सम्पादक से, यत्न के साथ, इस की कापियाँ ले ली गईं और वंद्यचरण श्रीमन्नारायण स्वामी जी महाराज ने इसे इस रूप में छपाकर हिन्दी पाठकों के सम्मुख उपस्थित कर दिया।

इस पवित्र जीवनी के लिखने में मेरा कोई कर्तृत्व नहीं, सब श्रीमन्नारायण स्वामीजी महाराज की बनाई हुई बातें और उन्हीं का दिया हुआ मसाला है। मैं ने उसे श्रद्धा-सहित अध्ययन करके संक्षेप में, अपनी भाषा में, लिख भर दिया है। इस लिये यदि इस पुस्तिका के पाठ से पाठकों को कुछ आनंद मिले, तो वे राम-बादशाह के पवित्र जीवन और श्रीमन्नारायण स्वामी के प्रसाद का फल समझें और यदि इसमें कुछ त्रुटि हो, तो मेरा निज का दोष समझें और मुझे मूढ़मति जान क्षमा करें।

६६१ सआदतगंज रोड,
लखनऊ, १४-१-२३ } चन्द्रिकाप्रसाद गुप्त।

ॐ

परमहंस स्वामी रामतीर्थजी।

Lives of all remind us.
We can make our life sublime.
(Longfellow)

❋ जन्म और बाल लीला ❋

विश्व-विदित, ब्रह्मलीन, आत्म-दर्शी परमहंस स्वामी रामतीर्थ जी महाराज एम० ए० का जन्म पंजाब प्रान्त के अन्तर्गत, गुज़रावाला-ज़िले में, मुरारीवाला-गाँव के एक गोस्वामी वंश (गोसाईं वंश) में, मिती कार्तिक शुक्ला १, बुधवार सं० १९३० वि० तदनुसार ता० २२ औक्टोबर, सन् १८७३ ई० को हुआ था। कहते हैं, यह गोसाईं-वंश वही वंश है जिसके पुरातन पूर्वज, सूर्य-वंशी क्षत्रियों के कुल-पुरोहित, ब्रह्मर्षि वशिष्ठ जी महाराज थे; और, इस कलि-काल में भी, जिस वंश में, हिन्दी-साहित्य-गगन के पूर्ण चन्द्र, रामचरित-मानस के रचयिता, महात्मा गोसाईं तुलसीदास जी ने प्रकट होकर अपनी कालांतकारिणी कीर्ति-कौमुदी का संप्रसार किया है। हमारे चरितनायक का गृहस्थाश्रम का नाम गोसाईं तीर्थराम था।

तीर्थराम जी के पिता गोसाईं हीरानन्द जी थे। आप एक सीधे-सादे, साधारण स्थिति परन्तु क्रोधी-प्रकृति के पुरुष थे और ब्रह्म-वृति .... द्वारा अपना निर्वाह करते

थे । उस समय कौन कह सकता था कि गोसाईं हीरानंद जी एक ऐसा पुत्र रत्न उत्पन्न करेंगे जो अपनी विद्या, बुद्धि, अलौकिक प्रतिभा, असाधारण अध्यवसाय एवं त्याग और उत्साहपूर्ण अल्पकालिक जीवन से सारे संसार को मोहित कर देगा—अपने ज्ञान के प्रकाश से विचारवान् प्रतिभा पुरुषों की दृष्टि में बिजली बन् चमककर उनके हृदयोंमें एक दिव्य अलौकिक जीवन की ज्योति जगा जायगा !

अपने ज्योतिर्विद् पाठकोंकी विशेष जानकारी के लिए, यहाँपर चरितनायकका जन्मपत्र दे देना अप्रसंगिक न होगा—

श्रीमद्विक्रमादित्यराज्यतो गताब्दः १९३० शालिवाहन शाके १७९५ दक्षिणायने शरदृतौ मासानामुत्तमे मासे कार्तिक मासे शुभे शुक्लपक्षे तिथौ प्रतिपदायां बुधवासरे २५ घड़ी ५९ पल स्वाती नक्षत्रे ३१ घड़ी २७ पल प्रीतियोगे २६ घड़ी ४६ पल ववकरणे एवं पंचांगे श्रीसूर्योदयादिष्टम् २४ घड़ी ४८ पल तत्समये श्रीलग्नोदये श्रीगोस्वामि रामदयालात्मज श्रीगोस्वामि हीरानन्द गृहे पुत्रो जातः । स्वाती नक्षत्रस्य चतुर्थचरणे जातत्वात् राशिनाम ताराचंद्रः ।

अथ जन्मलग्नम् ।

१ राहु
११
२
१२
१०
शनि
९
३
मंगल
६
४
बृहस्पति,के
८
७
५
शु.बु.चं.सू.

तीर्थराम के जन्म पर ज्योतिषियों ने अनेक भविष्य-वाणियाँ की थीं, किन्तु संक्षेपानुरोध से उनका यहाँ सविस्तार उल्लेख नहीं किया गया। केवल एक ज्योतिषी की वाणी का ही उल्लेख कर दिया है। इस ज्योतिषी ने इस जन्म लग्न पर निम्नलिखित १० फल वर्णन किए हैं:-"(१) अति विद्वान् हो, (२) २१ या २२ वर्ष की आयु में परमार्थ का ख्याल बहुत अधिक हो (३) इष्ट अद्भुत हो जैसे ओंकार (४) विदेश अवश्य जावे (५) राजदरबार में चमत्कार होकर रहे नहीं (६) शरीर रोगी रहे बल्कि किसी अङ्ग में दोष हो (७) अन्तिम आयु में विषय वासना नितान्त नष्ट (८) दो पुत्र अवश्य हों (९) आयु २८ से ३५ वर्ष के भीतर २ अर्थात् अल्पायु हो (१०) यदि ब्राह्मण हो तो मृत्यु जल में और यदि क्षत्रिय वंश से हो तो मृत्यु मकान पर से गिरकर हो।"

अस्तु। हमारे तीर्थराम जी अभी केवल ९ मास के ही थे कि उनकी माता का देहान्त होगया जिससे उनके पालन पोषण का भार उनकी ज्येष्ठा भगिनी श्रीमती तीर्थदेवी तथा उनके पिता की भगिनी पर पड़ा। अत्यन्त शैशव-काल (बचपन) में ही माँ का दूध छूट जाने और ऊपर का-गाय आदि का-दूध मिलने से बालक तीर्थराम अत्यन्त कृशांग और कमज़ोर रहते थे; किन्तु बड़े होने पर, युवा अवस्था में पाँव रखते ही, जैसे वे आत्मिक उन्नति में सबसे ऊंची छलाँग मार गए, वैसेही उन्होंने अपनी शारीरिक शक्ति का भी आदर्श * विकाश किया। अपने संन्यास-समय में तो

* आजकल शारीरिक बल और स्वस्थ शरीर के समझने में बड़ी भ्रांति फैली हुई है। लोग साधारणतया माल खा-खाकर खाली देह फुला लेने वालों अथवा डंड-कसरत करके डँड-बल्ले तैयार कर लेने वाले 'अखाड़े

नित्य तीस-तीस मील दुर्गम पर्वतीय मार्गों में चलना उनके लिए बच्चों का खेल-सा होगया और हिमानी-मंडित अत्यंत शीतल शैल-शिखरों के निकट केवल एक धोती पहन कर जीवन-यापन करना एक साधारण बात होगई ! उन्होंने अमरनाथ और जमुनोत्री आदि यात्रायें केवल एक धोती पहने हुए कीं।

तीर्थराम की बुआ-हीरानन्द की बहन अत्यन्त धर्म-परायणा और प्रेम की पुतली थीं। उनका सारा समय भजन पूजन और व्रत उपवास आदि धर्म-कृत्यों में ही व्यतीत होता था। वे नित्य ग्राम के देव-मंदिरों में दर्शन करने जातीं और आरती में सम्मिलित होती थीं। जहाँ कहीं कथा-वार्त्ता होती, उसे वे बड़ी श्रद्धा के साथ सुनती थीं। वे जहां जातीं, अपने साथ बालक तीर्थराम को भी ले जाती थीं। इस प्रकार अत्यन्त शिशुपन से ही तीर्थराम की होनहार आत्मा पर धर्म की छाप पड़ने लगी।

गोसाईं हीरानन्द का कथन है कि तीर्थराम जब केवल तीन वर्ष के थे, तो एक दिन वह उन्हें अपने साथ लेकर धर्मशाला में कथा सुनने गए। जब तक वह कथा सुनते रहे, बालक तीर्थराम टकटकी लगाकर कथा कहने वाले पण्डित की ओर देखते रहे। दूसरे दिन फिर जब कथा की

के पहलवानों' को ही स्वस्थ और बलवान् समझ लेते हैं, जो ज़रा ज़रा सी सर्दी गरमी और काम-क्लेश मिलते ही बीमार हो जाते हैं। वास्तव में ये लोग दूषित मल-मांस-पूर्ण और रोगी हैं। स्वस्थ और शक्तिमान् वे ही पुरुष हैं जो सुडौल, छने हुए शरीर के, कष्ट-सहिष्णु और अश्रांत परिश्रम-शील हैं।

शंख-ध्वनि हुई, तो तीर्थराम ने रोना आरम्भ कर दिया। गोसाईं हीरानन्द ने बच्चे को बहलाने के अनेक प्रयत्न किए; पर सब निष्फल हुए। अन्त को जब वे उसे गोद लेकर धर्मशाले की ओर चलने लगे, तो वह बिल्कुल चुप होगया। पिता पुत्र को चुप हुआ जान ज़रा ठिठके और चाहा कि उसे घर छोड़ जायँ, किन्तु ऐसा करते ही बालक ने रोना आरम्भ कर दिया, और जब वे उसे लेकर फिर कथा की ओर बढ़ने लगे, तो उसने रोना बन्द करदिया। उस दिनसे नित्य कथा का शंखनाद होते ही तीर्थराम रोना आरम्भ करते और कथा-मन्दिर में पहुँचते ही उनका रोना बन्द हो जाता।

तीर्थराम अभी दो वर्ष के भी न होने पाए थे कि उनके पिता ने उनकी सगाई गुजराँवाले ज़िले की तहसील वज़ीराबाद के वैरोके ग्राम में पण्डित रामचन्द्र के यहाँ कर दी। उस स्थान में पण्डित रामचन्द्र का वंश प्रतिष्ठित समझा जाता है। इसी वंश के एक वृद्ध पं० मुसद्दीलाल थे, जिनके पिता सिक्खों की अमलदारी में, वज़ीराबाद में, मुहासिब थे। आगे चलकर जब तीर्थराम की आयु लगभग १० वर्ष की हुई, उनका व्याह भी कर दिया गया। भला इस छोटी सी आयु में बच्चा इस गोरखधन्धे को क्या जान सकता था। कहते हैं, थोड़ा और बड़े होने पर जब तीर्थरामजी ने होश संभाला, तो एक दिन वे अपने पिता से बोले कि "आपने मुझे किस छोटी आयु मे ही इस जंजाल में फँसा दिया।" किन्तु इस बाल-ब्याह से हिन्दू-घरानों की जो दयाजनक दुर्गति है, उसके अनुसार ऐसी बातों की कौन परवाह करता है।

शिक्षा

अस्तु । तीर्थराम जब ५½ वर्ष के हुये, तो मुरारीवाला ग्राम की वर्नाक्युलर प्रायमरी पाठशाला में पढ़ने बिठाए गए । तीर्थराम यद्यपि छोटे डील के और सीधे-सादे थे, परन्तु उनकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी—पढ़ने में सबसे प्रवीण और परिश्रमी थे। मदरसेके मुख्य अध्यापक मौलवी मोहम्मदअली थे । वह तीर्थराम की प्रखर प्रतिभा और अद्भुत धारण-शक्ति से बड़े विस्मित होते थे । तीर्थराम जी ने तीन ही वर्ष में पाठशाले की पाँचों श्रेणियाँ पढ़कर परीक्षा में प्रथम श्रेणी का प्रमाण पत्र प्राप्त किया और छात्रवृत्ति के साथ ही अपने मौलवी साहब से फ़ारसी की गुलिस्ताँ बोस्ताँ भी पढ़लीं । तीर्थराम की स्मरण शक्ति इतनी प्रबल थी कि पंचम श्रेणी की उर्दू-रीडर की कुल नज़्में (कवितायें) उन्होंने कंठाग्र करली थीं । कहते हैं तीर्थराम जब मौलवी साहब के निकट अपनी शिक्षा समाप्त कर चुके, तो अपने पिता से कहने लगे—"पिताजी ! मदरसे के मौलवी साहब ने मेरे साथ बड़ा परिश्रम किया है, मैं चाहता हूँ कि हमारे घर में जो भैंस है, वह मौलवी साहब को गुरुदक्षिणा में भेंट की जाय !" अहा ! नव-दस वर्ष के बालक को यह कर्तव्य-ज्ञान !! सच है, 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात ।

आरंभिक शिक्षा समाप्त करने के अनंतर अंगरेज़ी पढ़ने के लिये तीर्थरामजी अपने पिताके साथ गुजराँवाला हाई-स्कूल में भरती होने गए । यह नगर मुरारीवाला गाँव से

लगभग ७ मील के अंतर पर है। इस दस वर्ष की छोटी आयु में बच्चे को बिना किसी संरक्षक के घर से इतनी दूर अकेला छोड़ना उचित न समझकर उनके पिताजी उन्हें अपने एक सुयोग्य कृपालु मित्र भगत धन्नारामजी*के पास, उनकी संरक्षकता में छोड़ गए। नियमानुसार तीर्थराम ने गुजराँवाला हाई स्कूल में, स्पेशल क्लास में, भरती होकर दो वर्ष में मिडिल और दो वर्ष में इन्ट्रेन्स की भी परीक्षा दे दी। इंट्रेन्स की परीक्षा के समय उनकी आयु १४३ वर्ष की थी और परीक्षा में उनका नंबर पंजाब में ३८वाँ रहा।

हाई स्कूल की शिक्षा समाप्त करके उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके लिये हमारे तीर्थरामजी लाहौर जाने लगे। पिताजी उन्हें आगे पढ़ाना नहीं चाहते थे। इसलिये तीर्थरामजी बिना उनकी सहायता की आशा किए, केवल भगवान् के भरोसे, घर से रूठ कर लाहौर चले गए और वहाँ मिशन कालेज के फर्स्ट ईयर में भरती हो गए। इस समय वे केवल अपनी उस छात्र-वृत्ति पर जो उन्हें गुजराँवाला की म्युनिसिपल्टी से मिलती थी, अपना निर्वाह करते थे और

---

*भगत धन्नारामजी एक बाल-ब्रह्मचारी साधु हैं। आप जाति के अरोड़ा (मनोचे) हैं। आपका जन्म सं० १९०० विक्रमी में हुआ था। आपके पिता का नाम जवाहिरलाल था। आपकी माता शिशुपन में ही मर गई थीं। इससे आप अपनी दादी के हाथों पले। भगतजी बचपन ही से करामाती थे। आपकी शिक्षा साधारण देसी थी। आपको लड़कपन में कुश्ती का बड़ा शौक़ था और आगे को चलकर आप इस विद्या में बड़े निपुण हो गए। एक बार आपने एक अपने से दूने पहलवान को कुश्ती में दे मारा। मकतब की शिक्षा के बाद आप ठठेरी का धंधा करने लगे। और उसमें शीघ्र निपुण हो गए। अपनी १९ वर्ष की आयु में आप एकबार कटासराज तीर्थ के मेले पर गए। वहाँ आपने अनेक साधुओं के दर्शन किए।

अपने मौसिया (मासड़) पण्डित रघुनाथमल डाक्टर तथा अपने गुरु भगत् धन्नाराम की सहायता और प्रोत्साहन से शिक्षा लाभ करते रहे ।

एफ़० ए० के द्वितीय वर्ष में घोर परिश्रम करने के कारण हमारे तीर्थरामजी प्रायः रोगी (बीमार) रहने लगे । इसपर भी उन्हें एकांत-सेवन और परिश्रम करने का इतना

आपको बहुत ही भाया। आपने वहाँ एक बर्तनों की दुकान कर ली। वहाँ आप जो पैदा करते, सब साधु संतों को खिला देते। आपने वहीं कुछ हठ योग की साधना की और उसमें आप दृढ़ साधक बने। आपको कथा वार्ता और सत्संग का बड़ा शौक़ था और जब कभी भक्ति और प्रेम का प्रसङ्ग आता, तो आपके लोचनों में जल भर जाता। इसी कटासराज में आप कुछ शेर व सखुन भी कहने लगे। आपकी शेरें (कवितायें) बड़ी चुटीली होती थीं। एक बार आपने योग वशिष्ठ की कथा बड़े ध्यान से सुनी, तब से आपमें अद्वैत ब्रह्म ज्ञान का भाव भर गया। आप सबको ईश्वर या ब्रह्म कहने लगे। अब भी भगतजी के परिचित लोग उन्हें ईश्वर (रब व खुदा) ही कहते हैं। जब आपमें इस ब्रह्मभाव की जिज्ञासा बढ़ी, तो आप फिर गुजराँवाला चले आए। यहाँ आपको कई महात्माओं के दर्शन हुए, जिनसे आपने समाधि लगाना सीख लिया। लेकिन शीघ्रही आप एकांत-अभ्यास के लिये जङ्गलों में चले गए। वहाँ आपको अनहद-शब्द का अभ्यास होगया। मन-वाणी पर सिद्धी मिली। आपका शापाशीर्वाद फलने लगा। आप जङ्गलों से लौटकर फिर गुजराँवाला में रहने लगे और वहां आपकी अच्छी ख्याति होगई। इन्हीं दिनों आपको तीर्थराम सौंपे गए। तीर्थराम पर आपका ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे आपको केवल अपना गुरु ही नहीं वरन् ईश्वर का प्रत्यक्ष अवतार मानने लगे। तीर्थरामजी ने अपने विद्यार्थि जीवन में कोई ११०० पत्र अपने गुरु भगत धनाराम के पास भेजे। इनमें कोई ३०० पत्र श्रीमन्नारायण स्वामी ने राममंत्र के नाम से छापे हैं। भगतजी आज भी जीवित हैं। गुजरांवाला में, पुरानी मंडी में रहते हैं। लगभग ८० की आयु होते हुए भी आप खूब चलते-फिरते और आजकल के नवयुवकों से कहीं अधिक शक्तिमान हैं।

चाव था कि उन्होंने अपने एक पत्र में अपने मौसिया जी को लिखा था कि—

"मेरी सबसे भारी ज़रूरत (महान् आवश्यकता) (१) एकांत स्थान और (२) समय है। हे परमात्मन्! (१) परिश्रमी मन, (२) एकान्त स्थान और (३) समय, इन तीनों वस्तुओं का कभी मेरे लिये अकाल न हो। मौसिया जी! यही मेरा संकल्प है। आगे परमेश्वर मालिक है।"

ईश्वर से इन प्रार्थनाओं का हमारे तीर्थराम जी को यह फल मिला कि निरन्तर रोग-ग्रसित रहने पर भी वे सन् १८९० ई० की एफ़० ए० की परीक्षा में अपने कालेज में सर्व-प्रथम रहे और सरकारी छात्रवृत्ति भी प्राप्त करने के साथ ही उसी कालेज में अपनी बी० ए० की शिक्षा भी जारी रक्खी।

इस प्रकार शिक्षा बराबर जारी रखने से जब उन के पिता जी को यह निश्चय होगया कि तीर्थराम हमसे सहायता लिये बिना भी अपनी शिक्षा जारी रख सकता है और हमारी इच्छानुसार नौकरी आदि करने को तैयार नहीं होता, तो क्रोध में आकर वे तीर्थराम जी की युवती स्त्री को भी, उनके पास, लाहौर में, छोड़ गए और स्वयं किसी तरह की भी सहायता करने को तैयार न हुए। इस समय नवयुवक तीर्थरामजी को बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। घर का किराया, किताबों और फ़ीस का बोझ, अपना और स्त्री का खर्च; सब कैसे पूरा हो। किन्तु सच है, दृढ़ संकल्प धीर पुरुष कठिनाइयों के पर्वत को चूर्ण कर देता है, निराशा के सघन घन को छिन्न-भिन्न कर देता है।

एकबार छात्रवृत्ति के रुपए गोसाईं जी ने किताबों में खर्च कर दिए और अन्य खर्चों के लिए उस समय ध्यान न रहा; किन्तु बाद में बड़े सङ्कट में पड़ गए । हिसाब लगाने से मालूम हुवा कि इस महीने में उनके हिस्से में केवल तीन पैसे रोज़ बचते हैं । पहले तो घबराए, फिर सँभलकर बोले "भगवान् हमारी परीक्षा करना चाहते हैं, कुछ चिन्ता नहीं; भिक्षुक भी तो दो तीन पैसे में दिन काटते हैं ।" अतः गोसाईं जी दो पैसे की सबेरे और एक पैसे की संध्या को रोटी खाकर दिन काटने लगे । किन्तु एक दिन जब संध्या को रोटी खाने दुकान में गए तो दूकानदार ने कहा—"तुम रोज़ एक पैसे की रोटी के साथ दाल मुफ्त में खाजाते हो । जाओ, मैं एक पैसे की रोटी नहीं बेचता ।" यह दशा देखकर नवयुवक तीर्थराम जीने मनमें संकल्प कर लिया कि "चलो, जबतक और रुपया नहीं मिलता, २४ घण्टों में एक ही समय भोजन किया जायगा।"

लेख-विस्तार-भय से हम यहाँ तीर्थरामजी के उन पत्रों को उद्धृत करने से विरत होते हैं जिनसे इस दरिद्रता और संकटके समय भी उनके हृदय की परिश्रम-शीलता, गुरु-भक्ति और ईश्वर-विश्वास का ज्वलंत परिचय मिलता; तथापि हम यहाँ उनके १६ जुलाई १८६० के, उस लंबे पत्र में से जिसे उन्हों ने अपने ईश्वर-तुल्य गुरु भगत धन्नाराम जी के पास भेजा था, परिश्रम के संबंध की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत कर देने के लोभ को संवरण नहीं कर सकते । तीर्थ रामजी लिखते हैं—

"दुनिया में कोई व्यक्ति होशियार हो ही नहीं सकता

जब तक वह मिहनत न करे । जो होशियार हैं, वे सब बड़ा परिश्रम करते हैं, तब चतुर हैं । यदि हमको उनका परिश्रम विदित न हो, तो वे गुप्तरूप से अवश्य करते होंगे, या वह" पहले कर चुके होंगे । यह बात बड़ी जँची हुई है । ....

"ज़िहन जिसको कहते हैं, वह भी मिहनत से बढ़ जाता है । येन-केन-प्रकारेण यदि कोई व्यक्ति विना परिश्रम के परीक्षा में अच्छा रह भी जाय, तो उसको पढ़ने का स्वाद कदापि नहीं मिलेगा । वह मनुष्य बहुत बुरा है । वह उस मनुष्य-जैसा है जिसने आपसे एक बार कहा था कि मुझे एक कविता बना दो, मगर उसमें नाम मेरा रखना ।"

"मैं यह जानता हूँ कि मिहनत बड़ी अच्छी वस्तु है; मगर मैं मिहनत इस तरह पर नहीं करनेवाला हूँ कि बीमार हो जाऊँ ।.........परमात्मन् ! मेरा मन मिहनत में अधिक लगे । मैं निहायत दर्जे की मिहनत करूँ !"

गोसाईं तीर्थरामजी गणित में बड़े तीक्ष्ण थे और परिश्रमी भी प्रसिद्ध थे; किंतु उस वर्ष बी० ए० की परीक्षा न जाने किस ढंग से हुई कि श्रेणी के चतुर और सुयोग्य विद्यार्थी तो अनुत्तीर्ण रहे और अयोग्य निकम्मे उत्तीर्ण हो गए । हमारे गोसाईंजी भी केवल अँगरेज़ी के परचे में तीन नंबर कम मिलने से अनुत्तीर्ण कर दिए गए । इस बात से कालिज के प्रोफ़ेसर और प्रिंसिपल को भी बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्होंने बहुत प्रयत्न किया कि गोसाईं जी के अँगरेज़ी के परचे दुबारा देखे जायँ, परंतु सब व्यर्थ हुआ । फिर क्या था, लगे अँगरेज़ी पत्रों में लेख-पर-लेख निकलने । युनि-

वर्सिटी के फेलो महाशयगण घबराए। परिणाम यह निकला कि भविष्य के लिये यह रूल पास किया गया कि जिन विद्यार्थियों के किसी विषय में नियत अंकों से ५ अंक कम हों या समस्त अंकों के जोड़ में से ५ अंक कम हों, तो वे विचाराधीन (Under Consideration) रक्खे जायँ और उनके परचे फिर जाँच किए जाँय। इस नियमसे यद्यपि अन्य विद्यार्थियों के लिये भविष्य में कुछ सुभीता हो गया, किंतु हमारे गोसाईंजी उस वर्ष बी० ए० में रह गए और दुबारा पढ़ने को विवश किए गए।

इस अचानक विपत्ति से गोसाईं जी के सुकोमल हृदय पर कठोर आघात लगा। उनकी छात्रवृत्ति भी बंद होगई। गोसाईंजी बहुत ही व्याकुल हुए। वे सोचने लगे, मेरी छात्रवृत्ति तो बंद होगई, अब यदि मैं अपनी शिक्षा जारी रक्खूं, तो साल-भर की फ़ीस, किताबों और भोजन आदि का व्यय, सब कहाँ से आवेगा। इसी आकुलावस्था में उन्होंने एक दिन अपने मौसिया जी को लिखा कि "यदि तीर्थराम अपनी इच्छानुसार शिक्षा न पाएगा, तो संभव है कि बहुत शीघ्र वह संसार से विदा होजाय"। जब किसी तरह उन्हें शांति न मिली, तो एक दिन एकांत-स्थान में, ईश्वर का ध्यान करके, नीचे-लिखे श्लोक का उच्चारण करते हुए फूट-फूट कर रोए—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव॥

रोते-रोते नवयुवक तीर्थराम की आँखें लाल होगईं।

आँसुओं से कपड़े भीग गए । वे सैकड़ों प्रकार के करुणा-पूर्ण हृदय-वेधक वाक्यों का उच्चारण करते थे । अंत में ये ईश्वर से अत्यंत विगलित चित्त से, निम्न-लिखित प्रार्थना कविता रूप में करने लगे—

कुंदन के हम डले हैं जब चाहे तू गला ले ;
बावर न हो तो हमको ले आज आज़मा ले ।
जैसे तेरी खुशी हो सब नाच तू नचा ले ;
सब छान-बीन करले हर तौर दिल जमा ले ।
राज़ी हैं हम उसीमें जिसमें तेरी रज़ा है ;
यां यों भी वाहवा है और वों भी वाहवा है ।
या दिलसे अब खुश होकर कर हमको प्यार प्यारे ;
ख्वाह तेग खैंच ज़ालिम, टुकड़े उड़ा हमारे ।
जीता रखे तू हमको या तनसे सिर उतारे ;
अब राम तेरा आशिक कहता है यों पुकारे ।
राज़ी हैं हम उसीमें जिसमें तेरी रज़ा है ;
याँ यों भी वाह वा है और वों भी वाह वा है ।

ध्रुवकी प्रार्थना जिन कानों से सुनी गई थी, प्रह्लाद की पुकार जिन कानों में पहुँची थी, द्रौपदी के करुण-क्रंदन ने जिन कर्ण-कुहरों में प्रवेश किया था, ग्राह-ग्रसित गज की गुहार जहाँ लगी थी, नवयुवक तीर्थराम का आर्त-नाद भी उन्हीं कानों में पहुँचा । भगवान् तो आज भी व्याघ्र बनने को तैयार हैं ; किंतु कमी है प्रह्लाद जैसे भक्तों की । दूसरे ही दिन कालेज के हलवाई, झंडूमल ने तीर्थरामजी से प्रार्थना की कि गोसाईंजी ! साल-भर रोटी आप मेरे ही घर खालिया करें । उसने रहने के लिये अपना घर भी

दिया । कालेज के प्रोफ़ेसरों ने उन्हें ढाढ़स दिया और गणित के प्रोफ़ेसर श्रीयुत गिलबर्टसन साहब तो फ़ीस के रुपये अपनी तनख़्वाह से देने लगे । इसके अतिरिक्त गोसाईं जी को कई ट्यूशन भी मिलगए, जिससे उनकी बी० ए० की शिक्षा सोत्साह होती रही ।

अबकी बार बी०ए० की परिक्षा में गोसाईंजी पंजाब में सबसे प्रथम रहे । इस परिक्षा के विषय में स्वामीजी ने अपने 'विश्वास, नामक व्याख्यान में कहा था—

"राम जब बी०ए० की परीक्षा देरहा था, तो परीक्षक ने गणित के पर्चे में १३ प्रश्न देकर ऊपर लिखदिया था कि इन १३ प्रश्नों में से कोई से ९ प्रश्न हल करो । राम के हृदय में विश्वास उमंग कर रहा था, उसने उतने ही समय में जितने में कि अन्य विद्यार्थियों ने कठिनता से ३ या ४ प्रश्न हल किये होंगे, सब प्रश्नों को हल करके लिख दिया कि इन १३ प्रश्नों में से कोई से ९ प्रश्न जाँच लीजिए।" अस्तु ।

बी०ए० की परीक्षा में फ़र्स्ट डिवीज़न में पास होने और युनिवर्सटी-भर में प्रथम रहने से गोसाईं तीर्थरामजी को एम्० ए० के लिये ६०) मासिक छात्र-वृत्ति मिलने लगी ।

मिशन कालेज में उन दिनों एम्० ए०-क्लास नहीं खुली थी, इस लिये बी०ए० पास करने के बाद एम्० ए० की पढ़ाई आरंभ करने के लिये गोसाईंजी मई सन् १८९३ ई० को गवर्नमेंट-कालेज में भरती हुए । इस समय गोसाईंजी की आयु १९½ वर्ष के लगभग थी । जिस वर्ष गोसाईंजी ने बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की, उस वर्ष पंजाब युनिवर्सिटी की ओर से दो सौ पौंड की छात्रवृत्ति देकर किसी विद्यार्थी को सिविल सर्विस की परीक्षा के लिये विलायत भेजना था । गवर्नमेंट कालेज के प्रिंसिपल मिस्टर बेल ने

जो उस समय स्थानापन्न रजिस्ट्रार थे और जो एक बार की अचानक भेंट से गोसाईं तीर्थराम के बड़े हितचिंतक बन गए थे, गोसाईंजी के लिये सिफ़ारिश की। किंतु गोसाईंजीकी अभिलाषा तो धर्म-उपदेशक वा अध्यापक बनने की थी, न कि सिविल-सर्विस-परीक्षा पास करके इक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिशनर बनने की, इस कारण वह छात्र-वृत्ति किसी अन्य विद्यार्थी को मिल गई।

एम्० ए० में पढ़ते-समय अपनी दिनचर्या के विषय में गोसाईं तीर्थराम ने अपने ता० ६ फ़रवरी सन् १८९४ ई० के पत्र में अपने गुरुजी को लिखा है—

"मैं आजकल ५ बजे सवेरे उठता हूँ और ७ बजे तक पढ़ता रहता हूँ। फिर दिशा आदि जाकर स्नान करता हूँ और व्यायाम करता हूँ। इसके पश्चात् पंडितजी की ओर जाता हूँ। मार्ग में पढ़ता रहता हूँ। वहाँ एक घंटे के बाद रोटी खाकर उनके साथ कालेज में जाता हूँ। कालेज से डेरे आते समय मार्ग में दूध पीता हूँ। डेरे (निवास-स्थान) पर कुछ मिनट ठहरकर नदी को जाता हूँ। वहाँ जाकर नदी-तट पर कोई आध घंटे के लगभग टहलता रहता हूँ। वहाँ से लौटते-समय नगर के चहुँ ओर बाग़ में फिरता हूँ। वहाँ से डेरे आकर कोठे पर टहलता रहता हूँ। इतने में अँधेरा हो जाता है। (किंतु यह स्मरण रहे, मैं चलते-फिरते पढ़ता बराबर रहता हूँ।) अँधेरा होने पर कसरत करता हूँ और लैम्प जलाकर ७ बजे तक पढ़ता हूँ। फिर रोटी खाने जाता हूँ और प्रेम (एक विद्यार्थी जिसको पढ़ाते थे) की ओर भी जाता हूँ। वहाँ से आकर कोई १०-१२ मिनट तक अपने घर के वले (मकान में लगी हुई लकड़ी) के साथ कसरत करता हूँ। फिर कोई साढ़े दस बजे तक पढ़ता हूँ और लेट जाता हूँ। मेरे अनुभव में आया है कि यदि हमारा पक्काशय (मेदा) स्वस्थ-दशा में रहे, तो हमें अत्यंत आनंद, प्रफुल्लता, चित्त की एकाग्रता, परमेश्वर का स्मरण और अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है, बुद्धि और स्मरण-शक्ति अति तीक्ष्ण हो जाती हैं। पहले तो मैं खाता ही बहुत कम हूँ, दूसरे जो खाता हूँ उसे भली भाँति पचा लेता हूँ।"

इस समय गोसाईं जी का भोजन अत्यंत हलका और सतोगुणी होता था और आगे चलकर तो वह केवल दूध ही पर निर्वाह करने लगे थे। इस प्रकार के आहार से गोसाईं जी को आशातीत शक्ति प्राप्त हुई।

इन दिनों गोसाईं तीर्थरामजी प्राकृतिक दृश्यों के भी बड़े अनुरागी थे। और इन दृश्यों का चित्र वह जिस स्वाभाविकता से लिपि-बद्ध कर सकते थे, वह उनके पत्रों से प्रकट है। इस प्राकृतिक दृश्य के वर्णन में आप अपने गुरुजी महाराज को १० जुलाई, १८९२ के पत्र में लिखते हैं—

"यहाँ कल बड़ी वर्षा हुई थी। आज मैं कालेज से पढ़कर सैर करता हुआ डेरे आ रहा हूँ। इस वक्त बड़ा सुहाना समय है। जिधर देखता हूँ उधर जल नज़र आता है या सब्ज़ी। ठंडी-ठंडी पवन हृदय को बड़ी प्रिय लगती है। आकाश में बादल कभी सूर्य को छुपा लेते हैं, कभी प्रकट कर देते हैं। नाले-नालियों में पानी बड़े ज़ोर से बह रहा है। गोल बाग़ (लाहौर का बाग़) के वृक्ष फलों से भरपूर हैं, टहनियाँ झुककर पृथिवी से आ लगी हैं, यही प्रतीत होता है कि अनार, आड़ू, आम इत्यादि अभी गिरे कि गिरे। कबूतर, काक और चीलें बड़ी प्रसन्नता से हवा की सैर कर रहे हैं। वृक्षों पर पक्षी बड़े आनंद से गायन कर रहे हैं। भाँति-भाँति के पुष्प खिले हुए यही मालूम देते हैं कि मानो मेरी राह देखने के लिये आँखें खोले प्रतीक्षा में खड़े हैं। पृथ्वी पर हरियावल क्या है, सब्ज़ मख़मल का बिछौना बिछा है। सरो और सफ़ेदा के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष अभी स्नान करके सूर्य की ओर ध्यान किए एक टाँग से खड़े हैं, मानो संध्या-उपासना में मग्न हैं। आकाश की नीलिमा और सफ़ेदी ने अजब बहार बनाई है। मेंढक बरसात की ख़ुशियां मना रहे हैं। हरएक तरफ़ से ख़ुशी के नक़्क़ारे बज रहे हैं, मानो पृथ्वी आकाश का विवाह होनेवाला है जिसकी संतान कार्त्तिक और मगसर (मार्गशीर्ष) के सतोगुणी महीने होंगे। इस समय आप मुझे याद आते हैं। चूँकि मैं आपको यह सब चीज़ें दर्शा नहीं सकता, लिख देता हूँ। अब मैं डेरे आ पहुँचा हूँ।"

बी० ए० उत्तीर्ण करने के अनंतर गोसाईं तीर्थरामजी गणित-विद्या में अच्छी ख्याति पा चुके थे जिससे कई कालेजों के बी० ए० और एम्० ए० के विद्यार्थी उनसे गणित सीखने आया करते थे। एक अँगरेज़-विद्यार्थी को भी वे गणित पढ़ाते थे। अपने कालेज में नाम-मात्र को एक घंटे के लिये जाते थे, और अपना शेष समय मिशन-कालेज में एफ्० ए० और बी० ए० के विद्यार्थियों को गणित पढ़ाने में व्यय करते थे। इसके अतिरिक्त अन्य प्रोफ़ेसरों के गणित के परचे भी उनके पास देखने के लिये आते थे। इन सब बातों से उनके पास इतना काम बढ़ गया कि वे दिन-रात काम में व्यतिव्यस्त रहते थे। इसके सिवा व्यय का भार भी उनपर इतना अधिक था कि छात्र-वृत्ति के साठ रुपयों में से एक पैसा भी न बचता था। परीक्षा के समय फ़ीस जमा करने को उनके पास कुछ न था। अपने मौसिया की सहायता लेकर वह एम्० ए० की परीक्षा में प्रविष्ट हुए और परीक्षा दी। एप्रिल, १८९५ में परिणाम निकला कि आप अत्यंत सफलता-पूवक एम्०ए०-परीक्षामें उत्तीर्ण हुए।

❋ कार्य-क्षेत्र ❋

एम्० ए० पास होने के पश्चात् गवर्नमेंट कालेज के प्रिंसिपल मिस्टर बेल (Bell) की सम्मति से, एफ्० ए० और बी० ए० के विद्यार्थियों को १०) या १५) मासिक लेकर गणित सिखाने के लिये, आपने मई सन् १८९५ में प्राइवेट श्रेणियाँ खालीं। किंतु घोर परिश्रम के कारण स्वास्थ्य बिगड़ जाने से उन्हें स्वास्थ्य-रक्षाके लिये, शीघ्र ही, अपने गाँव मुरारीवाला जाना पड़ा। थोड़े दिनों बाद जब आप लाहौर आए,

तो आप सनातनधर्म-सभा के मंत्री चुने गए। इसी अवसर पर आपने ला० हंसराजजी की सहायता से दयानंद ऐंग्लो-वैदिक कालेज में ड्राइंग सीखी। तत्पश्चात् आप स्यालकोट अमरीकन मिशन हाई स्कूल में ७७) मासिक पर सेकंड मास्टर नियुक्त हुए। और कुछ ही दिन बाद उक्त हाई स्कूल के बोर्डिंग के सुपरिंटेंडेंट भी हो गए। केवल दो मास इस पद पर काम करने के पश्चात्, एप्रिल १८९६ में, गोसाईंजी मिशन कालेज लाहौर में गणित के प्रोफ़ेसर, और तदनंतर मई १८९६ में सीनियर प्रोफ़ेसर के पद पर आसीन हुए।

इन दिनों हमारे गोसाईंजी के हृदय में कृष्ण-भक्ति का स्रोत बड़े वेग से उमड़ रहा था। आपने गीता का विधिवत् अनुशीलन किया। त्याग आप में इस कोटि का था कि वेतन मिलते ही वह दीन-दुखियों में बँट जाता और घर के लिये कुछ न रहता, जिससे उनके पिता गोसाईं हीरानंदजी वेतन मिलने के समय स्वयं लाहौर आते और घर के खर्च के लिये आवश्यक द्रव्य ले जाते। इन दिनों हमारे प्रोफ़ेसर तीर्थरामजी के अजमेर, शिमला लाहौर, अमृतसर, पेशावर और स्यालकोट आदि स्थानों की सनातन-धर्म सभाओं में जो व्याख्यान होते थे, उनमें आप प्रेम और ईश्वर-भक्ति की स्रोतस्विनी में श्रोताओं को मग्न कर देते थे। व्याख्यान देते समय आपके अनुराग-पूर्ण नेत्रों से अविरल अश्रु-धारा प्रवाहित होती थी। लाहौर में "इश्क़े-इलाही" पर आपका जो भाषण हुआ, उसमें प्रेम के आवेश में आप इतना रोए कि हिचकियाँ आने लगीं। पेशावर में आपकी जो "तृप्ति" विषय पर वक्तृता हुई, उसमें तो आप इतने विह्वल हुए कि

बहुत देर तक आपके मुँह से शब्द ही न निकल सका। ऐसे ही भाषणों को सुनकर श्रीमन्नारायण स्वामी का मन-मधुकर भी गोसाईंजी के पाद-पद्मों में लुभायमान हो गया।

इन्हीं दिनों द्वारका-मठ के अधीश्वर श्री ११०८ जगद्गुरु श्रीशंकराचार्यजी महाराज लाहौर पधारे। लाहौर की सनातन धर्म-सभा की ओर से गोसाईंजी को उनकी सेवा का भार सौंपा गया। जगद्गुरुजी महाराज संस्कृत-भाषा के पूर्ण विद्वान् और वेदांत-शास्त्र के पारदर्शी थे। वे प्रायः उपनिषदों की कथा कहा करते थे और वेदांत-शास्त्र का उपदेश देते थे। उनके सत्संग से गोसाईंजी के पवित्र अंतःकरण पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उनका भक्ति-विगलित चित्त ज्ञान की अग्नि में चमकने लगा। उनकी कृष्ण-दर्शन की लालसा आत्म-साक्षात्कार में परिणत हुई। गरमियों की छुट्टियों में प्रतिवर्ष मथुरा वृंदावन की यात्रा करने के स्थान में अब वे उत्तराखंड के निर्जन वन और एकांत गिरि-गुहा का निवास ढूँढने लगे। जगद्गुरुजी के उपदेश से अब गोसाईंजी गीता के साथ-साथ उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों और वेदांत-ग्रंथों का निरंतर अध्ययन करने लगे। अब वे आत्म-विचार, आत्म-चिंतन, एवं आत्म-ध्यान में निमग्न होने लगे। जब अपने इस विचार-परिवर्तन की सूचना उन्होंने अपने पूर्व गुरु भगत धन्नारामजी को दी, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए और उन्होंने अत्यंत उत्साह-वर्द्धक उत्तर दिया, क्योंकि भगतजी पहले ही से ब्रह्म-ज्ञान में अनुरक्त थे।

जिस मकान में गोसाईंजी रहते थे, उसमें एकांत-अभ्यास का स्थान न होने से उन्होंने उसे छोड़कर एक दूसरा मकान हरिचरण की पौड़ियों में ले लिया। इस मकान में पहुँच-

कर गोसाईंजी ने कितने ही काम किए। यहीं पर एक बार लोक-विख्यात स्वामी विवेकानंदजी भी अपने साथियों-सहित पधारे और गोसाईंजी का आतिथ्य ग्रहण किया; इसी मकान से गोसाईंजी ने उर्दू भाषा में 'अलिफ़'-नाम का वेदांत की शिक्षा देनेवाला एक मासिक पत्र भी निकाला; इसी मकान से जब उनके मानस-सरोवर में निजानंद की लहरें वेग से हिलोरें लेने लगीं, तो वानप्रस्थ का जीवन व्यतीत करने के लिये वे स्त्री-पुत्रों-सहित वन वासी हुए; इसी मकान पर, फ़रवरी १८९८ में, उन्होंने एक "अद्वैतामृत-वर्षिणी" नाम की सभा स्थापित की जिसमें प्रति बृहस्पतिवार को साधु-महात्मा और विवेकीजन एकत्रित होकर श्रवण-मनन-निदिध्यासन द्वारा निजानंद की प्राप्ति के लिये अपनी वृत्तियों को अंतर्मुखी करने का अभ्यास करते थे; इसी मकान में रहते-रहते जब निरंतर अभ्यास से निजानंद उमड़ने लगा और चित्त प्रतिदिन सांसारिक मोह-माया से मुड़ने लगा, तो उन्होंने भगवान् के आगे सदैव के लिये आत्म-समर्पण करके, अपने २५ ऑक्टोबर १८९७ ई० के पत्र में, अपने माता-पिता को लिख भेजा—

'मेरे परम पूज्य पिताजी महाराज! चरण-वंदना! आपके पुत्र तीर्थराम का शरीर तो अब बिक गया। बिक गया राम के आगे। उसका शरीर अपना नहीं रहा। आज दीपमाला को अपना शरीर हार दिया और महाराज को जीत लिया। आपको धन्यवाद हो। अब जिस वस्तु की आवश्यकता हो, मेरे मालिक से माँगो, वह तत्काल स्वयं देंगे या मुझसे भिजवा देंगे। पर एक बार निश्चय के साथ उनसे आप माँगो तो सही। उन्नीस-बीस दिन से मेरे सारे काम बड़ी निपुणता से अब वह आप करने

लग पड़े हैं, आपके भला क्यों न करेंगे? घबराना ठीक नहीं। जैसी आज्ञा होगी, वैसा बर्ताव में लाया जायगा। महाराज ही हम गोसाइयों का धन हैं। अपने निज के सच्चे और अमूल्य धन को त्यागकर संसार की झूठी कौड़ियों के पीछे पड़ना हमको उचित नहीं। और इन कौड़ियों के न मिलने पर शोक करना तो बहुत ही बुरा है। अपने वास्तविक धन और संपत्ति का आनंद एक बार ले तो देखो।"

इसी मकान में ही श्रीमन्नारायण स्वामी (पूर्व आश्रम में नारायणदास) ने भी गोसाईं जी के सत्संग से तृप्त और मस्त होकर उनके आगे अपने को पूर्ण समर्पित किया था और तब से वह निरंतर उनके साथ रहते रहे, इत्यादि।

एप्रिल, १८९८ को गोसाईं जी ने कटासराज-तीर्थ की यात्रा की। इन दिनों यहाँ बहुत बड़ा मेला होता है, जिसमें अनेक साधु-महात्मा और विद्वान्-योगिराज आते हैं। किंतु उन्नतमना गोसाईं जी इस मेले से प्रसन्न नहीं हुए, उन्होंने अपने गुरुजी को लिखा—"जो सुख एकांत-सेवन और निज धाम में है, वह कहीं भी नहीं।" इन्हीं दिनों गोसाईं जी का विद्यार्थियों के लाभ के लिये अँगरेज़ी में, गणित-विषय पर, एक विद्वत्ता-पूर्ण भाषण हुआ, जो बाद में "How to excel in Mathematics (गणित में कैसे उन्नति कर सकते हैं)" नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। यह गोसाईं जी की पहली रचना थी, जो मुद्रित हुई। यह पुस्तिका अब स्वामी रामतीर्थ के अँगरेज़ी लेक्चरों के चौथे खंड में, जो "In woods of God Realisation" के नाम से प्रकाशित हुए हैं, छपी है। लीग ने उसे अलग भी प्रकाशित किया है।

❋ वन-गमन और आत्म-साक्षात्कार ❋

सन् १८९८ की गरमी की छुट्टी में, एकांत-सेवन के विचार से, गोसाईंजी हरिद्वार से ऋषिकेश होते हुए तपोवन पधारे। ऋषिकेश से वन-गमन करते समय गोसाईंजी के पास जो कुछ पैसा-कौड़ी था सो सब उन्होंने साधु-महात्माओं की सेवा में अर्पण कर दिया था और आप अकेले कई उपनिषदों की पुस्तकें साथ लिए, ईश्वर के भरोसे, तपोवन चल दिए। यह तपोवन ऋषिकेश से ८ मील के अंतर पर आरंभ हो जाता है। इसमें एक ब्रह्मपुरी-मंदिर है जिस के निकट कल्लु-कल्लोलिनी गंगा अपने कलकल-नाद से प्रवाहमान हैं। यह स्थान गोसाईंजी को बहुत ही भाया और यहीं पर उन्होंने अपना आसन जमा दिया। कहते हैं, यहाँ पर गोसाईंजी ने अत्यंत एकाग्र-चित्त होकर आत्म-साक्षात्कार किया। इस स्थान पर निवास करके गोसाईं-जी ने अपनी आंतरिक अवस्था और आत्म-साक्षात्कार का जो मनोहर वर्णन, उर्दू में, "जलवए-कुहसार" (पार्वतीय दृश्य) के नाम से किया है, पाठकों के विनोदार्थ उसका आभास-मात्र यहाँ दिया जाता है। *

"गंगे! क्या वह तेरी ही छाती है जिसके दूध से ब्रह्म-विद्या पोषण पाती है? हिमालय! क्या वह तेरी ही गोद है जिसमें ब्रह्म-विद्या खेला करती है? नंगे सिर, नंगे पैर, नंगे शरीर, उपनिषदें हाथ में लिए, आत्म-साक्षात्कार की तरंग में दीवाना वार राम पहाड़ी जंगलों में, गंगा-किनारे, फिर रहा है (और कह रहा है—)

---

* विस्तार-पूर्वक वर्णन के लिये ग्रंथावली का १८ वाँ भाग देखो।

बर्ग-हिना पै जाके लिखूँ दर्द-दिल की बात ;
शायद कि रफ़्ता-रफ़्ता लगे दिलरुबा के हात।

(पहाड़ की कंदरा से प्रतिध्वनि होती है, मानों पर्वत राम से अपनी सहानुभूति प्रकट कर रहे हैं, राम की बात का हँकारा भरते हैं—)

इश्क़ का मन्सब लिखा जिस दिन मेरी तक़दीर में;
आह की नक़दी मिली सहरा मिला जागीर में।"

भीषण प्रतिज्ञा

"बस, तख्त या तख्ता (अर्थात् राजसिंहासन या चिता)। माता-पिता ! तुम्हारा लड़का अब लौटकर नहीं जायगा। विद्यार्थी लोगो ! तुम्हारा विद्या-गुरु अब लौटकर नहीं जायगा। गृहिणी ! तुम्हारा नाता कब तक निभेगा ? बकरे की मा कब तक खैर मनाएगी ? राम या तो सब संबंधों से श्रेष्ठतर होगा, या तुम्हारी सब आशाओं के सिर पर एक सिरे से पानी फिर जायगा। या तो राम की आनंदघन तरंगों में सब धन-धाम निमग्न होगा, या राम का शरीर गंगा की तरंगों के समर्पण होगा—देह-दशा का अंत होगा। मरकर तो हरएक की हड्डियाँ गंगा में पड़ती हैं, किंतु यदि राम को आत्म-साक्षात्कार न हुआ—यदि शरीर-भाव की गंध शेष रह गई—तो राम की हड्डियाँ और मांस जीतेजी मछलियों की भेंट होंगे।

बनके परवाना तेरा आया हूँ मैं ऐ शमए-तूर;
बात वह फिर छिड़ न जाए, यह तक़ाज़ा और है।"

अत्यंत प्रयत्न करने पर भी जब गोसाईंजी को आत्म-साक्षात्कार न हुआ, तो एक दिन व्याकुल होकर उन्होंने अपना शरीर गंगा की धारा में बहा दिया। गंगा चढ़ाव पर थी, कलकल-ध्वनि करता हुआ जल अत्यंत वेग से वह रहा था। एक विशाल तरंग ने गोसाईंजी के शरीर का गाढ़ आलिंगन किया—अपने भीतर छिपा लिया, और अत्यंत वेग से बहाकर एक पहाड़ी चट्टान पर, जो

गंगा के भीतर थी, लिटा दिया। थोड़ी देर में जब पानी उतर गया; राम पहाड़ी पर उठ बैठे; और बोले—

"मैं कुश्तगाने-इश्क़ में 'सरदार' ही रहा;
सर भी जुदा किया, तो 'सरे-दार' ही रहा।
ख़ूने-आशिक़ चे क़ार मी आयद;
न शायद गर हिनाय पाए दोस्त॥"

कहते हैं, राम को यहीं आत्म-साक्षात्कार हुआ और वह बोल उठे—

"आज़ादा-अम, आज़ादा अम; अज़ रंज दूर उफ़्तादा अम;
अज़ इशवए जान-जहाँ आज़ादा अम, बाला स्तम।१।
तनहा स्तम, तनहा स्तम, चेह तुरफ़ा तनहा स्तम;
जुज़ मन न बाशद हेच शै, यकता स्तम, तनहा स्तम।२।
चूँ कार मरदुम मी कुनंद अज़ दस्तो-पा हरकत कुनंद;
बेकार माँदम, जाय हरकत हम मनम हर जा स्तम।३।
अज़ खुद चहा केकूँ अहम, गो मन कुजा हरकत कुनम;
अज़ बहर चे कारे कुनम मन कुंद-मतलबहा स्तम।४।
चेह मुफ़लिसम चेह मुफ़लिसम बा ख़ुद नमीदारम ज़रे;
अज़म जवाहिर मिहर-ज़र जुमला मनम, यकता स्तम।५।
दीवाना अम, दीवाना अम, बा अक़्लो-हुश बेगाना अम;
बेहूदा आलम मी कुनम ईं करदमो मन ख़ाास्तम।६।
नमरूद शुद मरदुद चूँ!—चूहश निगह महदूद चूँ;
मारा तकब्बुर कै सज़द, चूँ किब्रिया हर जा स्तम।७।
तालिब! मकुन तौहीने-मन, दर ख़ाना अत राम अस्त बीं;
रू ताफ़्ती अज़ मन चरा! दर क़ल्बे-तो पैदा स्तम।८।

अर्थ—१-मैं मुक्त हूँ, मैं मुक्त हूँ; दुःख और शोक से दूर हूँ। जगत्-रूपी बुढ़िया की चटक-मटक से मुक्त हूँ—परे हूँ।

२. मैं अकेला हूँ, मैं अकेला हूँ, कैसा आश्चर्य है, मैं अकेला हूँ! मेरे सिवाय किसी वस्तु का अस्तित्व ही नहीं है।—(मैं) एकमेवाद्वितीयम् हूँ, नितांत अकेला हूँ।

३. जब सब लोग काम करते हैं और हाथ-पैर का संचालन करते हैं,

तो मैं अक्रिय रहता हूँ, क्योंकि गति का निकेतन तो मैं हूँ—समस्त विश्व मुझ ही से गति-शील है।

४. मैं अपने से बाहर कहाँ जाऊँ? बतला, मैं कहाँ गति करूँ? और किसलिये कोई काम करूँ? क्योंकि समस्त प्रयोजनों का प्रयोजनात्मा तो मैं ही हूँ।

५. क्या मैं निर्धन हूँ?—क्या मैं सचमुच निर्धन हूँ और अपने साथ एक यव का दाना भी नहीं रखता हूँ?—नहीं! तारे, रत्न, सुवर्ण और सूर्य सब मैं हूँ—एक मैं ही हूँ।

६. मैं उन्मत्त हूँ, मैं विक्षिप्त हूँ, बुद्धि और विवेक से कुछ संबंध ही नहीं रखता। मैं व्यर्थ ही विश्व को उत्पन्न करता हूँ, और उत्पन्न करते ही उससे न्यारा हो जाता हूँ।

७. नमरूद * क्यों विताड़ित (मरदूद) हुआ है—इसलिये कि उसकी दृष्टि परिच्छिन्न थी। मुझे ऐसा अहंकार कब शोभा देता है, जब कि मैं सर्वोपरि श्रेष्ठ (महान्) और सर्वत्र व्याप्त हूँ।

८. ऐ जिज्ञासु! मेरा अपमान मत कर। देख, तेरे घर में 'राम' समाया हुआ है। तू ने मुझसे मुँह क्यों मोड़ लिया? मैं तो तेरे हृदय में प्रकाशमान हूँ।"

---

* नमरूद शाम-देश का बादशाह था, जो अपना वैभव सबसे बड़ा हुआ देखकर अपने को ईश्वर कहने लगा था। ईश्वर की इच्छा से उसके कान में एक मच्छड़ घुस गया और उसके मस्तिष्क में फड़कने लगा। हकीमों ने उपाय बताया कि कोई आपके सिर पर जूते लगाया करे, तो आपको चैन पड़ेगी। तदनुसार वह सिंहासन पर बैठता था, और एक दास पीछे से उसके सिर पर जूते लगाया करता था। इसके पश्चात् एक फ़रिश्ते ने आकर उसका सब राज-पाट छीनकर उसे निकाल दिया। जब नमरूद ने गली-गली का भिखारी बनकर महा-दुःख सह लिया, तब उसके होश ठिकाने हुए और उसने पाप-पुण्य के फल-विधाता के अस्तित्व को स्वीकार किया। श्रीस्वामीजी महाराज कहते हैं कि नमरूद के दुर्दशा भोगने का कारण यह हुआ कि उसने अपने को ईश्वर तो जाना, किंतु अपने परिच्छिन्न शरीर-मात्र को ही ईश्वर जाना; समस्त चराचर जगत् को ईश्वर नहीं जाना। इसी से उसकी यह दुर्गति हुई। किंतु मैं नमरूद-जैसा अहंकार नहीं करता।

❋ विरक्त जीवन ❋

इस एकांत-अभ्यास से मस्त और आत्मानंद में मग्न गोसाईं तीर्थरामजी जब वन से लौटकर आए, तो उनके जीवन का ढंग ही दूसरा हो गया। अब वे संसार के व्यवहारों से बिलकुल अलग रहने लगे। पैसा-कौड़ी, घर-द्वार, अपने-पराए का भाव लुप्त होने लगा। वेतन मिलते ही वे उसे कालेज के छात्रों और चपरासियों के आगे रख देते और कह देते—"भगवन्, जिसको जितनी ज़रूरत हो, ले लो"। फिर भी जो बचता, उसे दीन-दुखियों और साधुओं को खिला देते। जो थोड़ी-बहुत रक़म गोसाईं हीरानंद के हाथ लगती, उससे घर का खर्च चलता। वेतन के अतिरिक्त उन्हें मिडिल और इंट्रेंस के विद्यार्थियों के पर्चे देखने की फ़ीस से भी यथेष्ट द्रव्य मिलती थी, किंतु वह भी सब योंही खर्च हो जाती थी। खाने-खिलाने के अतिरिक्त गोसाईंजी को पुस्तकावलोकन का भी बड़ा शौक़ था। इसके लिये मेसर्स रामकृष्ण एंड संस बुकसेलर, लाहौर का फ़र्म नियत था। कोई भी पुस्तक गणित-विज्ञान या तत्त्व-ज्ञान पर निकलती, वह तत्काल मँगाई जाती और अध्ययन के पश्चात् लायब्रेरी में रक्खी जाती। इन सब खर्चों का परिणाम यह होता कि प्रायः महीने के अंत में जब उनके पास खाने तक को न रहता, तब उपवास किए जाते और जब कभी जलाने को तेल तक न रहता, तो पुस्तकें लेकर घर से बाहर ऐसे स्थानों में पहुँच जाते, जहाँ प्रकाश होता। उनकी यह दशा पढ़कर पाठक कहीं यह न समझ बैठें कि गोसाईं तीर्थरामजी दुखी और दरिद्र रहते थे।

नहीं-नहीं, महापुरुष गोसाईं तीर्थरामजी इस अवस्था में जितने सुखी और संतुष्ट थे, उतना कोई चक्रवर्ती सम्राट् भी हो सकता है या नहीं, इसमें संदेह है। उन्होंने अपने ११ दिसंबर १८६८ के पत्र में अपने गुरुजी को लिखा है—

"राम *इस बाहरी ग़रीबी की वजह से लाइन्तहा दर्जे की अमीरी और बादशाही कर रहा है! पहले तो बड़ी चिंता के साथ अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति का प्रयत्न हुआ करता था; अब आवश्यकताएँ बेचारी अपने आप पूरी होकर सम्मुख आ जायँ तो राम की दृष्टि उनपर पड़ जाती है; नहीं तो उनके भाग्य में राम का ध्यान कहाँ? प्रारब्ध-कर्म और काल-रूपी सेवकों को सौ बार ग़रज़ हो, तो आकर राम-बादशाह के चरण चूमें; अन्यथा उस शाहंशाह को इस बात की क्या परवा है कि अमुक सेवक आकर अपना नृत्य कर गया है या नहीं।

सौ बार ग़रज़ होवे तो धो-धो पियें क़दम;

क्यों चर्ख़ो-मिहरो-माह पै मायल हुआ है तू!
ख़ंजर की क्या मजाल कि इक ज़ख़्म कर सके;
तेरा ही है ख़याल कि घायल हुआ है तू।"

हम पहले कह आए हैं कि जबसे राम-बादशाह उत्तराखंड से आए, उनके जीवन का स्रोत दूसरी ओर प्रवाहित होने लगा था। अब उनकी यह दशा थी कि कालेज में विद्यार्थियों को गणित के प्रश्न समझाते समय वे वेदांत के सिद्धांत सिद्ध करने लगते और अवसर पाकर उन्हें शम्सतबरेज़, मौलाना रूम आदि के उच्च कोटि के शेर सुनाकर, सूफ़ी-धर्म की गंभीर उक्तियों का मर्म खोलने लगते। यह कहना अत्युक्ति न होगा कि विद्यार्थियों के चित्तों पर इन बातों का बड़ा प्रभाव पड़ता। वे राम को महापुरुष मानकर उनके प्रति भक्तिमान रहते। इस बात से मिशन

* गोसाईं तीर्थराम इन दिनों अपने को केवल 'राम' ही कहने लगे थे।

कालेज के मति-मलीन मिश्नरियों एवं स्वार्थ-परायण प्रोफ़ेसरों को उनसे ईर्षा उत्पन्न हो गई। उन लोगों ने परस्पर परामर्श करके साधु-प्रकृति गोसाईंजी को सलाह दी कि "आप जिनकी जगह पर काम करते हैं, वह प्रोफ़ेसर साहब अब विलायत से आनेवाले हैं, इसलिये यदि कहीं आपको जगह मिल सके, तो उसे प्राप्त करने का अभी से प्रबंध करें, नहीं तो कुछ दिनों बाद आपको बेकार बैठना होगा।" विश्व की वसुधा को तृणवत् समझने-वाले शाहंशाह राम यह सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए, क्योंकि वह उक्त नौकरी को पहले ही से छोड़ना चाहते थे। उसी समय ज्ञात हुआ कि ओरियंटल कालेज में रीडरी का स्थान रिक्त है और वहाँ केवल दो घंटे की ड्यूटी है। गोसाईंजी वहाँ नियुक्त हो गए। थोड़े ही दिनों बाद इस कालेज में गोसाईंजी को वेदांत और गणित पढ़ाने का काम सौंपा गया। गोसाईंजी का हृदय खिल उठा। मानों सोने में सुगंध आ गई। अब क्या था, राम-बादशाह के हृदय में भरा हुआ ज्ञान का अगाध सोता, जो झरना-रूप में चू-चू कर निकल रहा था, अब एक वेगवती नदी की धारा के समान बहने लगा। इसी समय भगत धन्नारामजी ने उन्हें सूचना दी कि मुरारीवाला में राम-बादशाह के घर पुत्र उत्पन्न हुआ है। इस सूचना का जो उत्तर गोसाईंजी ने दिया है, वह उनकी हार्दिक विशालता और निरासक्ति का पूर्ण फ़ोटो है। आप लिखते हैं कि—

"आपके पत्र से मालूम हुआ कि पुत्र उत्पन्न हुआ है। समुद्र में एक नदी आन पड़े, तो कुछ ज़्यादती नहीं हो जाती; और नदी कोई न गिरे, तो

कुछ कमी नहीं हो जाती। सूर्य का जहाँ प्रकाश हो, वहाँ एक दीपक रक्खा गया तो क्या और न रक्खा गया तो क्या? जो ठीक उचित है वह स्वतः पड़ा होगा। किसी प्रकार का शोक तथा चिंता हम क्यों करें? यह शोक चिंता करना ही अनुचित है। हम ज्ञानी नहीं, ज्ञान स्वयं हैं। देह से संबंध ही कुछ नहीं, देह और उसके संबंधी जानें और उनकी प्रारब्ध जानें, हमें क्या?

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं,
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।
न च व्योम भूमिर्नतेजो न वायुः
चिदानंदरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्॥ १॥

अर्थ—मैं मन नहीं, बुद्धि नहीं, अहंकार नहीं, चित्त नहीं; कान, जिह्वा, नासिका, और आँख भी नहीं; पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश भी नहीं; मैं तो चिदानंद-स्वरूप शिव हूँ, शिव हूँ।

गोसाईंजी की इस ब्रह्म-विद्या में निमग्न वृत्ति के कारण लड़के का नाम ब्रह्मानंद रक्खा गया। (आजकल यह लड़का काशी के हिंदु-विश्वविद्यालय में, एम्० ए०-क्लास में, पढ़ता है।)

इस वर्ष गरमियों की छुट्टियों में गोसाईंजी ने अमरनाथ की यात्रा की। मार्ग में श्रीनगर और कश्मीर की सैर करते हुए वहाँ की शोभा निरखकर उनके चित्त में जो आनंद का उद्रेक हुआ, उसे गोसाईंजी ने "कश्मीर की सैर" नाम से स्वयं अपनी लेखनी से लिखा है। विस्तार-भय हमें उस मनोहर वर्णन का किंचत् आभास देने को विवश करता है। जब मस्त और आनंद-स्वरूप

राम अमरनाथ से लौटकर आए, तो उनकी पवित्रता की ख्याति नगर में खूब फैल गई। इसी समय श्रीमन्नारायण स्वामी भी राम-बादशाह के दर्शन करने और उनका उपदेश सुनने को उनके निकट जाने लगे। राम के दर्शन और उपदेशों का श्रीमन्नारायण स्वामी के चित्त पर ऐसा जादू-भरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने अपने को राम के चरणों में समर्पण कर दिया। राम और नारायण के संयोग का फल-स्वरूप, लाला हरलालजी की आर्थिक सहायता से एक प्रेस खोला गया और "अलिफ़"-नाम का एक उर्दू पत्र निकाला गया। इस पत्र के दो ही तीन अंक निकले थे कि इसके लेख पाठकों को इतने पसंद आए कि इसके पहले और दूसरे अंकों को दो-दो, तीन-तीन बार छापकर पाठकों की सेवा में भेजना पड़ा।

❋ वानप्रस्थ या वन-वास ❋

इस आनंद-पूर्ण पत्र के अभी तीन ही अंक निकले थे कि ज्ञान की लाली राम के भीतर समा न सकी, उसकी लवें बाहर निकलने लगीं। अब राम-बादशाह को दस गज़ धरती के परकोटे में घिरकर बैठना और नर-नारियों के कोलाहल-पूर्ण नगर में रहना असंभव हो गया। अतः विरक्त और रंगे चित्त से विवश हुए राम, जुलाई १९०० में, नौकरी छोड़ वनों को सिधारे। उनकी धर्मपत्नी भी पुत्रों-सहित उनकी संगिनी हुईं। साथ में स्वामी शिवगुणाचार्य, ला० तुलाराम (पश्चात् स्वामी रामानंद) लाला गुरुदास (पश्चात् स्वामी गोविंदानंद), अमृतसर-निवासी महात्मा निक्के शाह और नारायणदास (पश्चात् श्रीनारायण स्वामी)
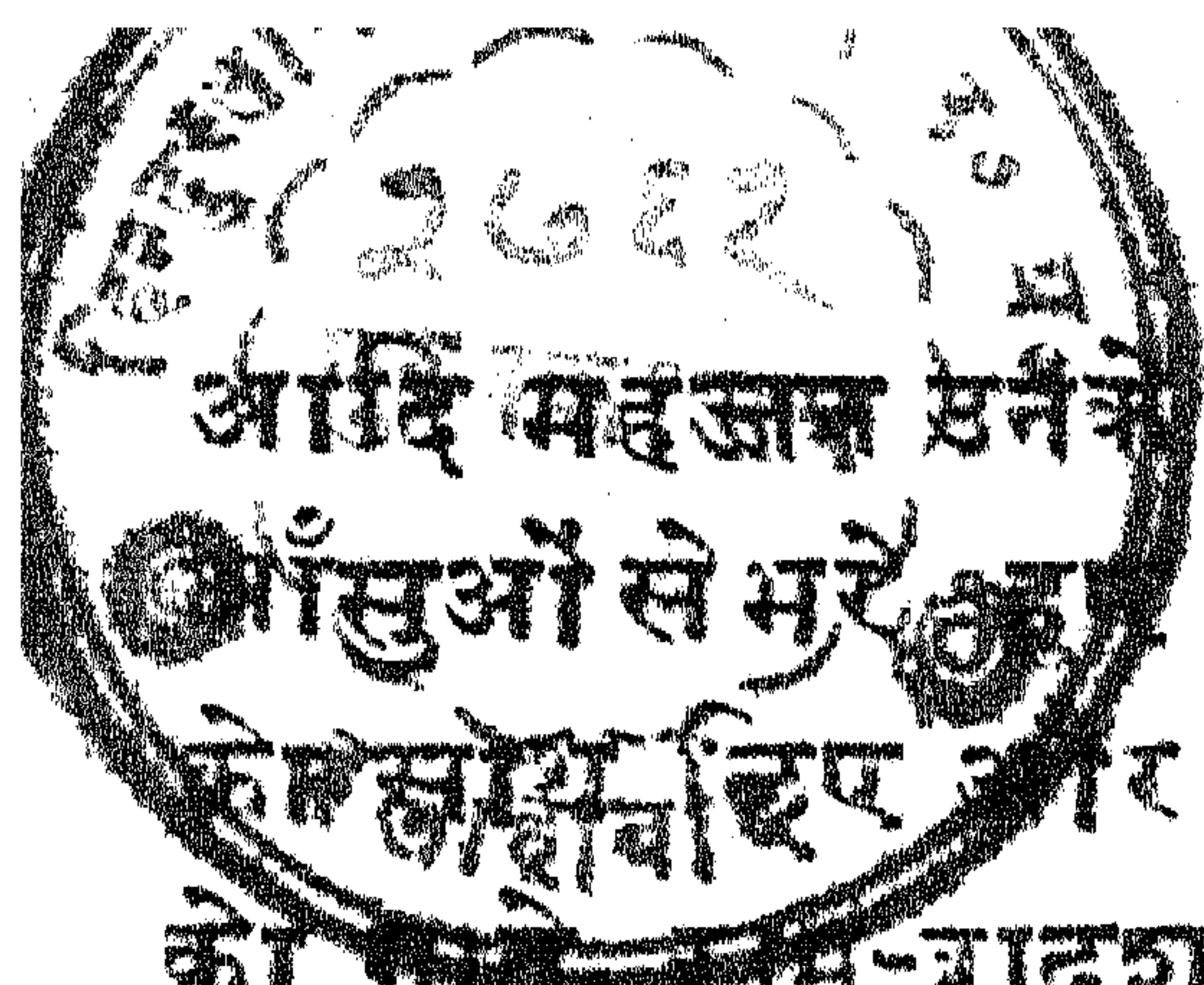
आदि महाजन उनके साथ हो लिए। प्रेम और आनंद के आँसुओं से भरे हुए कालेजों के विद्यार्थी, भजन-मंडलियों को साथ लिए और त्याग-वैराग्य-भाव के उद्दीपक भजनों को गाते, राम-बादशाह पर फूलों की वर्षा करते हुए, उन्हें स्टेशन पहुँचाने आए। स्टेशन पर दर्शकों का मेला लग गया। बिदाई राम के ही शब्दों में सुनिए—

"अलविदा मेरी रियाज़ी, अलविदा। अलविदा, ऐ प्यारी रावी, अलविदा। अलविदा ऐ अहले-ख़ाना, अलविदा। अलविदा मासूमे-नादाँ, अलविदा। अलविदा ऐ दोस्तो-दुश्मन, अलविदा। अलविदा ऐ शीत-उष्ण, अलविदा। अलविदा ऐ कुतुबो-तदरीस, अलविदा। अलविदा ऐ ख़ुबसो-तक़दीस, अलविदा। अलविदा ऐ दिल ख़ुदा ले अलविदा। अलविदा राम, अलविदा, ऐ अलविदा।

यारो, वतन से हम गए, हम से वतन गया;
नक़शा हमारे रहने का जंगल में बन गया।
जीने का न अंदोह, न मरने का ज़रा ग़म;
यकसाँ है उन्हें ज़िंदगी और मौत का आलम।
वाक़िफ़ न बरस से, न महीने से वह इकदम;
शब की न मुसीबत, न कहीं रोज़ा का मातम।
दिन-रात घड़ी-पहर मह-साल में ख़ुश हैं;
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में ख़ुश हैं।
कुछ उनको तलब घर की, न बाहर से उन्हें काम,
तकिया की न ख़्वाहिश है, न बिस्तर से उन्हें काम।
महलों की हवस दिल में न मंदिर से उन्हें काम,
मुफ़लिस से न मतलब न तवंगर से उन्हें काम।
मैदान में, बाज़ार में, चौपाड़ में ख़ुश हैं;
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में ख़ुश हैं।"

——इत्यादि

लाहौर से चलकर राम हरिद्वार पहुँचे। वहाँ से बदरीनारायण का मार्ग पकड़ लिया। थोड़ी दूर चलकर जब देव-प्रयाग पहुँचे, तो स्वामी शिवगुणाचार्य आदि

कई साथी यहाँ से अलग हो गए। वे लोग तो बद्री-नारायण की ओर रवाना हुए और राम गंगोत्री की ओर चले। जब टिहरी पहुँचे, तो राम एकांत-स्थल खोजने लगे। टिहरी से लगभग दो मील की दूरी पर सेठ मुरलीधर का एक बहुत बड़ा बागीचा था, जिसे उक्त सेठ ने साधु-महात्माओं के एकांत-अभ्यास के लिये ही संकल्प कर दिया था। राम ने वहीं आसन जमा दिया। पैसा-कौड़ी जो कुछ जिसके पास था, राम-बादशाह ने उसे गंगा में फिकवा दिया और सबको एकांत-स्थान में अलग-अलग बैठकर 'अहंग्रह-उपासना' करने का आदेश किया। उन्होंने स्पष्ट कह दिया—"अब ईश्वर पर पूर्ण विश्वास करके निश्चिंत होकर अभ्यास करो।" राम की आज्ञा में विश्वास करके सब लोग यथास्थान चले गए। उसी दिन रात को अकस्मात् हृषीकेश के कलकत्ता-क्षेत्र का मैनेजर वहाँ आया और सब लोगों के भोजनों का प्रबंध करके चला गया। राम के इस ईश्वर-विश्वास और दैवी साहाय्य से सब लोग विस्मित हो गए और भविष्य के लिये सबके हृदयों में ईश्वर पर दृढ़ विश्वास हो गया। यहाँ रहकर राम की मस्त लेखनी से जो धारा प्रवाहित हुई, वह 'वन-वास' के नाम से छपी है।

कुछ समय यहाँ रहने के बाद एक दिन राम अपने साथियों से बिना कुछ कहे, दमयंती की नाईं अपनी स्त्री को सोती छोड़, राजा नल की तरह आप आधी रात को, अकेले, नंगे पैर नंगे शिर, उत्तर-काशी की ओर चल दिए। राम की इस लीला से उनकी साध्वी स्त्री के चित्त पर ऐसी गहरी चोट लगी कि वह बीमार हो गई। राम

यद्यपि कुछ दिन पश्चात् कृपा करके फिर वहीं लौट आए, किंतु उनकी पत्नी का स्वास्थ्य न सँभल सका। कुछ उस वन का जल-वायु भी उनके अनुकूल न हुआ। जब उनके स्वस्थ होने की आशा जाती रही, तो उन्होंने राम से अपने पुत्र (ब्रह्मानंद) के साथ घर जाने की इच्छा प्रकट की और राम की आज्ञा से ब्रह्मचारी नारायणदास उन्हें मुरारी वाला-ग्राम में, उनके श्वसुर गोसाईं हीरानंदजी के निकट, भेज आए।

* संन्यास-ग्रहण और तीर्थ-भ्रमण *

इस तरह राम को एकांत-निवास करते-करते जब छः मास हो गए, तो उनके भीतर संन्यास लेने की इच्छा तरंगें मारने लगी। हम पहले बतला आए हैं कि द्वारका-मठाधीश जगद्गुरु शंकराचार्य ने अपनी भेंट के समय उन्हें आज्ञा दे रक्खी थी कि "जब वैराग्य का स्रोत किसी तरह भीतर न समा सके, तो गंगा-तट पर संन्यास ले लेना।" यही हुआ भी। सन् १९०१ के आरंभ में, स्वामी विवेकानंदजी के शरीर त्यागने के कुछ दिन पहले, एक दिन राम-बादशाह ने नापित को बुलाकर सर्वतोभद्र कराया, गेरुए कपड़े रँगे गए, राम ने गंगा के बीच में खड़े होकर, ॐ ॐ का उच्चारण करते हुए, यज्ञोपवीत उतारकर गंगा को सौंपा और सूर्य-भगवान् को साक्षी करके गोसाईं तीर्थराम से स्वामी रामतीर्थ होकर गंगा से बाहर निकले और गेरुए वसन धारण कर लिए। उस समय उनके गौर-कांत, सुंदर मुख-मंडल पर एक अपूर्व, अलौकिक, दिव्य तेज देखा गया। उनके संन्यास-ग्रहण की सूचना प्रथम तो

उनके गुरुदेवजी को और पश्चात् सर्वत्र भेजी गई। खबर पाकर प्रतिदिन सैकड़ों मनुष्य उनके दर्शन करने और उपदेश सुनने के लिये आने लगे।

संन्यास लेने के पश्चात् स्वामीजी वहाँ छः महीने तक रहे, किंतु जब मनुष्यों के गमनागमन से वह स्थान एकांत न रह गया, तो स्वामी राम, १४ जून १९०१ ई० को, चुपके से चल दिए और वहाँ से ४-५ मील की दूरी पर, गंगा के किनारे, वमरोगी-गुफा में, रहने लगे। वहाँ भी दो-एक मास निवास करके ब्रह्मचारी नारायणदास और तुलाराम (पश्चात् श्रीनारायण स्वामी और रामानंद स्वामी) को साथ लेकर, १६ अगस्त १९०१ ई० को, राम-बादशाह यमुनोत्री, गंगोत्री, त्रियुगीनारायण, केदारनाथ, बदरीनारायण की यात्रा के लिये चल दिए। स्वामी राम ५ सितंबर १९०१ ई० अर्थात् जन्माष्टमी को यमुनोत्री पहुँचे और एक मास वहाँ रहकर यमुनोत्री के ऊपर, सुमेरु-पर्वत पर, जो बंदरपूछ के नाम से प्रसिद्ध है, सैर करने गए। यहाँ के मनोरम दृश्य से स्वामी राम को जो आनंद मिला उसका वर्णन उन्होंने 'सुमेरु-दर्शन' नाम के एक गद्य-पद्य-मय लेख में किया है। यमुनोत्री पहुँचने पर उनके चित्त की जो प्रफुल्लित, मस्त और आनंदमय अवस्था थी, वह उनके निम्नांकित गद्य-पद्य-मय पत्र से स्पष्ट है—

"इस बलंदी पर मौत की दाल नहीं गलती, न दुनिया की ही दाल गलती है। निहायत गर्म-गर्म चश्मासार (अति उष्ण स्रोत) कुदरती लालाज़ार (प्राकृतिक दृश्य), चमकदार चाँदी को शर्मानेवाले

सफ़ेद दुपट्टे (अर्थात् यमुना के जल पर झाग, फेन) और उनके नीचे आकाश की रंगत को लजानेवाला यमुना-रानी का गात बात-बात में कशमीर को मात करते हैं।

"आबशार (झरने) तो तरंगे-बेख़ुदी में (निजानंद में मगन हुए) नृत्य कर रहे हैं, यमुना-रानी साज़ बजा रही हैं। राम-शाहंशाह गा रहा है—

हिप हिप हुरें । हिप हिप हुरें ॥ (टेक)
अब देवन के घर शादी है, लो राम का दर्शन पाया है।

पाकोबां[1] नाचते आते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥ १ ॥
खुश खुर्रम मिल-मिल गाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें।
है मगन साज़ बजाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥ २ ॥
सब ख्वाहिश मतलब हासिल हैं, सब ख़ूबों से मैं वासिल हूं।
क्यों हमसे भेद छुपाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥ ३ ॥
सब आँखों में मैं देखूँ हूँ, सब कानों में मैं सुनता हूँ।
दिल बरकत मुझसे पाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरे ॥ ४ ॥

गह इश्वः सीमीबर का हूँ,[2] गह नारा शेरे-बबर का हूँ।
हम क्या-क्या स्वाँग बनाते हैं, हिप हिप हुरें, हिपहिप हुरें ॥ ५ ॥
मैं कृष्ण बना, मैं कंस बना, मैं राम बना, मैं रावण था।
हाँ, वेद सब क़स्में खाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥ ६ ॥

मैं अंतर्यामी साकिन[3] हूँ, हर पुतली नाच नचाता हूँ।
हम सूतर तार हिलाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥ ७ ॥

सब ऋषियों के आईना-दिल में मेरा नूर दरख़शाँ[4] था।
मुझ ही से शाइर लाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥ ८ ॥
हर इक का अंतर आतम हूँ, मैं सबका आक़ा साहिब हूं।
मुझ पाय दुखड़े जाते हैं, हिप हिप हुरें, हिप हिप हुरें ॥ ९ ॥

---

(१) पाओं से, (२) कभी चाँदी जैसी सुंदर का नखरा हूं, (३) अचल, (४) चमक रहा है।

मैं ख़ालिक़[५], मालिक, दाता हूँ, चश्मक[६] से दहर[७] बनाता हूँ।
क्या नक़्शे रंग जमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१०॥

इक कुन[८] से दुनिया पैदा कर, इस मंदिर में ख़ुद रहता हूँ।
हम तन्हा खद्दर बलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥११॥
वह मिसरी हूँ जिसके बाइस दुनिया की इशरत शीरीं है।
गुल मुझसे रंग सजाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१२॥
मसजूद[९] हूँ क़िबला[१०], काबा हूँ, माबूद[११] अज़ाँ[१२] नाक़ूस[१३] का हूँ।
सब मुझको कूक बुलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१३॥

कुल आलम[१४] मेरा साया है, हर आन बदलता आया है।
ज़ल[१५] क़ामित[१६] गिर्द घुमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१४॥

यह जगत हमारी किरणें हैं, फैली हरसू[१७] मुझ मरकज़ से।
याँ बूक़लमूँ[१८] दिखलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१५॥

मैं हस्ती सब अशिया की हूँ, मैं जान मलायक[१९] कुल की हूँ।
मुझ बिन बेबूद कहाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१६॥
जादूगर हूँ, जादू हूँ ख़ुद, और आप तमाशा-बीं मैं हूँ।
हम जादू खेल रचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१७॥
बेजानों में हम सोते हैं, हैवाँ में चलते फिरते हैं।
इन्साँ में नींद जगाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१८॥

संसार तजल्ली[२०] है मेरी, सब अंदर बाहिर मैं ही हूँ।
हम क्या शोले[२१] भड़काते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥१९॥
हूँ मस्त पड़ा महिमा में अपनी, कुछ भी ग़ैर अज़ राम नहीं।
सब कल्पित धूम मचाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥२०॥

---

(५) जगत्कर्ता, (६) पलक मारने से, (७) समय, युग, (८) आज्ञा (फ़ुरना), (९) वंदनीय, (१०) प्रतिष्ठापात्र, (११) पूजनीय वा प्रार्थनीय, (१२) बाँग, (१३) शंख, (१४) जगत्, (१५) साया, (१६) जिस्म, (१७) ओर, (१८) नाना प्रकार, (१९) देवता, (२०) प्रकाश, (२१) लपटें, तेज।

दीवानगी को दिन-दूनी रातचौ-गुनी तरक़्क़ी है। "दीवाना हुए बसस्त" वाला हाल है। क़ालिबे अन्सरी (शरीर) का कुछ पता नहीं।

खुराक—फलाहार जो यमुना-रानी अपने हाथ से पका देती हैं अर्थात् गरम कुंड में खुद बखुद तैयार कर देती हैं।

स्नान—कभी-कभी सौ-सौ फ़ीट की बलंदी से गिरनेवाले आबशारों के नीचे स्नान की मौज लूटी जाती है, कभी सदियों की जमी हुई बर्फ़ से ताज़ा-ताज़ा निकलकर जो यमुनाजी आती हैं, उसमें स्नान का लुत्फ़ उठाया जाता है, और कभी कुंडों के तत्ते पानी में शहंशाह सलामत गुसल फ़रमाते हैं।

चलना-फिरना—सब जगह बिलकुल नंगे बदन से होता है।

—राम-शहंशाह"

सुमेरु-दर्शन के अनंतर स्वामी रामतीर्थ यमुनोत्री आए। यमुनोत्री से धरसाली गाँव होकर, ऊपर के तुषार-पूर्ण दुर्गम मार्ग से धराली गाँव होते हुए, गंगोत्री पहुँचे। इस विकट हिमानी-मार्ग की यात्रा का विस्तृत वर्णन स्वामी राम ने अँगरेज़ी में, एक पुस्तिका-रूप में, किया है। गंगोत्री में रहने के पश्चात् स्वामी राम बूढ़े केदार और त्रियुगी-नारायण के मार्ग से केदारनाथ गए और केदारनाथ से बदरीनारायण की यात्रा की। बदरीनारायण दीपमालिका से एक सप्ताह पहले पहुँचे। उस वर्ष सूर्य और चंद्र, दोनों ग्रहण एक ही पक्ष में पड़े थे। सूर्य-ग्रहण-स्नान करने के पश्चात् स्वामी राम ने एक कविता लिखी जिसके दो-एक पद, पाठकों के विनोदार्थ, यहाँ दिए जाते हैं—

इश्क़ का तूफ़ाँ बपा है हाजते मयख़ाना नेस्त ।
ख़ूँ शराबो-दिल-कबाबो-फ़ुर्सते-पैमाना नेस्त ॥ १ ॥
सख़्त मख़मूरी है तारी, ख़्वाह कोई कुछ कहे ।
पस्त है आलम नज़र में वहशते-दीवाना नेस्त ॥ २ ॥
अल्विदा ऐ मर्ज़े-दुनिया, अल्विदा ऐ जिस्मो-जाँ ।
ऐ अतश, ऐ जू, चलो, ईं जा कबूतरख़ाना नेस्त ॥ ३ ॥
क्या तजल्ली है यह नारे-हुस्न शोला-ख़ेज़ है ।
मार ले पर ही यहाँ पर ताक़ते-परवाना नेस्त ॥ ४ ॥
मिह्र हो, मह हो, दबिस्ताँ हो गुलिस्ताँ कोहसार ।
मौजज़न अपनी है ख़ूबी; सूरते-बेगाना नेस्त ॥ ५ ॥
लोग बोले, ग्रह ने पकड़ा है सूरज को, ग़लत ।
ख़ुद हैं तारीकी में वर मनसाया महजूबाना नेस्त ॥ ६ ॥
उठ मेरी जाँ, जिस्म से, हो ग़र्क़ ज़ाते-राम में ।
जिस्म बद्रीश्वर की मूरत हर्कते फ़र्ज़ाना नेस्त ॥ ७ ॥

❋ धर्म-सभाओं के जलसे और श्रीनारायण-स्वामी को संन्यास ❋

जब स्वामी राम बद्रीनारायण से लौटने लगे, तो मथुरा से स्वामी शिवगुणाचार्यजी का पत्र मिला जिससे विदित हुआ कि वहाँ उन्होंने एक 'रिलीजस कानफ्रेंस' करने का महोद्योग किया है, जिसका सभापति स्वामी रामतीर्थजी को मनोनीत किया गया है। अतः दिसंबर १६०१ में, स्वामीजी अपने साथियों (ब्रह्मचारी नारायणदास और तुलाराम)-सहित मथुरा पहुँचे और उस धर्म-महोत्सव में सभापति के आसन को सुशोभित किया। यहाँ राम-

बादशाह के मनोहर उपदेश और उनकी दिव्य तेज-पूर्ण मूर्ति के दर्शन से दर्शकों पर जो प्रभाव पड़ा, उसका लेखनी द्वारा वर्णन नहीं हो सकता।

मथुरा के बाद, फ़रवरी १९०२ में, स्वामी राम साधारण-धर्म-सभा के दूसरे वार्षिक अधिवेशन में फ़ैज़ाबाद आए। यहाँ हिंदू, मुसलमान, ईसाई और अन्य धर्म के प्रचारकों ने अपने-अपने धर्म की विशेषताएँ दिखलाईं। इस उत्सव में मुसलमानी धर्म की ओर से मौलवी मुहम्मद मुर्तज़ाअली-ख़ाँ साहब स्वामीजी से शास्त्रार्थ करनेवाले थे किंतु ज्योंही मौलवी साहब स्वामीजी के सम्मुख आए और उनकी मनोहर मूर्ति के दर्शन किए, उनका वह विरोध-भाव नहीं मालूम कहाँ चंपत हो गया, उलटे उनकी आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगे और वे राम के बड़े प्रेमी बन गए।

साधारण-धर्म-सभा फ़ैज़ाबाद के वार्षिकोत्सव पर स्वामी राम की आज्ञा से ब्रह्मचारी नारायणदास ने भी व्याख्यान दिया था। नारायणदास के भाषण का श्रोताओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा। यह देख स्वामी राम ने उन्हें संन्यास लेकर देश में उपदेश देने की आज्ञा दी। तदनुसार, मार्च १९०२ में, नारायणदासजी को संन्यास मिला और वे राम से अलग होकर गेरुए बसन पहनकर देश-देश में विचरने लगे। किंतु केवल ४ महीने विचरणकर, जून १९०२ में, वे फिर स्वामीजी के निकट पहाड़ों पर आ गए।

❋ टिहरी के महाराज से भेंट ❋

मई १९०२ में, जब स्वामी राम टिहरी-पर्वत पर गए, तो राय बहादुर लाला बैजनाथ बी० ए० रिटायर्ड जज,

आगरा भी उनके साथ हो लिए। टिहरी से देहरादून की ओर, लगभग ११ मील के अंतर पर, कौड़िया चट्टी नाम का एक पड़ाव है। यहाँ विशाल दुर्ग के समान एक पुरातन प्रासाद है, जो जीर्ण-शीर्ण पड़ा है। उसके चहुँ ओर सुवि-स्तीर्ण मैदान और विविध भाँति के सुरभित सुमनों से समाकीर्ण सघन वन है। इस रम्य स्थान पर यह जान पड़ता था, मानों प्रकृति देवी पुष्प-पादप-राजि से सज्जित होकर, मुग्धा-नायिका की भाँति राम-बादशाह की प्रतीक्षा कर रही थीं। राम ने भी वहीं अपना आसन जमा दिया।

संयोग से टिहरी के महाराज, जो वाइसराय से मिलने के लिये देहरादून आ रहे थे, उस मार्ग से निकले और इसी चट्टी पर मुक़ाम किया। महाराज को जब राम-बादशाह के आगमन का समाचार मिला, तो उनके मन में दर्शनों की अत्यंत उत्कंठा हुई। उन्होंने अपने मंत्री द्वारा राम-बादशाह से दर्शन देने की प्रार्थना की। राम-बादशाह मंत्रीजी के साथ चले। टिहरी-महाराज, जो स्वागत के लिये मार्ग में खड़े थे, राम-बादशाह को अपने डेरे पर ले गए। महाराज टिहरी एक विद्वान् पुरुष थे, किंतु उनके चित्त पर हरबर्ट स्पेंसर के अज्ञेय-वाद (Agnosticism) ने अधिकार जमा रक्खा था, इसलिये वे agnostic (अज्ञेय-वादी) प्रसिद्ध थे। राम-बादशाह के वहाँ पहुँचते ही एक बहुत बड़ा दरबार लग गया। महाराज टिहरी ने ईश्वर के अस्तित्व संबंध में प्रश्न किया। राम-बादशाह ने नाना युक्ति-प्रमाणों से, (२ बजे दिन से ५ बजे तक) ठीक तीन घंटे भाषण करके, ईश्वर

का अस्तित्व प्रत्यक्ष सिद्ध करने का प्रयत्न किया। इस सत्संग का महाराज के हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ा और वे अत्यंत विनीत-भाव और श्रद्धा-सहित राम-बादशाह से प्रार्थी हुए कि "हृदय के बहुत-से संशय तो निवृत्त हो गए हैं, पर यदि राम महाराज टिहरी वा प्रतापनगर पधारने की कृपा करेंगे और ऐसे ही सत्संग की वर्षा होती रहेगी, तो सब संशय अवश्य नष्ट हो जायँगे।"

* विदेश-यात्रा *

टिहरी में कुछ दिन निवास करने के पश्चात् स्वामी रामतीर्थजी महाराज प्रतापनगर गए। यह स्थान पर्वत् की चोटी पर है। इसे महाराज टिहरी के पितामह श्रीप्रतापशाह ने अपने निदाघ-निवास (Summer house) के लिये निर्माण कराया था। महाराज टिहरी भी वहीं गए। इन दिनों प्रति सप्ताह महाराज टिहरी श्रीस्वामीजी के निकट आते और जी-भरकर सत्संग करते थे। जुलाई १९०२ में, महाराज टिहरी ने किसी अँगरेज़ी समाचार-पत्र में यह समाचार पढ़ा कि "शिकागो की तरह जापान में भी संसार-भर के धर्मों का एक धर्म-महासम्मेलन (Religious Conference) होगा, जिसमें भारतवर्ष के भी सब धर्मों के विद्वानों को निमंत्रित किया गया है।" महाराज टिहरी स्वयं यह समाचार-पत्र हाथ में लिए श्रीस्वामीजी के निकट आए और उनसे उक्त कानफ्रेंस में सम्मिलित होने की प्रार्थना की। स्वामीजी के स्वीकार करते ही महाराज ने तार भेजकर "थामस कुक एंड कम्पनी" के द्वारा स्वामीजी की यात्रा के लिये १०००) में जहाज़ के

किराए आदि का सब प्रबंध अपने आप कर लिया। श्री-स्वामीजी महाराज इस यात्रा के लिये टिहरी से लखनऊ और आगरा आदि स्थानों में घूमते, अपने प्रेमियों से मिलते, हुए कलकत्ते की ओर प्रस्थानित हुए। कलकत्ता पहुँचकर उन्होंने श्रीनारायण स्वामी को भी, अपने साथ ले चलने के लिये, कलकत्ते बुलाया और २८ अगस्त १९०२ ई० को वे जापान जाने के लिये जहाज़ पर सवार हुए। मार्ग में हांगकांग आदि बंदरों में ठहरते, व्याख्यान देते, लोगों को मोहित करते हुए आक्टोबर के प्रथम सप्ताह में स्वामीजी यूकोहामा नाम के जापान के बड़े बंदरगाह में उतरे। इस जल-यात्रा के समय उनके चित्त की जो गद्गद दशा थी, उसका आभास उनकी निम्न-लिखित कविता से मिलता है—

यह सैर क्या है अजब अनोखा कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ।
बग़ैर सूरत अजब है जल्वा कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ॥
मुरक्का-ए-हुस्नो-इश्क़ हूँ मैं, मुझीमें राज़ो-नियाज़ सब है।
हूँ अपनी सूरत पै आप शैदा कि राम मुझमें, मैं राम में हूँ॥
ज़माना आईना राम का है हरएक सूरत में है वह पैदा।
जो चश्मे-हक़बीं खुली तो देखा कि राम मुझमें, मैं राम में हूं॥
वह मुझसे हर रंग में मिला है कि गुल से बू भी कभी जुदा है।
हबाबो-दरिया का है तमाशा कि राम मुझमें, मैं राम में हूं॥
सबब बताऊँ मैं वज्द का क्या, है क्या जो हर परदा देखता हूं।
सदा यह हर साज़ से है पैदा कि राम मुझमें, मैं राम में हूं॥
बसा है दिल में मेरे वह दिलबर, है आइना में खुद आइनागर।
अजब तहय्यर हुआ यह कैसा ? कि राम मुझमें, मैं राम में हूं॥
मुक़ाम पूछो तो लामकाँ था, न राम ही था न मैं वहाँ था।
लिया जो करवट तो होश आया कि राम मुझमें, मैं राम में हूं॥
अलस्तख़ातर है पाक जल्वा कि दिल बना नूरे-बर्क़े-सीना।

तड़प के दिल यूं पुकार उट्ठा कि राम मुझमें, मैं राम में हूं ॥
जहाज़ दरिया में और दरिया जहाज़ में भी तो देखिए आज।
यह जिस्म किश्ती है, राम दरिया कि राम मुझमें, मैं राम में हूं ॥

❋ राम-बादशाह जापान में ❋

विदेशों में यह प्रथा है कि जब कोई बड़ा जहाज़ वहाँ आनेवाला होता है, तो उसके पहले और दूसरे दर्जे के सब यात्रियों के नाम, उसके आने के एक दिन पहले, उस बंदर के समाचार-पत्रों में छप जाते हैं। इसलिये, जापान में, जहाज़ के ठहरते ही, सेठ बस्यामल-आसूमल सिंधी-मर्चेंट के दो नौकर स्वामीजी को जहाज़ पर से उतारकर अपने फ़र्म में ले गए। एक सप्ताह तक वे वहाँ रहे किंतु जब उन लोगों को ज्ञात हुआ कि स्वामी रामतीर्थजी महाराज उनके यहाँ संसार-भर के धर्मों के महा-सम्मेलन में भाग लेने आए हैं, तो वे अत्यंत विस्मित हुए, क्योंकि उन लोगों को इसकी बिलकुल खबर तक न थी। इस प्रकार जब यूकोहामा में रिलीजस कानफ्रेंस का कुछ पता न चला, तो उचित प्रतीत हुआ कि जापान की राजधानी टोकियो में उसका पता लगाया जाय। अतः सेठजी के एक सुचतुर नौकर के साथ स्वामीजी टोकियो गए और वहाँ एक भारतीय विद्यार्थी मिस्टर पूरनसिंह के मकान पर पहुँचे। पूरनसिंह निपट विदेश में अपनी जन्म-भूमि के दो तेजस्वी संन्यासियों को अपने घर पर आए हुए देखकर आनंद में विह्वल हो गए। किंतु जब स्वामीजी ने उनसे उक्त कानफ्रेंस का हाल पूछा, तो ज्ञात हुआ कि किसी मसखरे ने झूठमूठ यह खबर हिंदुस्तान के अखबारों में

छपा दी है। इसका निश्चय हो जाने पर स्वामीजी ने तार-द्वारा भारतीय पत्रों में इस मिथ्या समाचार का प्रतिवाद छपा दिया।

उन दिनों टोकियो में भारतवर्ष के प्रोफ़ेसर छत्रे का सरकस अपने अद्भुत खेल दिखा रहा था और प्रोफ़ेसर महोदय के प्रस्ताव पर भारतवर्ष के नेपाल, पंजाब और युक्त प्रदेश के कितने ही विद्यार्थी, जो जापान में शिक्षा लाभ करते थे, कई भारत-हितैषी जापानी भाइयों की सहायता से वहाँ एक "इंडो-जापान क्लब" स्थापित कर रहे थे, जिसका उद्देश्य भारतीय नवयुवकों को जापान में बुलवाकर शिक्षा दिलवाना और परस्पर एक स्वदेश भाई का दूसरे स्वदेश-भाई की सहायता करना था। इस नूतन क्लब में राम-बादशाह के अनेक व्याख्यान हुए जिससे भारतीय विद्यार्थियों में एक नवीन जीवनी-शक्ति का संचार हुआ। इसके बाद टोकियो के हाई कमर्शल कालेज में स्वामीजी के 'सफलता का रहस्य' (Secret of Success)-विषय पर दो अत्यंत युक्ति-पूर्ण व्याख्यान हुए जिससे जापानी विद्यार्थियों और प्रोफ़ेसरों के हृदयों पर उनका एक विलक्षण प्रभाव पड़ा। इन व्याख्यानों के श्रीमन्नारायण स्वामी ने संक्षिप्त नोट्स लिए और मिस्टर पूरनसिंह ने जब उन्हें अपनी ओजस्विनी लेखनी से, राम की भाषा में, विस्तरित रूप देकर सम्मुख उपस्थित किया तो राम-बादशाह ने प्रसन्न होकर प्यारे पूरनसिंह को प्रेम-पूर्ण दृष्टि से देखा। वार्तालाप करने पर विदित हुआ कि पूरनसिंह एक होनहार युवक, हरबर्ट स्पेंसर के मत के क़ायल, और सच्चे आनंद के जिज्ञासु हैं। उन्होंने कई बार स्वामीजी

से अपना कर्तव्य पूछा। स्वामीजी ने हरबार उन्हें उत्तर दिया कि अपने अंतरात्मा से पूछो और उसका अनुसरण करो। किंतु जब उन्होंने तीसरी बार राम-बादशाह से वही प्रश्न किया, तो उन्होंने कह दिया—"Take up Sannyâs and serve Humanitiy (संन्यास धारण करके मनुष्यत्व की सेवा करो)।" ×

❋ राम-बादशाह अमेरिका में ❋

इस उत्तर के कुछ दिन बाद श्रीनारायण स्वामी को योरप, आफ्रिका, सालोन, ब्रह्मा प्रभृति देशों में प्रचार करने का आदेश देकर, स्वामी रामतीर्थजी महाराज, प्रोफ़ेसर छत्रे के साथ, अमेरिका प्रस्थानित हुए। अमेरिका पहुँचकर उन्होंने जो काम किया, उसका वर्णन इस छोटे-से लेख में करना असंभव है। संक्षेप में यह कि कुछ दिनों तक तो राम

× जब राम अमेरिका चले गए, तो मिस्टर पूरन ने संन्यास ले लिया और जापान के साधुओं (योगियों) की तरह साल-भर जापान के नगर-नगर में फिरकर और वेदांत का प्रचार किया। इतना ही नहीं, उन्होंने जापानी नवयुवकों में वेदांत का प्रभाव डालने के लिये "Thundering Dawn" (गर्जनशील-प्रभात)-नाम का एक पत्र भी निकाला। एक वर्ष पश्चात् जब वह स्वदेश लौटे, तो कलकत्ते में उनके माता-पिता उन्हें लेने आए। पुत्र को साधु-वेश में देखकर वे बहुत रोए अपने घर पंजाब आकर बहुत समझा-बुझाकर उन्होंने उन्हें गृहस्थ बना लिया। आज कल मिस्टर पूरनसिंह रियासत ग्वालियर में फ़ारेस्ट डिपार्टमेंट के केमिकल ऐडवाइज़र-पद पर काम करते हैं। उनके अब ४-५ बच्चे हैं। लगभग ८-६ वर्षों से अब वे अपने जन्म के सिक्ख-धर्म में फिर वापस आ गए हैं, और अब मिस्टर पूरनसिंह के स्थान में सरदार पूरनसिंह के नाम से प्रसिद्ध हैं।

प्रोफ़ेसर छत्रे के साथ वहाँ घूमते और व्याख्यान देते रहे, किंतु स्याटलवाशा-नगर के बाद गुण-ग्राही अमेरिकन लोगों ने उन्हें प्रोफ़ेसर छत्रे के हाथ से छीन लिया। बहुत समय तक वह एक सहृदय सज्जन डाक्टर एल्बर्ट हिलर के पास सानफ्रान्सिस्को में रहे। यह नगर केलीफ़ोर्निया का प्रसिद्ध क़सबा और बंदर-स्थान है। उक्त डाक्टर महाशय ने बड़ी श्रद्धा के साथ डेढ़ वर्ष तक स्वामीजी को अपने पास रक्खा और अपना एक बँगला उनके लिये रिज़र्व कर दिया। वहाँ स्वामीजी के उपदेश से लोगों ने कई सोसाइटियाँ बनाईं जिनका उद्देश ग़रीब भारतीय नवयुवकों की शिक्षा के लिये अमेरिका में हर प्रकार से सहायता करना था। स्वामीजी से नित्यप्रति सत्संग का लाभ उठाने के लिये एक "Hermetic Brotherhood" (साधुओं भाईचारा) स्थापित किया गया जिसमें अधिकतर उनके उपदेश होते थे। इन उपदेशों से स्वामीजी का इतना प्रभाव पड़ा कि वहाँ के कई समाचार-पत्रों ने उनके फ़ोटू छापकर "Living Christ has come to America (जीवित ईसा मसीह अमेरिका में आए हैं)" शीर्षक देकर अपने लेखों में उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। अमेरिका में स्वामीजी की इतनी ख्याति हुई कि तत्कालीन अमेरिकन प्रेसीडेंट ने भी उनके दर्शन किए। न्यूयार्क के एक पत्र ने लिखा—"अमेरिका में एक विचित्र भारतीय साधु आया है, जो अपनी ऐनक के अतिरिक्त और किसी धातु को स्पर्श नहीं करता। अपने साथ कुछ भोजन-सामग्री भी नहीं रखता। जब सैर को निकलता है, तो एक साधारण वस्त्र में कई दिनों तक अत्यंत

शीतल स्थानों में विचरण करता रहता है। जब व्याख्यान देता है, तो दिन में कई बार, और एक-एक बार में तीन-तीन घंटे लगातार बोलता रहता है। उसका सुंदर स्वरूप अत्यंत मनोहर है।" ग्रेट पैसिफ़िक आयल रोड कंपनी अमेरिका के मैनेजर ने लिखा—"एक भारतीय तत्त्व-वेत्ता स्वामी राम की न रुकनेवाली हँसी और माधुरी मुसकान मन को मोह लेती है।" सेंट लुइस की धार्मिक कानफ्रेंस के संबंध में वहाँ के एक लोकल पत्र ने लिखा—"इस समारोह में अकेला प्रफुल्ल मुखमंडल स्वामी राम का था जो एक भारतीय तत्त्व-वेत्ता हमको ज्ञान सिखाने आया है।" इत्यादि अगणित लेख अमेरिकन लेखकों की ओर से वहाँ के समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए। राम के दर्शनों में इतना प्रभाव था कि अमेरिका में एक बार एक Athiest Society (नास्तिक समाज) की एक विदुषी लेडी राम के पास बहस करने आई। राम-बादशाह उस समय समाधिस्थ थे। नास्तिक लेडी, जब तक राम समाधि की अवस्था में थे, चुपचाप बैठी उनको देखती रहीं। समाधि खुलने पर जब स्वामी राम ने उनकी ओर देखकर अपना अभिप्राय प्रकट करने को संकेत किया, तो बहस करने की चुलबुली से भरी हुई लेडी उस नीरवता को भंग करती हुई बोलीं—"माई लार्ड! मैं नास्तिक नहीं हूँ। आपके दर्शन से मेरे सब संदेह दूर हो गए!" मिसेज़ वेलमैन अमेरिका में एक अत्यंत प्रेम-पूर्ण लेडी थीं। वह राम-बादशाह की ॐ ॐ की हृदय-हारिणी ध्वनि सुनकर ऐसी पुलकित हुईं कि अपने पश्चिमीय वस्त्र उतारकर संन्यासिन बन गईं और भारतीय संन्यासियों की तरह बिना कौड़ी-

पैसा पास रक्खे ही नगर-नगर विचरण करने लगीं। यह राम के प्रेम की मतवाली योगिनी भारतवर्ष में भी आई और जब राम की जन्म-भूमि के दर्शन करने के लिये मुरारीवाला गाँव गईं, तो उस छोटे से ग्राम को निरख कर हर्षातिरेक से गद्गद हो गईं। इसके अतिरिक्त कितनी ही अन्य लेडियों ने भी भारत आकर राम की जन्म-भूमि के दर्शन करने की अभिलाषा प्रकट की और कर रही हैं। अस्तु। यह जो हम In Woods of God Realization नाम से ४ खंडों में स्वामी राम के अँगरेज़ी लेक्चर्स पढ़ने को पाते हैं, यह भी उन्हीं अमेरिकन लोगों की सभ्यता और उनके अकृत्रिम राम-प्रेम का फल है। बात यह थी कि स्वामी राम जब अमेरिका में लेक्चर देते थे, तो वे लोग शार्टहैंड में उनके व्याख्यान लिख लेते और बाद में टाइप राइटिंग मेशीन द्वारा उसकी चार-पाँच प्रतियाँ छापकर दो एक राम की भेंट करते और शेष अपने व्यवहार में लाते। राम उन लेक्चरों को लेकर अपनी पुस्तकों की मंजूषा (संदूक) में डाल देते। इस प्रकार लोग उनको जितने भाषण दे गए और उनकी मंजूषा में रक्षित रहे, वे ही छप सके। जितने नष्ट हो गए या नहीं लिखे गए, उनका पता अब कौन लगा सकता है। स्वामी राम ने अपनी परमहंसी वृत्ति के कारण कभी अपने विषय के रिकर्ड या डायरी रखने की परवा नहीं की, यहाँ तक कि अमेरिका के सैकड़ों समाचार-पत्रों ने समय-समयपर उनकी प्रशंसा में जो लेख छापे थे, उनकी ढेर की ढेर कतरनों को भी उन्होंने सैक्रेमेंटो नदी में फेंक दिया। इस लिये उन स्थानों की, जहाँ वह अकेले रहे, उनकी शृंखलित

जीवनी नहीं मिलती। वह एकांत सेवन के बड़े पक्षपाती थे। उनका कथन था, दूसरा साथ होने से मनुष्य की ईश्वर निर्भरता को हानि पहुँचती है; वह अपने साथी की सहायता का अवलंब करने लगता है।

❋ राम-बादशाह मिस्र में ❋

अस्तु। अमेरिका में लाखों पवित्र हृदयों में वेदांत का भाव भरकर जिबराल्टर के मार्ग से राम मिस्र-देश में पहुँचे। वहाँ मुसलमानी समाज में, एक मसजिद में, उन्हों-ने फ़ारसी भाषा में एक जादू-भरा व्याख्यान दिया जिससे तद्देशीय मुसलमान-भाई अत्यंत प्रसन्न हुए। सुना जाता है, वहाँ के सुप्रसिद्ध अरबी-भाषा के पत्र "अल्‌वहाब" ने राम-बादशाह के उस भाषण के नोट्स लिये थे और उन्हें अपने पत्र में 'हिंदी फ़िलासफ़र' के शीर्षक से छापे थे। इसके अतिरिक्त स्वामीजी ने मिस्र में कुछ और भी काम किया या नहीं, इस प्रश्न का उत्तर देने को इन पंक्तियों के लेखक के पास कोई साधन नहीं है। केवल इतना ही लिखा जाता है कि राम जहाँ जाते थे, उस देशवाले उनको अपना ही मान लेते थे और उनके सैकड़ों आशिक बन जाते थे।

❋ स्वदेश प्रत्यागमन ❋

इस प्रकार अन्य देशों में वेदांत का सिंहनाद करते हुए, स्वामी राम कोई ढाई वर्ष बाद, ८ दिसंबर १९०४ ई० को, बंबई में उतरे। विदेशों में जाने से पहले ही भारतवर्ष में

स्वामी राम की पर्याप्त ख्याति हो चुकी थी, इधर अमेरिका आदि जाने और अँगरेज़ी समाचार-पत्रों में उनकी चर्चा बढ़ जाने से समस्त भारत की आँखें उनके शुभागमन की प्रतीक्षा कर रही थीं। सब संप्रदायों के समाचार-पत्रों ने उनका अत्यंत प्रेम-पूर्ण शब्दावली में स्वागत किया। स्वामीजी को जहाज़ पर से उतारने के लिये, उनके अनेक प्रेमी जहाज़ पर गए। स्वदेश आने पर स्वामीजी का पहला व्याख्यान बंबई में हुआ। बंबई से आप आगरा, मथुरा और लखनऊ में अपने अनुभवों का वर्णन करते अपनी जादू-भरी वाणी से लोगों की तृषा शांत करते पुष्करराज पहुँचे। इन सब स्थानों में उनका बड़ी धूम-धाम से स्वागत होता रहा। स्वामीजी के उदार विचारों के कारण उनके स्वागत में आर्यसमाजी, सनातनधर्मी, ब्राह्मो, सिक्ख और ईसाई-मुसलमान तक सम्मिलित होते थे।

❋ राम-बादशाह के उदार भाव ❋

अमेरिका से प्रत्यागमन करने के पश्चात् जब श्रीस्वामी-जी मथुरा पहुँचे, तो उनके कई भक्तों ने उनको परामर्श देना चाहा कि "स्वामीजी, अब आप किसी नए नामसे कोई संस्था स्थापित कीजिए।" उस उन्नत से उन्नतमना राम-बादशाह ने जो अनमोल वाक्य उच्चारण किए हैं, प्रत्येक देश-भक्त भारतवासी को उन्हें स्वर्णाक्षरों से अपने अंतःकरण में अंकित कर लेना चाहिए। श्रीस्वामीजी महाराज ने उत्तर दिया—

"भारतवर्ष में जितनी सोसाइटियाँ (सभा-समाजें) हैं, वे सब राम की हैं, राम उनमें काम करेगा।......... (आँखे बंद करके हाथ फैलाकर प्रेमाश्रु बहाते हुए) ईसाई, आर्य, सिक्ख, हिंदू, पारसी, मुसलमान और वे सब लोग जिनके अंग और हड्डियाँ, रक्त और मस्तिष्क मेरे इष्टदेव भारत-भूमि के अन्न और लवण से बने हैं, मेरे भाई हैं—हाँ मेरे अपना आप हैं।"

"जाओ, उनको कह दो कि राम उनका है। राम उन सबको अपनी छाती से लगाता है और किसी को अपने प्रेमालिंगन से पृथक् नहीं समझता।"

"मैं संसार पर प्रेम की वर्षा बरसाऊँगा और संसार को आनंद में नहलाऊँगा। यदि कोई मुझसे विरोध प्रकट करेगा, तो मैं उसे 'स्वागत' कहूँगा।"

"क्योंकि मैं प्रेम की वर्षा करता हूँ, समस्त सोसाइटियाँ मेरी हैं; क्योंकि मैं प्रेम की बहिया लाऊँगा, प्रत्येक शक्ति मेरी शक्ति है, चाहे वह बड़ी हो या छोटी। ओहो! मैं प्रेम की वर्षा करूँगा।"

यह शब्दावली है या बहु-मूल्य मोतियों की लड़ी! राम-बादशाह ने और एक स्थल पर लिखा है—

"मैं शहंशाह राम हूँ। मेरा सिंहासन तुम्हारे हृदय में है। जब मैंने वेदों का उपदेश दिया, जब कुरूक्षेत्र में गीता सुनाई, जब मक्का और योरुशलम में अपने संदेशे सुनाए, तो लोगों ने मुझे ग़लत समझा था। अब मैं अपनी

आवाज़ फिर ऊँची करता हूँ। मेरी आवाज़ तुम्हारी आवाज़ है—'तत् त्वमसि', 'तत् त्वमसि', 'तत् त्वमसि', कोई शक्ति नहीं जो इसको रोक सके।.........."

अहा! यह देखिए हिंदुओं के पतन की कारण, कलह की मूल एवं उन्नति की अवरोधक वर्ण व्यवस्था* पर उदार-चेता राम-बादशाह ने कैसी अद्भुत रीति से सार्वभौमिक व्यवस्था दे डाली। आपने अपने 'ज़िंदा कौन है?''-शीर्षक लेख में बतलाया है कि जैसे जमादात, नबातात, हैवानात, इंसानात (खनिजवर्ग, वनस्पतिवर्ग, प्राणवर्ग, मनुष्यवर्ग) यह चार प्रकार की यह सृष्टि है, वैसे ही चार प्रकार के स्वभाववाले मनुष्य भी हैं वे मनुष्य जो खनिज धातुओं की तरह केवल नयनरंजक आभूषणों का ही काम देते हैं जिनके भीतर कुछ जान नहीं होती, अर्थात् जिनके जीवन का कोई लक्ष्य नहीं होता, शिश्नोदर-परायणता ही जिनके जीवन की सीमा है, स्वार्थ रतता ही जिनका परम धर्म है और वासना-भोग ही जिनका परम पुरुषार्थ है. वे सोना

---

*पतन की कारण इसलिये कि वर्ण-व्यवस्था होने से युद्ध करना केवल क्षत्रियों का ही कर्म था; अतः विदेशियों के आक्रमण में केवल अल्प संख्यक क्षत्रियों के हार हो जाने से ही समस्त देश ने अपना पराजय स्वीकार कर लिया। कलह की मूल इसलिये कि वर्ण-व्यवस्था के प्रचार से आज भी भारत की समस्त हिंदू-जातियाँ अपने को उच्च वर्ण होने के दावे कर रही हैं और एक दूसरी को घृणा की दृष्टि से देखती हैं; नीच वर्ण होकर रहना किसी को प्रिय नहीं। उन्नति की अवरोधक इसलिये कि हृदय और मस्तिष्क रखते हुए भी शूद्र वर्ण में परिगणित हिंदुओं की एक बहुत बड़ी जन संख्या को विद्यालोचना से वंचित रक्खा गया और यह एक सिद्ध बात है कि सार्वजनिक शिक्षा ही देश की उन्नति का मूल कारण है।

चाँदी, लोहा, हीरा आदि जड़ पदार्थों की भाँति शोभायमान, क्षीनजवर्ग-स्वभावापन्न 'पेट-पालू' मनुष्य हैं और उनका गीत-क्षेत्र 'लट्टू' के समान है, जो अपनी ही कील पर घूमा करता है। यही लोग वास्तव में शूद्र हैं।

जो मनुष्य वनस्पतियों की नाईं एक ही स्थान पर बढ़ते फूलते फलते हैं, धरती से रसादि चूसकर शाखा, पत्र आदि अपने कुटुंब को हरित रखते हैं और अपने निकट आए हुए पथिकादिकों को छाया और फलादि देते हैं तथा एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने की सामर्थ्य न रखने के कारण अत्याचारी पशुओं या मनुष्यों द्वारा नष्ट भी हो जाते हैं, वे वनस्पतिवर्ग-स्वभावापन्न 'परिवार-पालक' मनुष्य हैं और इनका गति-क्षेत्र 'कोल्हू के बैल' की नाईं है, जो अपने केंद्र के चारों ओर घूमा करता है। येही लोग वास्तव में वैश्य हैं।

जो मनुष्य पशवादिकों की नाईं अपनी जाति में ही अभेदना रखते हैं और अपनी ही जाति की वृद्धि, अपनी ही जाति की भलाई और अपनी ही जाति के प्रीतपालन में संलग्न रहते हैं अन्य जातियों की कुछ भी परवा नहीं करते, वरन् अन्य जातियों को अपनी जाति के आधीन कर लेना चाहते हैं, वे प्राणिवर्ग स्वभावापन्न या 'जाति-प्रतिपालक' मनुष्य हैं और उनका गति-क्षेत्र घोड़दौड़ के घोड़े के समान है जो एक नियत सीमा के अंतर्गत चक्कर लगाया करता है। यही लोग वास्तव में क्षत्रिय हैं।

जिनमें मनुष्यों की नाईं न्याय आदि सद्गुण होने से जाति, वर्ण और मत आदि का पक्षपात नहीं होता, जो

अपने देश के प्रत्येक व्यक्ति को अपना सगा भाई समझते हैं, जिन्होंने अपने समस्त समय और ध्यान को देश की भलाई के लिये अर्पण कर दिया है, जिनको अपने देश की धूलि तक प्यारी है, वे लोग मनुष्य-स्वभावापन्न 'देश-भक्त' या 'देश-सेवक' हैं और उनका गति क्षेत्र 'चंद्रमा की नाईं' है, जो देश की दारिद्र्य-निशा में चारों ओर प्रकाश छिटकाता है। येही लोग वास्तव में ब्राह्मण हैं।

इनके अतिरिक्त एक और पुरुष भी हैं जो पेट-पालक कुटुंब-पालक, जाति-पालक और देश-भक्तों से भी उत्तम हैं, वे अमृत पुरुष महात्मा लोग हैं जो विश्व-ब्रह्मांड को अपना ही आत्मा समझते हैं, उनमें मैं तैं का भाव नहीं होता, वे समस्त विश्व-ब्रह्मांड के प्राणात्मा हैं, और उनका गति-क्षेत्र सर्वत्र व्याप्त सूर्य के समान है। वे चाहे जिस देश या जाति में जन्में, प्राणी-मात्र को अमृत का दान करते हैं, उनमें द्वैत-भाव नहीं होता। वेही ईश्वर का साक्षात् अवतार हैं।

❋ एकांत-निवास की खोज। ❋

अस्तु। जब स्वामी राम एकांत-निवास के विचार से पुष्कर पहुँचे, तो श्रीनारायण स्वामी भी, जो लंदन में बीमार हो जाने के कारण स्वामीजी के भारत-आगमन से छः मास पूर्व, जुलाई १९०३ में भारत आ गए थे, जनवरी १९०५ में उनकी चरण-शरण में उपस्थित हुए। कई मास वहाँ सत्संग रहने के अनंतर राम-बादशाह श्रीमन्नारायण स्वामी को सिंध और अफ़ग़ानिस्तान में भ्रमण करने की

आज्ञा देकर, आप अजमेर और जयपुर में व्याख्यान देते हुए, दार्जिलिंग-पर्वत की ओर प्रस्थानित हुए। किंतु बंगाल और संयुक्त-प्रदेश में भ्रमण करने के अनंतर ऑक्टोबर १६०५ में जब स्वामीजी हरिद्वार पधारे, तो उनका शरीर ज्वर से इतना जर्जर हो गया कि आठ दिन तक वे बिछौने पर से उठ ही न सके। खबर पाकर श्रीनारायण स्वामी भी आए। किंतु स्वस्थ होते ही श्रीनारायण स्वामी को लखनऊ की ओर भेजकर स्वामीजी मुज़फ्फ़रनगर चल दिए।

❋ व्यास-आश्रम-निवास और वेदाध्ययन ❋

शरीर में कुछ बल आते ही उनके मन में यह तरंग उठी कि अपने अमेरिका के लेक्चरों को, जो टाइप की हुई कापियों के रूप में उनके पास पड़े थे, संपादित करके Dynamics of mind के नाम से पुस्तकाकार प्रकाशित करें, अतः श्रीनारायण स्वामी को लखनऊ से बुलाकर किसी एकांत-स्थान की खोज में, हरिद्वार होते हुए, नवंबर १६०५ में वे ऋषिकेश आए और वहाँ से कोई ३० मील की दूरी पर व्यास-आश्रम पधारे। यहाँ टिहरी-राज्यके सम्मुख एक निर्जन सघन वन है जिसमें अत्यंत प्राचीन, विशाल और ऊँचेऊँचेवृक्ष-समूह धरती को ढके हुए हैं। कहते हैं, इन्हीं वृक्षों की सघन शीतल छाया में भगवान् कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने तप किया था। यह स्थान सुनसान होने के साथ ही दुर्गम भी है। इसमें एक साधारण रस्सों के कच्चे पुल द्वारा झँगूरे में बैठकर एक दूसरे मनुष्य की सहायता से गंगा पार करके जाना होता है। राम-बादशाह ने उस स्थान को पसंद करके वहीं अपना आसन जमा दिया।

स्वामीजी जिस समय हरिद्वार से चलने लगे थे, तो एक पुराने विचारों के महात्माजी ने सत्संग करके अपने वार्तालाप द्वारा उनके चित्त पर यह अंकित कर दिया था कि बिना वेद-वेदांग के प्रमाण दिए हुए वेदांत विषय पर किसी ग्रंथ का प्रकाशित करना भारतवर्ष के लिये उपयुक्त नहीं, इसलिये वे किसी बृहद् ग्रंथ की रचना करने से पूर्व वेदाध्ययन का उपक्रम करने लगे। थोड़े मास के भीतर ही अत्यंत मनोयोग-पूर्वक उन्होंने पाणिनि व्याकरण को निरुक्त और महाभाष्य-सहित पढ़ डाला, और फिर साम-वेद का अध्ययन आरंभ करके उसे समाप्त किया। इतने में सन् १९०६ का आधा फ़रवरी-मास व्यतीत हो गया। शिशिर संचालित सबल समीरने कानन-वासी पादप-पुंज को पत्र-पल्लव-विहीन करना प्रारंभ कर दिया। अतः और अधिक एकांत और शीतल स्थान के अनुसंधान में फ़रवरी १९०६ में, राम-बादशाह वहाँ से भी चल दिए।

❋ वशिष्ठ-आश्रम-वास ❋

व्यास-आश्रम से चलकर राम देव प्रयाग होते हुए वशिष्ठ-आश्रम पहुँचे। यह स्थान टिहरी से ४० मील की दूरी पर लगभग १३००० फुट की उँचाई पर है। यहाँ व्यास-आश्रम से भी अधिक घना जङ्गल है। टिहरी के महाराजने अपनी राजधानी में बड़ी आतुरता से उनका स्वागत किया और उनके भोजनादि के लिये अपने अनुचरों को नियुक्त कर दिया। व्यास-आश्रम तक उन के भोजनादि का प्रबंध कालीकमलीवाले बाबा के कलकत्ता क्षेत्र के मैनेजर बाबा रामनाथ द्वारा होता रहा था, वशिष्ठ-आश्रममें रियासत ने किया। वहाँ उत्तम भोजन-

सामग्री न मिलने के कारण स्वामीजी का स्वास्थ्य बिगड़ गया और वे अत्यंत कृशांग और दुर्बल होगए। स्वामीजी ने अन्न त्याग दिया और केवल पयाहार पर निर्भर रहने लगे। इससे रोग-मुक्त तो हुए, पर शरीर में बल न आ सका। वेदाध्ययन निरंतर होता था। यहाँ पर स्वामीजी ने कई स्थान परिवर्तन किए, किंतु उनके स्वास्थ्य को तनिक भी लाभ न हुआ। वशिष्ठ-आश्रम में मि० पूरनसिंह भी, पं० जगतराम आदि साथियों के साथ स्वामीजी के दर्शनार्थ आए और लगभग एक मास उनके निकट वास करके उनसे अंतिम बिदा ग्रहण कर साश्रु लोचन लौट गए। दूषित खाद्य-सामग्री मिलने के कारण वहाँ मिस्टर पूरन और उनके साथियों का भी स्वास्थ्य बिगड़ गया था, अतएव उन लोगों ने स्वामीजी से वह स्थान छोड़ देने के लिये प्रार्थना की, जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया।

※ अंतिम निवास और जल-समाधि ※

ऑक्टोबर १९०६ में राम फिर टिहरी आए और टिहरी के महाराज के सिमलासु बाग में ठहरे। दो सप्ताह वास करने के पश्चात् वे फिर एक ऐसे एकांत-स्थान की खोज करने लगे जिसे फिर बदलना न पड़े। टिहरी से कुछ दूर चलकर भृगु-गंगा के किनारे मालीदेवल-ग्राम से लगभग एक मील के अंतर पर वे एक ऐसे रम्य स्थान पर पहुँचे जो तीन ओर गंगाजी से वेष्टित होने के कारण अत्यंत सुंदर और सुहावना था। यह स्थान लगभग सौ वर्षों से साधु-महात्माओं का एकांत-स्थान बना हुआ था और

इस समय रिक्त पड़ा था। राम-बादशाह ने उसे पसंद कर लिया और वहाँ अपनी कुटिया बनाने का मानचित्र स्वयं अपने कर-कमलों से खींचा। खबर मिलते ही टिहरी-महाराज ने स्वामीजी के साथियों को कुटिया बनाने से रोक दिया और अपने यहाँ के पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट के सुपरिंटेंडेंट को भेजकर स्वामीजी के खींचे हुए मानचित्र के अनुसार पक्की कुटिया बनवाने की आज्ञा दे दी। टिहरी महाराज के इस अकृत्रिम प्रेम से स्वामीजी अति प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने शेष जीवन तक वहीं रहने का पक्का विचार कर लिया।

जब स्वामीजी ने अपने लिये एकांत स्थान मनोनीत कर लिया, तो उनके मन में श्री-नारायण स्वामी के लिये भी एकांत-स्थान ढूँढ देने की तरंग उठी। अतः उस स्थान से तीन मील की दूरी पर गंगा के किनारे, वमरोगी-गुफा को उन्हों ने पसंद किया, जहाँ वे स्वयं सन् १९०१ ई० में श्री-नारायण स्वामी को साथ लेकर कुछ दिन रह चुके थे उन्होंने श्रीनारायण स्वामी को उसमें रहकर एकांत-अभ्यास करने की आज्ञा दी। आज्ञानुसार नारायण स्वामी उस गुफा की ओर जाने लगे, तो राम-बादशाह, नंगे सिर नंगे पैर, सैर करने के बहाने, बहुत दूर उन्हें पहुँचाने गए। मार्ग में श्रीनारायण स्वामी को उन्होंने अनेक सदुपदेश इस शैली से दिए जिनसे प्रतीत होता था, मानों वे उनको अपना अंतिम आदेश सुना रहे हैं। राम के उन वियोग-व्यथा-व्यंजक वाक्यों को सुनकर श्रीनारायण स्वामी रोने लगे। राम-बादशाह ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा—

'बेटा' घबराओ नहीं। गुफा में एकांत रहकर अभ्यास और अध्ययन करो, नित्य आत्मचिंतन करते हुए अपनी वृत्तियों को अंतर्मुखी करो। राम के पार्थिव शरीर का प्रेम छोड़ दो; राम के दिव्य रूप में वास करो। सर्व-प्रकार से वेदांत का स्वरूप बनो। किसी का सहारा मत लो। अपने पैरों आप खड़े होना सीखो। प्रति सप्ताह रविवार को राम के पास आते रहो।"

इस प्रकार अपना अंतिम उपदेश देकर राम-बादशाह ने श्रीनारायण स्वामी को विदा किया और उसके पाँचवें दिन, अर्थात् १७ ऑक्टोबर सन् १९०६ ई० तदनुसार कार्तिक कृष्ण १५, दीपमाला को, मध्याह्न के समय, वे भृगु-गंगा में स्नान करने गए और गंगा की वेगवती धारा में, आकंठ जल में, स्नान करते समय, डुबकी लगाते ही, पैर के नीचे का पत्थर खिसक जाने से, एक भँवर में पड़कर, उनका निष्पाप, निष्कलंक, परिश्रमी, कर्तव्य-परायण, दर्शनीय, कमनीय, परमोपयोगी, कई मास से रोग-ग्रसित रहने कारण कृश, गौर वर्ण और दिव्य तेजोमय शरीर, उनकी परम प्यारी गंगा में, सदा के लिये लीन हो गया।

अपने लेख की, जिन अंतिम पंक्तियों को लिखकर राम-बादशाह गंगा-स्नान करने गए थे, वे ये हैं—

"ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इंद्र, गंगा, भारत!

"ऐ मौत! बेशक उड़ा दे इस एक जिस्म को; मेरे और अजसाम ही मुझे कुछ कम नहीं। सिर्फ़ चाँद की किरणें, चाँदी की तारें पहनकर चैन से काट सकता हूँ। पहाड़ी

नदी-नालों के भेस में गीत गाता फिरूँगा, बहरे-मव्वाज के लिबास में लहराता फिरूँगा। मैं ही बादे-खुश खराम और नसीमे-मस्ताना-गाम हूँ। मेरी यह सूरते-सैलानी हर वक्त रवानी में रहती है। इस रूप में पहाड़ों से उतरा; मुरझाते पौदों को ताज़ा किया; गुलों को हँसाया; बुलबुल को रुलाया; दरवाज़ों को खटखटाया; सोतों को जगाया; किसी का आँसू पोंछा, किसी का घूँघट उड़ाया। इसको छेड़ा, उसको छेड़ा, तुझको छेड़ा। वह गया! वह गया!! वह गया!!! न कुछ साथ रक्खा, न किसी के हाथ आया!"

❋ उपसंहार ❋

राम-बादशाह के भौतिक शरीर के जल-समाधि लेने का समाचार लेकर जब मिस्टर पूरनसिंह मुरारीवाला गाँव पहुँचे, तो स्वामीजी महाराज की पति-प्राणा पत्नी अपने पूज्य देवता के देहावसान का समाचार सुनते ही मूर्छित होकर गिर पड़ीं। यद्यपि अनेक उपचारों से वे चैतन्य हुईं; किंतु उस घड़ी से उन्हें उन्माद-सा हो गया और जून १९०७ में वह अपनी पार्थिव देह त्यागकर पतिलोक-वासिनी हुईं। श्रीस्वामीजी के पिता गोसाईं हीरानंदजी ने सन् १९०९ में शरीर त्याग किया। श्री स्वामीजी महाराज के ज्येष्ठ पुत्र गोसाईं मदनमोहनजी, जो टिहरी-महाराज की आर्थिक सहायता से विलायत जाकर तीन वर्ष की पढ़ाई के पश्चात् माइनिंग इंजीनियरी परीक्षा पास करके, सन् १९०९ में, भारतवर्ष आ गए थे, आज कल पटियाला-रियासत में माइनिंग इंजीनियर के

पद पर काम करते हैं और उनके छोटे पुत्र गोसाईं ब्रह्मानंद-जी आजकल काशी के हिंदू-विश्वविद्यालय में, एम्० ए० क्लास में, शिक्षा लाभ कर रहे हैं। इस होनहार नवयुवक के रूप का दर्शन करते ही स्वामी रामतीर्थजी महाराज की छवि नेत्रों के सम्मुख आ जाती है। स्वामीजी के एक कन्या भी थी जो दारुण क्षय-रोग से पीड़ित होकर, १९१५ में, स्वर्ग-वासिनी हो गई थी। स्वामीजी के जेष्ठ भ्राता गोसाईं गुरुदासजी और कनिष्ठ भ्राता गोसाईं मोहन-लाल जी आज भी वर्तमान हैं, और मालाकंड में, ब्रह्म-वृत्ति द्वारा अपना काल-यापन करते हैं।

❋ स्वामी राम के भक्त ❋

यों तो राम जहाँ गए उनके चरण छूने से अहिल्या की नाईं पत्थर भी जीवित हो गए पर कई एक व्यक्ति विशेष, जिन्होंने राम को अपने जीवन का आदर्श मानकर उनके उपदेशों का अनुयायी होना सहर्ष स्वीकार किया था। उनमें से कुछ यह हैं:—अमरीका में मिसिज़ वेल्मेन तत्पश्चात् सूर्यानंद), डाक्टर विलियम गिब्सन (पश्चात् स्वामी नारद) डाक्टर एलबर्ट हिलर (पश्चात् स्वामी गोतम) इत्यादि जापान में प्रोफेसर टाटाक्यो इत्यादि। भारतवर्ष में तो राम-बादशाह के अनेक भक्त वा राम के जीवन को अपना आदर्श माननेवाले हैं पर उनमें से प्रसिद्ध-प्रसिद्ध ये हैं— स्वर्गवासी महाराजा साहब टिहरी, स्वर्गवासी राय बहादुर ला० शालग्राम साहब तथा बा० गंगाप्रसाद वर्मा जी, फैज़ाबाद के प्रसिद्ध रईस लाला रामरघुबीरलाल और प्रसिद्ध कार्यकर्ता बा०

सुरजनलाल पांडेयजी देहरादून के प्रसिद्ध रईस लाला बलदेवसिंहजी, इलाहाबाद के प्रसिद्ध नेता पं० मदनमोहन मालवीयजी; आगरा के प्रसिद्ध स्वर्गवासी राय बहादुर लाला बैजनाथजी, मुज़फ़्फ़रनगर के प्रसिद्ध रईस स्वर्गवासी राय बहादुर लाला निहालचंद जी, मेरठ के प्रसिद्ध रईस लाला रामानुजदयालजी, लाहौर के प्रसिद्ध स्वामी शिवानन्दजी, तथा डाक्टर मुहम्मद इक़बालजी और लय्या के मियाँ मुहम्मदहुसेन आज़ादजी।

जिन सज्जनों को स्वामी राम से संन्यास मिला अर्थात् जिन लोगों ने स्वामीजी की आज्ञा वा आदेश से संन्यास धारण किया और संन्यासी नाम पाया, वे निम्नलिखित हैं।

सब से पहले स्वामी रामानंद को संन्यास दिया गया। इनका पहला नाम तुलाराम था। इनका शरीर अब छूट चुका है। इसके बाद श्रीमन्नारायण स्वामी को संन्यास दिया गया। इनका पूर्व नाम नारायणदास था। इसके बाद सरदार पूर्णसिंहजी को जापान में ही संन्यास धारण करने की आज्ञा मिली और वह एक वर्ष संन्यासी रहकर फिर गृहस्थ हो गए और आजकल ग्वालियार-रियासत में चीफ़ कैमिस्ट हैं। अंत में स्वामी गोविंदानंद तथा स्वामी पूर्णानंद को संन्यास लेने की आज्ञा मिली। इनका नाम गुरुदास तथा रामप्रताप था। जहाँ तक पता चलता है, इनके अतिरिक्त और किसी व्यक्ति को स्वामीजी ने अपने कर से संन्यास नहीं दिया, यद्यपि आज कल बीसियों महात्मा अपने आपको उनका संन्यासी-शिष्य प्रख्यात करते हुए सुने जाते हैं।

स्टीम प्रिंटिंग प्रेस, लखनऊ सन् १९२३।

प्रस्तावना।

———:o:———

श्री राम तीर्थ पब्लिकेशन लीग के पिछले त्रैमासिक अधिवेशन पर भगवान् रामतीर्थ जी महाराज के प्रसिद्ध शिष्य श्री १०८ आर. एस० नारायण स्वामिजी महाराजने मुझसे कहा कि रामतीर्थ ग्रन्थावलि के आगामि अंक में भगवान् राम की जीवनी प्रकाशित करने का विचार है। यदि यह जीवनी जो तुमने कवितामें लिक्खी है और जिसे तुमने राम के किसी जन्मोत्सव पर साधारण धर्म्म सभा फैजाबादमें पढ़ी थी इस अंकमें दीजावे तो क्या अच्छा हो। क्योंकि और जीवनियाँ भी इस अंक में दी जायंगी। और उपरोक्त स्वामि जी ने इस जीवनी के भेजनेके लिये मुझ से बहुत ताकीद की। स्वामीजी की आज्ञाको शिर आँखों पर धर फ़ैज़ाबाद जातेही सभाकी कार्यवाही की किताब से इस जीवनी को नकल करना आरम्भ कर दिया। और नकल करते समय कहीं कहीं घटा और बढ़ा भी दिया है और इस समालोचना (review) में श्रीयुत मुः केदारनाथ गवरन्मेंट पिन्शनर ने मुझे बड़ी सहायता दी है ज़िनको मैं हार्दिक धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता। इस जीवनी को शीघ्र समाप्त करने के लिये चिरंजीव अयोध्यानाथ भी मुझे बहुदा याद दिलाता रहा है।

२. इसमें सन्देह नहीं कि मैं न तो कोई कवि या शाइर हूँ, और न कोई लेखक या लेक्चरार, परन्तु उर्दू भाषा में

ये कविता एक साधारण रामभक्त के हृदय का बहाओ है जो सन १८९८ ई० में रोग ग्रस्त अवस्था में उसके संग दिल या बज्र हृदय को फोड़कर निकला है। और उसी वर्ष भगवान् राम के जन्मोत्सव पर सभा मन्दिर के तहखाने में बहता रहा और जो जिज्ञासु वहां तक पहुंच सके, उन्हों ने अपनी रूहानी पियास इस जल से बुझाई। दो वर्ष पश्चात् यही बहाओ बड़े ज़ोर शोर से बहा और इसी रामोत्सव पर सभा के बाला खाने पर चढ़ Water-fall या झरने की नाईं गिरा और कितने ही राम प्यारों पर बरस कर उनके तपित हृदयों को शान्त कर दिया। अब ढाई वर्ष बाद इस श्रीराम तीर्थ पब्लिकेशन लीग से गंगा बन कर बहरहा है और आशा है कि रामभक्तों के खेत रूपी हृदयों को शादाब करे जिन से राम रूपी फ़सल काटी जा सके। परन्तु आशा नाम इच्छा का है, और "इच्छा इक रोग है जो तुम को करे डांवा डोल"। 'Desire is a devise, it keeps you in a state of suspense' जैसा राम भगवान् स्वयं फरमाते हैं। पस उपरोक्त नारायण स्वामि की आज्ञानुसार यह जीवन चरित्र पाठकों की सेवामें उपस्थित किया जाता है। धन्य हैं वह जो इस तीर्थ रूपी जीवनी में स्नान कर पाप ताप रूपी मल को धो डालते हैं, और धन्यतर हैं वह जो इस राम गंगा में गोता लगा राम रूप में प्रकट होते हैं।

२. जब से भगवान् ने जल समाधी ली है, तबसे बराबर साधारण धर्म्म सभा फैज़ाबाद भगवान् राम का जन्मोत्सव प्रत्येक वर्ष मनाती है, गो और सभाएँ भी इस राम

उत्सव को बड़े प्रेम से करती हैं, क्योंकि इस कलिकाल में जिस प्रकार वेदान्त से कठिन मार्ग को पियारे राम ने साधारण बनाया है वह गुप्त नहीं। वेदान्त जिसको पहिले शुष्क फिलासोफी समझते थे आज आचरण या अमल में Practical या अमली वेदान्त होरहा है और धर्म वा साधारणधर्म के नामसे प्रसिद्ध है। और दिलोदिमाग क्या अंग २ में रमा हुआ जोश माररहा है। राम प्रेमियों को इसी लिये, हम उस सभा की ओर से खुश खबरी देते हैं कि आगामी रामोत्सव भगवान् राम की जूबली होगा। वस राम के समस्त प्रेमियों से सविनय पूर्वक निवेदन है कि इस अवसर पर अवश्य पधार कर अमली वेदान्त या साधारण धर्म के प्रचार के हेतु साधनों पर विचार करें। और अपने आने की सूची उस सभा के मन्त्री या सभापति को शीघ्र दें।

४. पस यदि स्वामीराम को हम युग प्रवर्तक नायक (या epock making hero) कहें तो क्या अनुचित है? क्योंकि निष्कलंक भगवान्के अवतरने के लिये रामभगवान् ने नमूना बन मार्ग साफ़ कर दिया है। अवतारों की फिलासोफ़ी पर एक सरसरी निगाह डालने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि क्यों प्रथम तीन अवतार तमोगुणी पशुओं के रूप में प्रकट होते हैं और द्वितीय तीन रजोगुणी राक्षस के भाव को दिखाते हैं और तृतीय तीन सतोगुणी मनुष्य के शुद्ध स्वरूप में प्रकाशित होते हैं। हाँ दसवाँ अवतार निस्सन्देह निष्कलंक है क्योंकि त्रिगुणातीत है और इसी कारण माया से ऊपर साक्षात् ब्रह्म है। और भगवान् राम निष्कलंक बनने का उपाय अमली वेदान्त यों बतलाते हैं:—

तू न इस्मो--जिस्म है और है न मन बुद्धी प्राण ।
तू तो निर्मल आत्मा है जान की भी जो है जान ॥

तनके साथ रोग, मनके साथ दुःख सुखके भोग लगा है; और प्राणके साथ ताक़त और कमज़ोरी और बुद्धी के साथ खुदग़रज़ी और खुदाग़रज़ी की उपाधियाँ लगी हैं। क्या ये उपाधियाँ कलंक नहीं हैं ? हम जब अपने आप को आत्मा जानते हैं, तो सारे पाप और ताप जिन की पहुँच आत्मा तक नहीं हैं नाश हो जाते हैं और आत्म-स्वरूप में प्रकाश करते हैं।

५. सच तो यों है कि जब हम अपने आप को आत्मा अनुभव करने लगते हैं, तो हम में ग़ज़ब की ताकत आ जाती है और उन रोड़ों को जो हमारी उन्नति के मार्ग में आ जाते हैं कुचल कर खाक बना देते हैं। वह तलवार जो हमारी गर्दन काटने के लिये तैयार है नशतर बन कर उस फोड़े को चाक करती है जो हम को दुःख देता था। या राम भगवान् ही के शब्दों में यों कहो:--Every thing you meet in this world should be a stepping stone instead of a stumbling block- Convert your stumbling block into a stepping stone

अर्थात्

जो कुछ इस जग में मिले ज़ीने का होवे पत्थर।
बन के रोड़ा न कभी रोके न होवे ठोकर ॥
अपनी ठोकर को बना लीजिये संगे-ज़ीना।
ताकि मेराज को तुम पहुँचो इस पर चढ़ कर ॥

राम के यह ज़ुबानी जमा ख़र्च नहीं है, बल्कि उन्हों ने जो कुछ कहा है सब अपने जीवन में ढाल कर दिखला दिया है।

बाल अवस्था में माता वियोग और कुमारअवस्था में पिता की नाराज़गी क्या कुछ कम रुकावटें हैं? तिस पर विद्योपार्जन के समय पास धन का न होना और बीबी का बोझा सिर पर आ पड़ना क्या उन्नति के मार्ग में कुछ कम रोड़े हैं? मगर ये रोड़े पिस कर खाक हो जाते हैं नहीं नहीं बल्कि इन रुकावटोंने ज़ीने का काम दिया। क्योंकि इन ही दुःखों से उनका चित संसार से उपराम हुआ। और परमात्मा की ओर लगा। पस ऐ दुःख! तू धन्य है जो सच्चे सुख का पेश खीमा है। और सत्यासत्य के निर्णय करने की कसौटी है। गोसाईं तुलसीदास जी ने क्या ठीक कहा है॥

धीरज धर्म मित्र और नारि।
आपत काल परखिये चारि॥

६. चूंकि राम अपने उपदेश का आप नमूना बनते हैं, इसी से इनका उपदेश दिल पर चोटें लगा कर राम को प्रकट कर देता है। और इसी कारण समस्त मत मतांतर और देश देशान्तर के सज्जन इनको अपनाते हैं। जिस समय देश-भक्ति के जज़बे में आते हैं तो भारत मुजस्सिम बन जाते हैं और तब वे काल नहीं बल्कि ज़ुबाने-हाल से यों कहते हैं॥

शिर है हिमालिया और कमर है विन्ध्या ।
रास कन्या है मिरा पाओं ज़रा देखो आ ॥
भारत के कंकर मुझे शंकर हैं, भारत है इष्ट ।
इष्ट क्या, मैंही हूँ कुल भारत, नहीं शक है ज़रा ॥

फिर आगे बढ़ कर सारे संसार से अभेद हो जाते हैं और केवल कथनी से नहीं बल्कि रैहनी और सैहनी की भाषा से यों बोलते हैं:—

सारा संसार देश मेरा जान
और मनुष्य मात तात मेरी मान ॥
बनना करना भला है मेरा काम
और सच्चाई है मिरा ईमान ॥

७. इस प्रस्तावना को हम पूज्य पाद श्री १०८ नारायण स्वामि को जिनकी मुख्य कृपा से यह जीवनी आपके कर कंवल में पहुंचती है धन्यवाद देते हुए भगवान् रामके उन शब्दों से समाप्त करते हैं जिनसे वह अपने पियारों को अपने पास बुलाते हैं और आते आते वे स्वयं राम रूप हो कर उनसे एक हो आनन्द और शान्ति को प्रकाश करते हैं ।

WANETD.

Reformers.
Not of others.
But of themselves.
Who have won.
Not university distinction.

But victory over the local self.
Age, the youth of Divine joy.
Salary; God-head.
Apply sharp.
With no begging solicitation.
But commanding decision.
To the Director of the Universe.
Your own self.

Om! Om!! Om!!!

अर्थात्

ज़रूरत है हमें रीफ़ार्मज़ की।
न उनकी, जो करें औरों की शुद्धी॥

मगर उनकी, करें जो शुद्धी अपनी।
और उन के पास होवे एक डिग्री॥

जगत के जीत लेने की नहीं जी।
मगर हाँ अपना आपा जीतने की॥

अवस्था, ब्रह्मानन्द की जवानी।
तलब में हाँ मिले भी खुद खुदाई॥

जगत के डाइरेक्टर को ही यानि।
तुम अपने आपको दो जल्द अर्ज़ी॥

ख़ुशामद की न हो वह जिसमें बू भी।
दिलैरी हो इरादे की टपकती ॥

*सदा है राम तीरथ जी की वही।
सुनो प्रकाश ही की अब ज़ुबानी ॥

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग २०—४—२३ } { सुरजनलाल पांडे, शान्ति प्रकाश।

ओ३म् शान्ति, शान्ति, शान्ति।

*आवाज।

* ॐ *

श्री शान्ति प्रकाश कृत

मुखम्मसे—राम ।

(जो स्वामी राम के जन्मोत्सव पर सन् १९२१ में पढ़ी गई)

रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज (टेक)

रात अमावश की हुई किस लिये रौशन महराज ।
इस कलिकाल में क्यों धर्म्म बना अब सरताज ॥
रङ्ग बदला है ज़माने ने, बड़ा हो कोई काज ।
हो न हो आज है उत्सव कोई महराजधिराज ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥ १ ॥

रामतीरथ जी महाराज का है कैसा चरित्र ।
यह है वह तीर्थ जो रहता है सर्वत्र पवित्र ॥
इसके स्नान से धुल जावें शको-शर डर फ़िक्र ।
इसका स्नान यहां, इसहां पै चल और कर ज़िक्र ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥ २ ॥

है दिवाली की *सुबह, †बुद्ध, अक्तूबर बाईस ।
सन अठारह सौ तिहत्तर सँवत उन्नीस सौ तीस ॥
अब महाराज ने प्रकट हो मिटा दी सब टीस ।
तीनों दुःख मेट दिये आपने लो बिस्वे बीस ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥ ३ ॥

---

*प्रातः । †बुद्धवार से अभिप्राय है ।

देश पञ्जाब में है जो ज़िला गुजराँवाला।
इसमें एक ग्राम है कहते हैं मुराली वाला॥
जहाँ गोस्वामी हीरानन्द के घर उजियाला।
आज के दिन ही हुआ, देख लो कैसा *आला॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥ ४॥

पैदा होने पै †पितामह लगे हँसने रोने।
जब सबब पूछा तो इस तौर से वह कहने लगे॥
रोया यों हूँ, कि यह बच्चा या मां इसकी मर जावे।
और हँसा इसलिये, दुनियाँ में यह शोहरत पावे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥ ५॥

हीरानन्द जी के यहाँ आज हुआ जो यह सुत।
सरस्वती जिभ्या पे है इसके, यह है सारस्वत॥
गोत्र है इसका वशिष्ठ, इसही से है ज्ञान से युत।
इसमें कुछ शक नहीं, आनन्द हो उसको अद्भुत॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥ ६॥

आपकी माता का देहान्त हुआ बचपन में।
पाले हैं आपको भगिनी औ बुआ बचपन में॥
दूध माता का नहीं पाया ज़रा बचपन में।
इससे कमज़ोर रहे आप सदा बचपन में॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥ ७॥

करके व्यायाम सदा करदी यह कमज़ोरी दूर।
तीस तीस मील पहाड़ों पै ये चलते थे ज़रूर॥

---

*उत्तम, †गोस्वामी रामलाल ज्योतिषी, गोस्वामी हीरानन्दजी के पिता।

दौड़ में फर्स्ट अमिरका में ये आये थे हुज़ूर।
अपने पुरुषार्थ से नेचर की कमी की काफूर॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥ ८॥

जिसकी हो जैसी रुची, वैसे ही सामान मिलें।
ताकि एक मुख्य विषय में वह तरक्की पावें॥
धर्म्म में थी जो रुची धर्म्म को वह प्राप्त करें।
कैसे सामान मिले इसको ज़रा अब देखें॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥ ६॥

होनहार वृक्ष के होते हैं सदा चिकने पात।
बचपन ही से थी इन्हें धर्म्म में रुच मिसले-नबात॥
रोने से होते थे चुप चाप चहे दिन चहे रात।
सुन के ध्वनि शँख या प्रणव की ज़रा वात की बात॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०॥

धर्म्मशाले में कथा सुनने पिताजी इनके।
आप जाते थे और बच्चे को भी ले जाते थे॥
देर हो जाती किसी दिन तो ये हज़रत रोते।
और चुप होते थे ये सिर्फ कथा सुन ही के॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥११॥

अपने उस्ताद से रोकर के यह इक दिन बोले।
चाहे घर रोटी खाने को नहीं जाने दीजे॥
पर कथा सुनने की हाँ मुझको आज्ञा दीजे।
थे यह बचपन से ही यों धर्म्म का अमृत पीते॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म दिन आज॥१२॥

प्रायमरी मद्रसा जो इनकी जनमभूमि में था।
दस बरस ही की अवस्था में उसे पास किया॥
कोर्स के साथ में कुछ फ़ारसी विद्या को पढ़ा।
हेड मुदर्रिस के दिले-पाक को लो छीन लिया॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१३॥

गुज़रांवाले में पिता इनको जो पढ़ने लाये।
दस बरस के थे, कहो कैसे अकेले रहते॥
इक धन्ना भक्त थे मित्र इनके पिता के सच्चे।
पास रख उनके दिया राम को, जो बच्चे थे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१४॥

यह धन्ना भक्त जी तो विश्वामित्र ही निकले।
कर दिया राम को तैयार जो आगे के लिये॥
योगवासिष्ठ की बहुधा वे कथा कहते थे।
राम भी सुनते थे सतसंग भी तो ये कुछ करते॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१५॥

अपने पढ़ने से समय मिलता था जो कुछ भी इन्हें।
खर्च होता था भगत जी के सदा सत्संग में॥
धन और मन और यह तन क्यों न अर्पण करदें।
आत्मिक लाभ इस सतसंग से जब प्राप्त होवें॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१६॥

गुजराँवाला से जन्मभूमि को आते जाते।
पढ़ते जाते थे यह रस्ते में बराबर अपने॥

एक दिन देखा ज़मींदार ने, बोला हँस के।
"मद्रस्सा* यह नहीं, क्यों पढ़ते यहाँ तुम बच्चे ?
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१७॥

"सारी दुनिया है मिरा मद्रस्सा" बच्चे ने कहा।
देखो किस ख़ूबी से इस बात को प्रत्यक्ष किया ॥
पास जब कर चुके कालिज का यह आला दर्जा।
तब पढ़ाने लगे, पर अपना न पढ़ना छोड़ा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८॥

लाइब्रेरी की किताबों को जिन्हें वह समझे।
पढ़ने के लायक़, उन्हें आप तो पढ़ते ही रहे ॥
सच्चा पढ़ना है वही, छोड़ के कालिज जो पढ़े।
शौक़ से अपने पढ़े, डर न परीक्षा का करे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१९॥

धर्म्म की पुस्तकें देखीं जो पहले भी देखा था उन्हें।
देखना उनका यही, ख़ूब समझ करके पढ़ें ॥
फिर बिचार उन पे करें सत्य को ग्रहण करलें।
इस तरह पढ़के देशाटन को वह बाहर जावें ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०॥

फिर बिदेशों के रिवाज और रसूमों को पढ़ा।
उनके मज़हब का, हकूमत का, तरीक़ा देखा ॥
सबका सारांश लिया अपने में सब जज़्ब किया।
"सारी दुनिया है मिरा †मकतब" यों दिखलादिया ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१॥

---

*पाठशाला। †पाठशाला; शिक्षास्थान।

वर्ष पन्द्रह के थे तब पास इन्टरेन्स किया ।
अपने स्कूल में अव्वल थे वज़ीफा भी लिया ॥
पर इन्हें करते थे इस तौर से मजबूर पिता ।
नौकरी अब करो और छोड़ दो पढ़ना बेटा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२२॥

पढ़ने का कुछ तो मज़ा यौंही थे यह पा ही चुके ।
"विद्या का पीछा करो" इस को थे ये देखे हुए ॥
दिल में था जोश कि कालिज में हम पढ़ने जाँगे ।
आखिरश ठान ली दिल में कि पढ़ेंगे आगे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३॥

बाप नाराज़ हुए, सख़्त कहा, सुस्त कहा ।
एक खामोशी में सब आपने गुस्से को सहा ॥
अन्त में बाप ने इस तौर कहा "दूर हो जा ।
आगे पढ़ने को नहीं कौड़ी भी तुझको दूँगा" ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२४॥

अलगरज़ अब यह जो लाहौर में पहुंचे आ के ।
फोरमेन कालिज मिशन में हुए भर्ती जा के ॥
साल भर तक रहे लाहौर, नहीं घर को गये ।
फिर गए घर को पिताजी के बहुत कहने से ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२५॥

इक वज़ीफा भी मिला म्यूनीसिपल बोर्ड का ।
इन के मौसा और धन्ना भक्त ने थोड़ा थोड़ा ॥

जो दिया इन को उसी पर बसर करते अपना।
धुन के पक्के थे न छोड़ा मगर लिखना पढ़ना॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२६॥

अपने मौसा को था इक पत्र में लिखा ऐसा।
"पूर्ण कर देवे ज़रूरत मेरी प्रभू मेरा॥
मेहनती मन औ समय और हो एकान्त जगह।
हो नहीं इन की कमी यही है मेरी इच्छा"॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७॥

पास अट्ठारह सौ नव्वे में एफ़० ए० को किया।
गो, बराबर रहे रोगी, क़दम पीछे न दिया॥
अपने कालिज में ग़रज सब से प्रथम नाम लिया।
झेल ली तंगी, मुसीबत को कड़ा करके हिया॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२८॥

बाप ने जब यह सुना, तन में लगी चिनगारी।
बोले अब तक न की उसने मदद मेरी जारी॥
घर से ला इन की धरम पत्नी भी इनको सौंपी।
यह न होता, नहीं बचपन की जो शादी होती॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२९॥

दो बरस ही की अवस्था में सगाई थी हुई॥
दस बरस की हुई जब उम्र शादी तब हुई।
खेल गुड़ियों का है इस तौर की शादी फिर भी॥
सत्य सङ्कल्प है जिनका, न हटे जीते जी।
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥३०॥

वायू से चाहे हिमाचल भी अगर जाय फिसल ।
एक चिनगारी से कुल बर्फ चाहे जाय पिघल ॥
धुन के जो पक्के हैं उनका नहीं दिल जाय दहल ।
यही पुरुषार्थ है उनका और यही आत्म-बल ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३१॥

सिन्धु भी जुगुनू की दुम से जला चाहे जले ।
सूर्य भी पहले उदय अपने ढला चाहे ढले ॥
और ध्रुव अपनी जगह से जो चला चाहे चले ।
जिसमें हिम्मत है कभी हौसला उसका न टले ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३२॥

साथ हिम्मत के ईश्वर की मदद आती है ।
"हिम्मते-मर्दां मददे-राम" कहा जाती है ॥
यह मदद दैवी है, विश्वास को जो लाती है ।
प्रेम की बाढ़ से सब पापों को बहाती है ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३३॥

धुन के पक्के थे, जिसे सत्य समझते, करते ।
मौत भी उन को डराती तो नहीं वह डरते ॥
काम गर पूरा न होता, तो उसी दम मरते ।
राम के नाम से तब ही तो हैं कितने तरते ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३४॥

गणित के पर्चे में एफ०ए० के लिखा था फिक़रा ।
हल करो कोई से नौ प्रश्न जो हैं वे तेराँ ॥

आप ने तेरहाँ हलफ़र के लिखा क्या, आहा !
"आँख लो इन में से नौ कोई" अहाहा आहा !!
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२५॥

सतरां और अठारां अददों का करना ।
ज़र्ब इक लाइन में बतलाता है कैसा इनका ॥
ज़िहन था और दिमाग़ इनका था कैसा आला ।
चुस्ती फुर्ती और सहन शक्ति थे उसपे तुर्रा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६॥

मिस्टर जी० दास ईसाई थे मुझ से कहते ।
"राम एकान्त में जब ध्यान को करते रहते ॥
"छेड़ता उस समय गर उनको ख़ुशी से सहते ।
"ओम् आनन्द की धारा सदा रहती बहते ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२७॥

एक दिन आते थे रावी से "शिवोहम् कहते" ।
मारा पत्थर किसी इक प्यारे ने उनके शिर पे ॥
मुँह से उफ़ तक न किया, सर से लगा ख़ूँ बहने ।
उनको कुछ भी न कहा, कहते "शिवोहम्" ही रहे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२८॥

बुद्धि, फुर्ती और सहन शक्ति को इनके देखा ।
एफ़० ए० अठारह सौ नव्वे में ग़रज़ पास किया ॥
अब तो पढ़ने का लो बी०ए० में अधिक शौक़ हुआ ।
पहले से ज़्यादा वज़ीफ़ा भी इन्हें मिलने लगा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२९॥

पर वज़ीफ़े में गुज़र होना बहुत मुश्किल था ।
इसलिये आपने ट्यूशन का भी कुछ प्रबन्ध किया ॥
धीरज और धर्म्म में पर फ़र्क़ नहीं आया ज़रा ।
आप की रहनी औ सहनी ने दिया इसका पता ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४०॥

तीन ही पैसे की रोटी में किया अपना बसर ॥
रात औ दिन में फ़क़त एक ही समय खा कर ।
ऐसी तंगी में गये चोरी थे बर्तन तिसपर ॥
हारी हिम्मत नहीं, दिल पर रहा अच्छा ही असर ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४१॥

इस समय आप ने आकाश की बानी को सुना ।
और सुनकर के अमल आप ने तन मन से किया ॥
हिम्मत और शौक़ का फिर वलवला दिलमें उठा ।
"लोग क्या कहते हैं" इस बात का झगड़ा छूटा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४२॥

कालिज इक रोज़ गए पहन के जूती ऐसी ।
एक तो अपनी है और एक ज़नानी जूती ॥
"कोई क्या कहे है" इस बात की परवाह न रही ।
शर्म सब दूर हुई, आँख जो अन्तर की खुली ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४३॥

धुन के पक्के थे लगन दिल में थी इनके सच्ची ।
सारे कालिज में गई फैल यह शोहरत इनकी ॥

अपने सहपाठियों को शिक्षा गणित की भी दी।
कुछदिन जब प्रोफ़ेसर कालिज को थी बीमारी रही॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४४॥

सारे कालिज में अजब आप की इक धूम मची।
ऐसी कुछ क़ाबलियत आप ने पैदा कर ली॥
लो रियाज़ी में तो पहले ही से इक शोहरत थी।
फ़ार्सी में भी बहुत आप की इक धूम हुई॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४५॥

संस्कृत-भाषा का जो प्रेमी था लगा उसको बुरा।
है ब्राह्मण का जो बालक वह कहावे मुल्ला॥
संस्कृत भाषा को वह जाने नहीं या जाने ज़रा।
इससे बोला वह "गोसाईंजी! क्या तुमको हुआ"॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४६॥

"संस्कृत भाषा को गर तुमने तिलाँजलि दे दी।
"क्या हुआ गरचे यवन भाषा में डिग्री ले ली॥
"संस्कृत भाषा नहीं जग में पढ़े फिर कोई।
""संस्कृत-भाषा की सुध लीजिये गोसाईं जी"॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४७॥

लो परन आप ने तत्काल ही इस तौर लिया।
"फ़ार्सी में जो हूँ बी० ए०, न ब्राह्मण कहना॥
प्रिन्सिपल को लिखा फिर दूसरे दिन ही ऐसा।
त्याग के फ़ार्सी को संस्कृत में लूँगा ८॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४ ॥

प्रोफ़ेसर संस्कृत का जो था वह यों बोला।
बी० ए० में संस्कृत है नहीं यह ले सकता" ॥
धर्म्म संकट में इसी वक्त पे है यह पड़ना।
हो चुका कल ही परन फ़ार्सी के त्यागने का ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥४९॥

वह न दर्जे में गये संस्कृत फ़ारसी के।
और दो *हफ़्ते तक इस घंटे में हाज़िर न हुए ॥
संस्कृत को रहे थे पढ़ते उन्हीं मित्रों से।
फ़ार्सी छोड़ कर कहने से जिनके बैठे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५०॥

पढ़ने में संस्कृत के जो समय ज़्यादा दिया ॥
तो दो ही हफ़्तों में इस तौर से तैयार हुआ ॥
संस्कृत भाषा के जो पंडित थे उन्हों ने यह कहा।
योग्य अब पूर्ण हुआ दर्जे के है यह लड़का ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५१॥

अलग़रज़ आप ने इस साल बहुत कोशिश की।
संस्कृत क्या सभी मज़मून में की तैयारी ॥
तीन नम्बर से जो अंगरेज़ी में नाकामी हुई।
वरना पंजाब में थी अव्वल इन्हीं की पदवी ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५२॥

तभी से क़ायदा पंजाब में यह जारी हुआ।
पाँच नम्बर से अगर फ़ेल हो कोई लड़का ॥

*सप्ताह।

फिर बिचार उसपे किया जावे नियम ऐसा बना ।
है बिगड़ने में भी अच्छों के यह होता अच्छा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५३॥

फ़ेल होने पे इन्हें बी० ए० में बड़ा शोक हुआ ।
दिल पे बिजली सी गिरी, हो गया पारा पारा ॥
आँसूओं का भी इन आँखों से अजब तार बंधा ।
पर नतीजा भी ज़रा देखिये कैसा निकला ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५४॥

फ़ेल होने से वज़ीफ़ा तो हुआ बंद इनका ।
इन के सिर भार तो स्त्री का प्रथम से ही था ॥
फ़ीस देना और किताबों का नये सिरे से लेना ।
औ सहारा न किसी का था ग़रज़ कौड़ी का ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५५॥

ऐसी हालत में किस जगह आराम मिले ।
दिल में जाने से ही आराम या विश्राम मिले ॥
सच है हारे को हरी, ईश्वर या राम मिले ॥
राम को राम मिले किस जगह? निज धाम मिले ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५६॥

छोड़ के आश्रय दुनियां का प्रभु को पकड़ा ।
यही विश्वास है और यही भरोसा सच्चा ॥
धर्म्म के मार्ग में विस्वास ज़रूरी कितना ।
है अधर्मी वही जिसको नहीं विश्वास ज़रा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५७॥

फिर तो बेसाख़्ता दिल से यह निकलने ही लगा ।
तुम ही माता हो पिता और तुम्ही बंधु सखा ॥
तुम ही हो द्रव्य या धन और तुम्हीं हो विद्या ।
तुम ही सब कुछ हो मिरे देवों के देव, हे देवा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५८॥

प्रभु ! अब राम तुम्हारा है और तुम राम ही के ।
राम का काम है अब आप ही का सुमिरन करे ॥
आप की मरज़ी पे राज़ी ही रहे और उस पे चले ।
राम के काम हुए राम के ज़िम्मे सारे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥५९॥

यह शरीर हो गया अब आप का, चाहे जो करो ।
चाहे तुम मारो इसी दम, चहे जीता रक्खो ॥
हम तो राज़ी हैं उसी में जो रज़ा तेरी हो ।
डले कुंदन के हैं हम, आज़मा चाहे जब लो ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥६०॥

फेल होने ने यह बी० ए० के बनाया कुन्दन ।
शरणागतवस्था में पहुँचा दिया मन को फ़ौरन ॥
दुःख जिसे कहते बुरा होता है, सुख का कारन ।
पस बुराई तो नहीं है कहीं जग में भगवन् ! ॥
रामतीरथजी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥६१॥

दुःख इस वास्ते है, सुख की प्राप्ति होवे ।
होती बीमारी है इस हेतु कि आराम मिले ॥

दुःख से डर न ज़रा किन्तु खुशी से सह ले ।
है बुराई भी एक *ज़ीना भलाई के लिये ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥६२॥

रामभक्ती में लगे राम कुछ ऐसे इस साल ।
फ़िक्र पढ़ने की न कुछ थी, न गृहस्थी का ख़याल ॥
ग़ैब से आप को इमदाद मिली जो थी †मुहाल ।
है हर इक को नहीं यह भेद समझने की मजाल ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥६३॥

नेक दिल झंडू मल हलवाई था जो कालिज का ।
हाथ जोड़े हुए इस तौर से वह कहने लगा ॥
रूखी सूखी मेरे घर एक बरस खाइयेगा ।
आप ने उसकी इस अर्दास को मंज़ूर किया ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥६४॥

प्रिन्सिपल ने फिर इन्हें चुपके से तिरपन रूप्ये ।
बन्द कर एक लिफ़ाफे में ला सब इनको दिये ॥
लेने से जब किया इनकार, लगे तब कहने !
ले लो इक मित्र ने तुमको हैं खुशी से भेजे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥६५॥

नाम अपना नहीं वह मित्र है प्रकट करता ।
पर यह ‡इसरार है उसको कि यह ले लो रुप्या ॥
रूप्या ले लिया औ शुक्रिया ईश्वर का किया ॥
लो, मदद देता है इस तौर से ईश्वर प्यारा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥६६॥

---

*सीढ़ी, सोपान । †कठिन । ‡ज़िद, हठ ।

मैथेमेटिक्स के जो कालिज में प्रोफैसर थे।
आधी फीस आप की खुद आप दिया करते थे॥
इम्तिहाँ की जो थी फीस उसके पूरे रुप्ये।
बन्द कर के दिये, वापिस किये, फिर भी न लिये॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥६७॥

डाक्टर मौला ने जो इनके थे रघुनाथ के दास।
आपको चिट्ठी लिखी "बेटा मत होना ज़रा भी उदास॥
अपनी तालीम रखो जारी" मदद की दी आस।
इसको कहते हैं मदद दैवी औ सच्चा विश्वास॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥६८॥

और इम्दाद मिली जिसका बियाँ कैसे करें।
दिक़्क़तें पढ़ने में जिससे नहीं ज़्यादा आवें॥
सारे पंजाब मे अव्वल रहे, जो बी० ए० में।
औ वज़ीफ़ा भी मिला ज़्यादा कि एम०ए०में पढ़ें॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥६९॥

दो वज़ीफ़े मिले और एक तिलाई तमग़ा।
इक वज़ीफ़ा मिला पच्चीस का, इक पैंतिस का॥
नक्द इन्आम मिला पूरे पचास इसके सिवा।
इससे कुछ रुपया अपने गुरू जी को भेजा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥७०॥

एम० ए० पढ़ने लगे सरकारी कालिजमें फिर आ।
और बेफिक्र थे रुपये से वज़ीफ़ों को पा॥

यों तो बेफ़िक्र थे रुपये से कि जब से इनका।
आत्म-अर्पण हुआ औ आया भरोसा सच्चा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥७१॥

ए० और बी०कोर्स गरज़ दोनों ही एम०ए०में लिये।
पास फिर आपने एम०ए० किया किस खूबी से॥
सबसे अव्वल रहे और बी० ए० पढ़ाते भी रहे।
फोरमैन कालिज मिशन में वह बरस भर पूरे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥७२॥

कोई वेतन नहीं लेते थे इस कालिज से।
इसी कालिजसे किया पास था एफ०ए० बी०ए०॥
था न एम० ए० यहां इसही से अलग आके पढ़े।
सिन था बाइस और सन पिच्चानवे जब एम०ए०हुए॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥७३॥

बाद एम० ए० के वज़ीफ़ा था जो मिलने वाला।
जिसको पा करके विलायत में होता पढ़ना॥
आप कहते थे कि "टीचर या प्रीचर हूंगा"।
और सिविल सरवस नहीं पास में करने जाता॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥७४॥

वह वजीफ़ा न मिला इस से विलायत न गये।
पर वह "टीचर औ प्रीचर" तो दोनों ही बने॥
और विलायत भी गये तब भी प्रीचर हो के।
यानी सन्मार्ग के उपदेश को करते हुये॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज.॥७५॥

पढ़ते कालिज में थे, उस वक्त के खत पत्रों से ।
यह पता लगता है नेचर की भी पुस्तक पढ़ते ॥
जागे इस जागती पुस्तक को जब यह पढ़ के ।
तब दिया हिन्द क्या संसार जगा आपही ने ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥७६॥

आप की चिट्ठियां उस वक्त की देती हैं पता ।
पत्ते पत्ते से सबक मिलता है इनको कैसा ॥
कीड़ियां चीटियाँ सबही ने सबक इनको दिया ।
खुल गई आँखें हिये की तब ही जलवा देखा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥७७॥

बाहरी चीज़ें नहीं करतीं हैं घर दिल में ज़रा ।
दिल तो भरपूर है आनन्द से अन्दर सारा ॥
दादा भाई की सवारी को जो हुड़बोंग मचा ।
आप के दिल पे असर किया नहीं जूं तक रेंगा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥७८॥

अब तो लिखते हैं यह चिट्ठियों में अपने सिद्धांत ।
घर हो सतसंग और सतग्रन्थ और होवे एकान्त ॥
तीनों लोकों का मिले राज और मन होवे शाँत ।
रूप में निष्ठा यही और यही है वेदान्त ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥७९॥

दुनिया का कोई [illegible] है क़ाबिल विश्वास ।
जिसको विश्वास है [illegible] के वही हैं बश्शाश ॥

दुनिया है उनकी .गुलामी को सदा हाज़िर बाश।
शान्ती होती है हर रोम से उनके प्रकाश॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८०॥

आप कहते थे कि है दूध ही एक प्रेम का फल।
प्रेम जब जोश करे छाती से दूध आवे उबल॥
दूधका इसही से करते थे बहुत ज़्यादा शुग़ल।
हफ्तों तक खाते नहीं थे कोई अन्न या फल॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८१॥

काम में रहते थे दिन रात बराबर मश.गूल।
अपने आपे को ग़रज़ काम में जाते थे भूल॥
मन अचल इन्द्रियाँ चल ख़्वाहिशों पे डालके धूल।
"दस्त दर कारओ दिलयार" का दिखलावें उसूल॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८२॥

पास होने पै एम० ए० के मैथिमेटिक्स के।
आपने खोल दिए दर्जे, पढ़ाने भी लगे॥
घोर श्रम करने से तब आप जी बीमार हुवे।
स्वास्थ्य-रक्षा के लिये आप फिर निज घरको गये॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८३॥

स्वस्थ होने पै फिर लाहौर आ ड्राइंग सीखी।
मिशन स्कूल सियालकोट में इक पोस्ट मिली॥
मद्रसे में करें ये दिन को सेकन्ड मास्टरी।
सुपरिन्टेन्डेन्ट बने बोर्डिंग के भी ये ही॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८४॥

बोर्डिंग हाउस में लड़कों को जगाते थे आप।
प्रातः बत्ती को जला उनको पढ़ाते थे आप॥
घर जो आता था उसे दूध पिलाते थे आप।
उसको सिखलाते पढ़ाते औ सुनाते थे आप॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८५॥

जब सियलकोट में थे आप ने इक दिन क़र्ज़ा।
दस रुपैये का किसी जन से ज़रूरत पै लिया॥
दस रुपये देते थे प्रतिमास में क़र्ज़ा अपना।
जब तलक वाँ रहे, यह देना बराबर ही रहा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८६॥

जिस जगह आप रहे, काम को इस भाँति किया।
आपके काम से हर व्यक्ति ही संतुष्ट रहा॥
मिशन--कालिज में लाहौर के फिर जल्दी आ।
गणित की प्रोफ़ेसरी का याँ आपने पद पाया॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८७॥

साठ रुपये में रज़ाई जो बनाई इस जा।
लोग कहने लगे यह तुम को दिया है धोका॥
आप कहने लगे बज़्ज़ाज़ औ दर्ज़ी हैं ख़ुदा।
राम को धोका ख़ुदा दे किस तौर भला॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८८॥

इतने में दोनों ने आ करके दिया सिर को झुका।
और कहने लगे अपराध को अब कीजे क्षमा॥

रात भर सोए नहीं दुःख है हमको ऐसा।
दाम वापिस किये पर राम ने उनको न लिया॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥८६॥

बोले फिर राम कि तुम राम हो नारायण हो।
दुःख सब दूर हों, गर असलियत अपनी जानो॥
जानो तुम आपको और धोका किसी को मत दो।
ओम आनन्द है, आनन्द में आनन्द रहो॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥६०॥

नौकरी अब नहीं वह कर सके कुछ दिन ज़्यादा।
प्रेम वैराग्य ने दिखलाया जो अपना जल्वा॥
गणित का लेक्चर बना भक्ती का सर्मन पूरा।
आँखों से आँसू बहा देता है सारा दर्जा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥६१॥

दिल में है अब तो लगी, देख लो वैराग की आग।
छुट्टियाँ ज्यों ही मिलें जाते थे यह वोंही भाग॥
कभी जंगल में है मंगल कभी है बृज में फाग।
और कभी गाते पहाड़ों पे हैं कशमीर के राग॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥६२॥

देखते कुद्रती नज़्ज़ारों को और खुश होते।
कभी एकान्त में खुश थे कभी सतसंगत से।
देते लेक्चर कभी और जाके कभी यह सुनते।
अलग़रज़ आप यों तातीलों में फिरते रहते॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥६३॥

दिन के हों बारह चहे रात के हों बारा बजे।
जेठ बैसाख हो या माघ औ फागुन होवे॥
चाहे हो कैसे ज़बरदस्त ये गर्मी जाड़े।
घूमते फिरते हुए ऐसे समय देखे गये॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥९४॥

सोती जब दुनिया है तब जागे है येही प्यारा॥
जागे क्या, घूमे औ देखे है यह वह नज़्ज़ारा।
जिससे हट जाता है लो दुनिया का पर्दा सारा॥
माया का पर्दा हटा, ब्रह्म जगत है सारा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥९५॥

जब वह लाहौर में रहते तो नित रावी जाते।
सुबह और शाम थे इस दरिया पै आते जाते॥
कृष्ण के प्रेम में थे उस जगह रोते गाते।
साक्षात् कृष्ण के दर्शन भी वह अक्सर पाते॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥९६॥

देख घनश्याम को आकाश में जब वह पाते।
कहते घनश्याम का सन्देशा हैं बादल लाते॥
कैसा सन्देशा है, घनश्याम हैं, खुद ही आते।
राम से श्याम मिले, राम ही श्याम हो जाते॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥९७॥

कृष्ण के ज़िक्र से आँखों से है वर्षा जारी।
हाय! दिखलाओ मुझे जलदी से सूरत प्यारी॥

जाने क्या देखा कि बेहोशी हुई अब तारी।
कृष्ण के नाम से लगती है समाधी सारी॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥९८॥

आँखें तुम फूटो अगर कृष्ण को तुम देखो नहीं।
हाथ तुम टूटो अगर उसके चरण छूओ नहीं॥
मेरा दिल काला औ तुम काले पै क्यों आओ नहीं।
हाय मैं पापी सही फिर मुझे क्यों बख़्शो नहीं॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥९९॥

कृष्ण लीलाओं को जब कहते औ सुनते ओ हो।
कृष्ण के प्रेम में कुछ ऐसे मगन होते हो॥
आँसू के मोतियों का सेहरा यह होता फिर तो।
और खिंचे आते हैं दिल साफ़ हैं जिनका देखा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१००॥

इस तरह जो हैं खिंचे उनमें हैं नारायण एक।
काम करते हैं बहुत, दिल के बड़े हैं वह नेक॥
गो ज़ुबाँ से चहे कह देवें कभी सख़्त वलेक।
दिल में है प्रेम का सर चश्मा कि हैं राम पे टेक॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०१॥

राम जी मस्त हुए प्रेम में ऐसे आकर।
होश जाते रहे और छा गई मस्ती दिल पर॥
प्रेम में हो गया तबदील रियाज़ी लेक्चर।
बह रहे प्रेम के आँसू हैं हर इक के यकसर॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०२॥

पाँच छे घंटे पढ़ाना हुआ इनको मुश्किल।
सोचा इस नौकरी से होगा हमें क्या हासिल॥
सच्चे सर्कार के नौकर हों जिसे दे चुके दिल।
नौकरी छोड़ दी सर्कारी गई दूसरी मिल॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०३॥

ओरियंटल जो कालिज है बड़ा लाहौर में जी।
सिर्फ दो घंटे पढ़ाने की यहाँ नौकरी की॥
मैथीमेटिक्स पढ़ाते थे औ वेदान्त को भी।
वक्त एकांत औ सत्सङ्ग में सर्फ हो बाकी॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०४॥

प्रेम अब बढ़ गया और ज्ञान का कुछ रङ्ग जमा।
कृष्ण से प्रेम था इस ही से पढ़ी थी गीता॥
गीता गीता को समझ त्याग जब उत्पन्न हुआ।
तब तो वेदान्त के पढ़ने में लगा आने मज़ा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०५॥

एक दिन स्वप्न में देखा कि लो *गोलू औ हम।
खेलते आँख मिचौली हैं औ दौड़ें धम धम॥
इक चपत गोलू के मुँह पर जड़ा हम ने बेग़म।
आँख बस खुलगई यह मुंह था हमारा ही सितम॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०६॥

इससे वेदान्त का कुछ मस्ला समझ में आया।
जिसको समझा था है अन्दर उसे बाहर पाया॥

---

*गोलू या गोलचन्द के नाम से स्वामी राम कृष्ण भगवान् को प्रेम से पुकारा करते थे।

शौक़ वेदान्त के पढ़ने का बहुत चर्राया।
सद्गुरु जी के सतउपदेश को दिल ललचाया॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०७॥

सच्चा जब शौक़ हो कैसे न हो आशा पूरी।
कोयले में हो लगी आग तो खिंच आवेगी॥
आक्सीजिन आदी हो जितनी यह ज़रूरत जिसकी।
इसी आकाश से जिस में है हर इक चीज़ भरी॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०८॥

सद्गुरु मिलने का संकल्प था सच्चा इससे।
शङ्कराचार्य लो द्वारका मठ के आये॥
और लाहौर में जो धर्म्म सभा थी जिसके।
राम थे मंत्री उसही के यह मेहमान हुए॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१०९॥

उनकी सेवा का हुआ काम इन्हीं के ज़िम्मे।
फिर तो सतसंग के मौक़े मिले और कहने लगे॥
उनकी सेवा भी जो यह करते थे सच्चे दिल से।
कैसे सतसंग से फिर लाभ न हासिल होवे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥११०॥

राम जब करने लगे इनकी सेवा निष्काम।
बोले जिज्ञासु है और सच्चा है यह तीरथ राम॥
गर चले साथ हमारे तो पहुंचे निजधाम।
यानी पा जावे उस आनंद को जो रहवे है मुदाम॥
रामतीरथ जी महाराम का है जन्म-दिन आज॥१११॥

सुनके शुभ वृत्त, हुए साथ श्री शङ्कर के ।
और कशमीर तलक साथ बराबर ही रहे ॥
रास्ते भर किए सत्सङ्ग बराबर उनसे ।
उपनिषद् और ब्रह्म-सूत्र के भाष्य उनसे पढ़े ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥११२॥

संस्कृत भाषा और वेदान्त में आचार्य जी ।
सारे भारत में थे अद्वैत कहो लासानी ॥
उनके उपदेश से जब राम में कुछ मस्ती बढ़ी ।
सद्गुरू उनको किया लो हुई आशा पूरी ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥११३॥

जब विदा होने लगे राम तो शंकर बोले ।
ज्ञान की लाली और मस्ती नहीं घटने पावे ॥
दिन बदिन रंग हो चौखा औ यहां तक ये चढ़े ।
रङ्गत अन्दर की ये बाहर से झलकने ही लगे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥११४॥

वापिस आने पे है लाहौर में अब यह ही शुगल ।
प्रेम की ज़र्दी चले ज्ञान की सुर्ख़ी में बदल ॥
अब तो दिन रात है ब्रह्मसूत्र व उपनिषदों का हल ।
करदी वेदांत ने पैदा अजी अब तो हल चल ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥११५॥

अब तो एकान्त की सूझी औ मकाँ भी बदला ।
"हरचरण" की जो "पौढ़ी" थीं वहीं रहने का ॥

आपने अब तो सुभीता किया है सच यह कहा।
"लो हरी चरणों पै तीरथ का रहेगा बासा" ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥११६॥

सन था अट्ठारह सौ सत्तान्वे, दिन दीवाली।
आत्म-समर्पण किया और दिल में हुई खुशहाली ॥
हार के तन को लिया जीत, जो है वनमाली।
यों दिवाली को जगा, चेहरे पै फैली लाली ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज। ११७॥

दिल नहीं लगता है अब दुनिया के कामों में ज़रा ॥
दिल लगे किसतरह जब आना "जगत है मिथ्या"।
"ब्रह्म है सत्य" नहीं अब तलक यह अनुभव हुआ।
हाँ खटकता है ये ही दिल में बराबर काँटा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥११८॥

आके अमरीका से लो स्वामी विवेकानंद ने।
दिया वेदान्त पे लेक्चर जो बड़े जोरों से ॥
सारे पंजाब में जोश इससे तो फैला जा के।
पर असर पूरा हुआ राम के शुद्ध हृदय पे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥११९॥

मेहमाँ धर्म्मसभा के थे ये लाहौर में जो।
राम थे मंत्री इस ही से इन्हों ने उनको ॥
लाए घर अपने और सत्कार किया इनका लो।
खास भोजन वहाँ फिर इनको खिलाया देखो ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१२०॥

भिक्षा जब पा चुके तब राम से बोले स्वामी ।
तुमको अभिलाषा है किस चीज़ की अब बोलो जी ॥
"साक्षात्कार हो बस दिल में है मेरे यह लगी ।
और मुझको नहीं पर्वाह किसी चीज़ की भी" ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१२१॥

जाते हर साल हृषिकेश हरिद्वार को आप ।
जाते हैं आप तपोबन कि मिटें तीनों ताप ॥
ताप मिटते नहीं, करते हैं बहुत तप औ जाप ।
सख़्त बेताबी है जिस तौर हो पानी की भाप ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१२२॥

इक *सभा खोली कि प्रचार हो जिससे वेदान्त ।
जान अद्वैत को, हर शख़्स हो आनन्द औ शान्त ॥
जहाँ सत्सङ्ग भी होता था विचार और एकान्त ।
सान्त माया को कर ब्रह्म कि दिखलावें कान्त ।
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१२३॥

फर्वरी थी और सन अट्ठारा सौ अट्ठानवे ।
जब के लाहौर में खोली थी सभा आपने ये ॥
रही कायम सभा जब तक कि ये लाहौर रहे ।
सभा टूटी ज्योंही लाहौर को छोड़ा प्यारे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१२४॥

इस सभा से हुआ औरों का भी और इनका भला ।
यानी अद्वैत के अमृत को खूब इस से चखा ॥

---
*अद्वैतामृत वर्षणी इस सभा का नाम था ।

पीते अमृत के, शको शुब्हों ने अपना बँधना ।
बोरिया बाँधा और मस्ती ने लो मुँह दिखलाया ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१२५॥

शोर होली का है बाहर औ खमोशी अन्दर ।
बाहरी चीजें नहीं करती हैं अब दिल पै असर ।
फिर धना भक्त से कट आस से सत्सङ्गत कर ॥
उत्तराखंड की जानिब बढ़े कहते हर हर ।
रामतीरथ जी महाराजका है जन्म-दिन आज ॥१२६॥

सन था अट्ठारा सौ अट्ठान्वे सैप्तेम्बर को ।
हुआ अपरोक्ष इन्हें ज्ञान ऋषी केश में लो ॥
पास मन्दिर के ब्रह्मपुरि के होकर देखो ।
शुक्ल पक्ष भादों की तेरस हो ख़्वाह चौदस हो ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१२७॥

वर्षा ऋतु कैसी यह दो चश्मों से पानी वर्षा ।
संसकारों के है अन्तिम का लो यह ही रोना ॥
या मिलाप होने पै है प्रेम के जल की धारा ।
दिल का दरवाज़ा खुला बन्द जो था टूट गया ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१२८॥

साफ दिल हो गया आलाइश हुई सारी दूर ।
ज्ञान के सूर्य का लो दिल में चमक उट्ठा नूर ॥
जिसने सब कुलफ़तें इक साथ ही करदीं काफ़ूर ।
ओम् आनन्द से दिल भर गया अब तो भर पूर ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१२९॥

"शुक्र है आई ख़बर यार के आ जाने की ।
अब कोई राह नहीं है मिरे तरसाने की" ॥
आप ही यार हूँ, हो किसके ख़बर आने की ॥
मस्ती-ए-मुल हूं मैं, हाजत नहीं मयख़ाने की ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०॥

वो जो तुर्यां थी न मालूम, वह हम हा निकले ।
जिस को समझे थे कि है ग़ैर वो हम आप ही थे ॥
"हम न तुम-दफ़्तर गुम" अश्कों का सैलाब बहे ।
आँखें तू धन्य है, मोती जो किये हैं सदक़े ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१॥

सन् था अट्ठारा सौ निन्नावे जब आया बुख़ार ।
ख़ुशी तारी हुई और पड़ गये ज़्यादा बीमार ॥
जब शफ़ा पाई तो इस तौर हुए ज़ाहिर यार ।
"देश के जागे नसीब, आई है आनन्द बहार ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२२॥

इसी आनन्द का प्रकाश बढ़ाने के लिये ।
इक "अलिफ़" नामी निकाला शुभ चिन्तकों ने ॥
जारी कर लेख लिखे आपने इसमें ऐसे ।
जिन से आनन्द मिले और फ़ायदा होवे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३॥

लाला हरलाल ने दी इस में थी माली इम्दाद ।
इन्तिज़ाम इसका नारायण ने किया हो दिलशाद ॥

श्रीमान आर, यस नारायण स्वामी के नाम से जो अब प्रसिद्ध हैं ।

राम ने लिक्खे मज़ामीन जो कर दें आज़ाद ।
खेद के द्वैत गुलामी के यह देखो बुनियाद ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१३४॥

राम के दिल में उमंग थी कि वह संयास को लें ।
पर न मिलता था कोई मौक़ा कि घर को छोड़ें ॥
जब हो अन्दर से लगन बाहरी सामान मिलें ।
आज़मा लें चहे जब आप ज़रा अब देखें ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१३५॥

शान्त्याश्रम से गुजरात के आते हैं यहाँ ।
शिवगुणाचार्य देखो तो हैं क्या करते याँ ॥
किया साधारण धर्म्म इस समय इन्होंने अयाँ ।
जो सनातन से है ये धर्म्म मगर था पिनहाँ ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१३६॥

साधु सेवा में हैं तत्पर औ करे हैं शिक्षा ।
दोनों महात्मा का करते हैं ये रीफ़ार्म बड़ा ॥
व्यासपूजा का जो अब मेला है होने वाला ।
उस में दिखलायेंगे कर्तव्य नया कुछ अपना ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१३७॥

जितने ही मज़हबो मिल्लत के जो हामी हैं यहाँ ।
स्वामी शिवगुणा के ये सब लोग हैं देखो मेहमाँ ॥
इस प्लेटफ़ार्म से कामिल जो हुआ सब पे अयाँ ।
प्रेम का धाम हर इक प्यारे में रस जो है रवाँ ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म दिन आज ॥१३८॥

देखो, आये हैं इस उत्सव में श्री तीरथ राम।
प्रेम से अपने किया दिल को है हर एक के राम॥
लेकचरों की है मची देखो बड़ी धूमो-धाम।
और भजनों से बना मेला है गोया निज धाम॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१३९॥

व्यास पूजा के दिवस स्वामि शिषगण ने कहा।
"देखो है देश को इक व्यास की अवश्यकता॥
"व्यास इक पदवी है दीजाती है उसकी हो को सदा।
"धर्म्म को जाने औ फैलावे जो सब से ज़्यादा॥"
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१४०॥

"इस समय हमको नज़र आते हैं इक तीरथ राम।
"जिनको हम देसकें यह पद्वी और हो नेक अंजाम।
सबने मंजूर किया दिलसे यह स्वामी का कलाम।
व्यास पद्वी मिली अब राम को हों पूरण काम॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१४१॥

बारा जुलाई थी सन भी यही उन्नीस सौ था।
व्यास पद्वी को ग्रहन करते ही उपदेश दिया॥
"मुल्क को गम नहीं अब चाहिये हरगिज़ करना।
"अच्छे दिन आगये अब उसके "समय है इच्छा॥
रामतीरथ जी मराहाज का है जन्म-दिन आज॥१४२॥

दूसरा आपका उपदेश हुआ रात को जो।
उस में बतलाया कि तुम शास्तर इस तौर पढ़ो॥

"जिसतरह पढ़तेहो कैमिस्टरी और साइन्सको"।
तजुरबा उसका करो जिसको पढ़ो और सुनो ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१४३॥

धर्म्म के मार्ग में त्याग ही पहली मन्ज़िल ।
जिसने त्यागा इसे, उसका नहीं मक़सद हासिल ॥
अमली उपदेश दिया त्याग का फिर खोलके दिल ।
यानी दी त्याग जो थी नौकरी, अबतो कामिल ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१४४॥

था जो दो घंटे का कुछ लसरका उसको छोड़ा ।
सच पूंछो अभी दुन्या से मुँह को मोड़ा ॥
दिल में विश्वास है, मुझको नहीं होगा तोड़ा ।
खुद ही आजावेगा, प्रारब्ध ने जो है जोड़ा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१४५॥

चौदह जूलाई को इस्तीफ़ा दिया नौकरी से ।
दूसरे दिन ही वह लाहौर से बाहर निकले ॥
जाने के वास्ते हरद्वार महज़ तप के लिये ।
पैहले तप करलें औ प्रचार करेंगे पीछे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१४६॥

किस तरह से मैं लिखूं धर्म्म की इस यात्रा को ।
चारों ओरों से *सदा प्रेम की आती है सुनो ॥
कोई रोता है, कोई गाता है, इस प्रेम में हो ।
राम के प्रेम ने लाहौर को फांसा देखो ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१४७॥

---

*ध्वनी, आवाज ।

राम के पुत्र श्री लौ ने बसाया लाहौर।
आज अजोध्या वह बना, देखलो तुम करके ग़ौर ॥
राम के व्योग में हर एक है ग़मग़ीं दिल और।
मर्दो-ज़न रो रहे तुम देख लो यां पर किस तौर ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१४८॥

फूलों की बर्षा से लाहौर के कूचे भो गली।
भर गये आपकी जिस सिम्त सवारी निकली ॥
स्त्रियाँ देखो खड़ी कोठे पै रोती हैं भली।
मर्द गाते हैं भजन, हैं ये भजन की मंडली ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१४६॥

साथ में झण्डा लिये चलते हैं नारायण दास।
दास बनके वह चलें, उनकी यहही है अरदास ॥
साथ में उनको लिया, उनकी हुई पूरी आस।
दास से बनगये फिर स्वामी, किया बनमें बास ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५०॥

और भी साथमें कितने हुए, किन किनको गिनूं।
दो बच्चों को और एक स्त्री को भी देखूं ॥
बीबी और बच्चे यही राम के "क्यो साथ न दूँ।
धर्म पत्नी ने कहा "मैं भी दुःखो दर्द सहूं" ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५१॥

अलविदा कह के प्यारी रावी रियाज़ी को राम।
रेल पे चढ़ के हरद्वार किया अपना मुक़ाम ॥

और भूकों के खिलाने में थे पास जो दाम।
ख़र्च सब कर दिये, बे दाम के अब है आराम॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५२॥

उनको तो एक लगन यह ही है, अनुभव हो जाय।
तुर्यावस्था का है प्रकाश उसी का ही उपाय॥
भावना जिसकी हो सच्ची वहही उस चीज़को पाय।
इस में सन्देह नहीं और न है शक की आय॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५३॥

बद्रीनाथ का इक सेठ ने रस्ता पूंछा।
मस्त इक पहिने लिंगोटी फटी वाँ फिरता था॥
हाथ रख अपना लिंगोटी पे वह यों कहने लगा।
"बद्रीनाथ हैं यह, जाता कहाँ है बाबा"॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५४॥

*नाओं इनका नहीं मालूम न है †ठाओं हमें।
यह "हरी हर" थे कहा करते, इसीसे सब इन्हें॥
कह के "हरिहर" हि पुकारें औ वह इससे बोलें।
हैं "हरि" वह ही जो औरों के दुःखो-दर्द हरें॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५५॥

सेठ ने तो नहीं कुछ इनका सुना यह कहना।
राम के कान में पर पड़ गई यह मस्त ‡सदा॥
राम ने देखा इन्हें, इन ने भी उनको देखा।
होके दो चार कुछ आँखों से पिला §ऐस दिया॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५६॥

---

*नाम †निवास स्थान ‡आवाज §हसने।

जिस को पी आँखों से कुछ राम हुए ऐसे मस्त ।
दुनियां की "नेस्ती" में देखलिया राम है "हस्त"
दिल में फिर शान्ती आई, औ हुए मस्त अलस्त ।
कैसे रह सकते हैं फिर हौसले, बतलाओ तो पस्त ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५७॥

उपनिषद् हाथों में ले *पाये-बिरहना वह बढ़े ।
थे ऋषिकेश को इसलिये के अनुभव होवे ॥
एक दो दिन वह ऋषिकेश में फिर रह करके ।
वह तपोबन को गये तप ही करने के लिये ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५८॥

तप है वह मार्ग कि जिसके बिना आगे न बढ़े ।
सत्य के वास्ते जो कष्ट, उन्हें "तप" कहिये ॥
इसी से कहते हैं बिन दुख के नहीं सुख है मिले ।
दुःख ! तू है धन्य तो फिर क्यों कोई तुझसे भागे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१५९॥

दुःखही करता है सरल हृदय को टुकड़ा टुकड़ा ॥
हारेको हरि मिलें, दिखलावें को अपना मुखड़ा ॥
दूर हो जाता है फिर ज़िन्दगी भर का दुःखड़ा ।
दिलभी खिलजाता है फिर रहता नहीं वो सुकड़ा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१६०॥

बीबी और बच्चों को तो बीचहि में छोड़ दिया ।
उनकी सेवा के लिए आपने इक शिश छोड़ा ॥

*नंगे पाओं ।

कह दिया बीबी से "वैराग है तुम्हारा कच्चा।
"लौट घर जाना" लो कुछ अर्से में ऐसा हि हुआ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१६१॥

मोह जो बीबी और बच्चों में है सब को होता।
पहले ही से न था इनको कहाँ अब इसका पता॥
ब्रह्मानन्द पैदा हुआ जब तो सुन कर लिक्खा।
इक नदी आन पड़ी और समुन्दर में तो क्या॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१६२॥

इक नदी मिलने से क्या उसका घटे और बढ़े।
क्या बढ़े सूर्य का प्रकाश बस इक दीपक से॥
मेरे आनन्द के प्रकाश को जानो ऐसे।
सोच क्यों ? देह से सम्बन्ध नहीं जब रखते॥
रामतीरथजी महाराज का है जन्म दिन आज ॥१६३॥

मुझको नै बुद्धी, नहीं चित्त, न अहंकार ही मान।
पृथ्वी जल तेज और आकाश और वायू मत मान॥
मैं नहीं जिह्वा, नहीं चक्षू, नहीं हूँ मैं कान।
मैं चिदानन्द हूं, शंकर हूँ, शिव मेरी शान॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१६४॥

उपनिषद राम हैं पढ़ते और बहुत तप करते।
देखो वह सामने हैं गंगा के तट पे बैठे॥
सुनो अब "ओम्" का वह जाप हैं करते कैसे।
ओम हर रोम से है इन के यह देखो निकले॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१६५॥

बाहर भीतर है लो वर्षा की लगी खूब झड़ी ।
आँखें बसाती हैं जल, स्वाँस में आँधी है भरी ॥
राम के अन्तः करण से है *सदा वह आती ।
"ओ३म बलिहारी तिरे जाऊं प्यारी गंगी ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१६६॥

हाड और मास मेरे फूलो-बताशे होवें ।
भेंट हम अन्तः करण तेरे हि अब तो कर दें ॥
पाप और पुण्य की ज्योतिः की जगहः सुलगावें ।
इस तरह सत्य की धारा में रमण करने लगें ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१६७॥

अब तो हैं बैठे यहाँ जम के और हैं यों कहते ।
"तख़्त या तख़्ता।" अमर पद हो चाहे मौत आवे ॥
अहले-खाना ! तेरा रिश्ता कहो कब तक यह निभे ।
कहाँ तक बकरे की माँ खैर मनाये जावे ।
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१६८॥

हे पिता ! पुत्र है अब प्रेम में बिलकुल माता ।
और ऐ बच्चों, पिता अब है तुम्हारा जाता ॥
प्यारे विद्यार्थियों ! आप गुरू है गाता ।
"बह गया बह गया, अब हाथ नहीं में आता" ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१६९॥

राम के चर्णों से गंगा बहे; ग़र्क़ाब करे ।
सारे संसार को या राम का यह जिस्म पड़े ॥

---

*आवाज ।

ज़िन्दा गंगा में, और यों ख़ातिमा इस का होवे ।
मर के तो सबके ही जिस्म इसमें हैं गिरते पड़ते ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१७०॥

गर न अपरोक्ष हुआ जलवाए-इर्फ़ानी का ।
और बू बाक़ी रही जिस्म की, फिर तो बाबा ॥
राम की हड्डियाँ और मांस नज़र होवेगा ।
जीते जी मछली और कछवों के नहीं शक है ज़रा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१७१॥

आती है ठण्डी हवा, गंगा का पानी उछले ।
गोया है जोशो-खरोशों से यह गंगा कैहवे ॥
संग दिल अपना बना पानी, बहा इस को दे ।
प्रेम की धार में आनन्द तब हीं तो लूटे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१७२॥

जब न अनुभव हुआ तब राम ने लो जिस्म अपना।
गंगा में फेंक के बस ख़ातिमा करना चाहा ॥
गंगा की लहरों ने फिर जिस्म को उल्टा फेंका ।
जो गिरा एक शिला पर और वहीं उठ बैठा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१७३॥

जिसको रक्खे है प्रभू कौन उसे मार सके ।
किसकी ताक़त है कि बाल उसका भी इक बीका करे ॥
मौत को मौत न आ जावे अगर वो आवे ।
यह सिदाक़त है, मुबारक हो जो इसको समझे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१७४॥

आगे चलकर हुई कुछ और ही हालत अद्भुत।
शाम पड़ने को है और राम बना है इक बुत॥
है उदासी न खुशी है यही रस भीनी रुत।
जागृत स्वप्न सुषुप्ती नहीं। है तुर्या शुत॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१७५॥

सो हुई प्राप्त महाराज को तुर्यावस्था।
जिस में अपरोक्ष हुआ ब्रह्म का अद्भुत जलवा॥
साक्षात होने पे आनन्द कुछ ऐसा छाया।
खुदही आनन्दहूं, क्या ढूंढूं? कहाँ? इसके सिवा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१७६॥

जिसको हम ढूँढते बाहर थे वह .खुदही निकले।
सीग़ा ग़ायब हुआ ग़ायब लो देखो कैसे॥
तू तू, मैं मैं मिटी, आनन्द हर इक *सू बरसे।
लेख और बानी के अब हाते से बाहर हैं ये॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१७७।

इन दिनों पत्र मिला एक कि "घर आ जाओ"।
उत्तर इसका जो दिया उसका वह सारांश सुनो॥
"छोड़कर देह के पंजाब को गंगा में पड़ो।
आत्म मर्कज़ पे पहुंच कर वहीं तुम हमसे मिलो॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१७८॥

चेहरे की ज़र्दी थी जो सुर्ख़ी में बदले है अब।
दिल में मायूसी थी अब, उस में खुशी है बेढब॥

---

*तरफ, ओर।

रात अज्ञान की अब दूर न हो, तब है ग़ज़ब।
ज्ञान का सूर्य निकलने लगे अन्दर से ही जब॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१७६॥

यह इसी सूर्य की लाली है जो बाहर फूटी।
अबतो अज्ञान की सब *सियाही है दिलसे छूटी॥
"सर्व धर्म्मान् परित्यज्य" कहा है ड्यूटी (duty)।
शान्ती शान्ती अब राम ने कैसी लूटी॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१८०॥

फूठ निकली है यह लाली, तो कहो क्योंहो उदास।
इसही से आप ने रंगे कपड़े, लिया अब संन्यास॥
मुर्लीधर सेठ के बाग़ीचे में था इनका निवास।
सन था उन्नीस सौ इक पूस-नगर टेहरीके पास॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१८१॥

अब तो हर वक्त है चेहरे पे हंसी और खुशी।
गिर्याओ ज़ारी उदासी सभी अब दूर हुई॥
अब तो आनन्द की है अन्दरो बाहर झाँकी।
राम हर रोम से प्रकाश है देखो तो सही॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१८२॥

शंकराचार्य की आज्ञा को किया है पालन।
भग्वे वस्तर को श्री राम ने करके धारन॥
वरना दिल जिसका रँगा यानी हो तनमन से लगन।
उसको क्या चाहे वह जिस्म तौरका ले वस्त्र पहन॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥१८३॥

---

*अन्धेरा।

तीर्थ सन्यासी थे शंकर कि जिनकी आज्ञा।
पालना करने को संन्यास इन्हों ने है लिया॥
राम तीरथ हुआ अब नाम उलट कर इनका।
*मार-माया को उलट राम बना है कैसा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८४॥

आज कल हालते-संन्यास है बिलकुल अबतर।
इसी हालत की दुरुस्ती थी जो इक मद्दे-नज़र॥
खुद नमूना बने, उपदेश वह सब से बेहतर।
वह भी संन्यास के लेने की †वजह है ‡दीगर॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८५॥

उत्तराखंड की अब यात्रा आरंभ हुई।
पहुँचे यमनोत्री इक मास सुकूनत बाकी॥
बन्दर पूंछ सुमेरु वे गये स्वामी जी॥
जो कि यमुनोत्री मन्दिर से बहुत ऊपर थी॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८६॥

साथ में पांच या छै और थे स्वामी जी के।
इक इक करके गिरे जाड़े के मारे सारे॥
बर्फ बारी में वह बादल हि के ऊपर चलते।
आखिरश राम अकेले ही सुमेरु पहुंचे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८७॥

कहते सोने का जो पर्वत है सुमेरु को सभी।
इसका कारण है यही सूर्य की किरणें तिरछी॥

---

*मार फारसी शब्द है इसका अर्थ है साँप। जब मार को उलट दें तो राम शब्द निकल आता है। †कारण, हेतु। ‡दूसरी।

उसकी चोटी पे पड़ें, बर्फ से है जो के ढकी।
राम के चरणों से अद्वैत की यों गंगा बही।
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८८॥

यह ही आकाश की बानी है "कैलाश की कूक"।
मुर्दों को बख़्शे अमर पद्वी है यह ही बे चूक ॥
लज्जा भय शंका मिटें, इसही से नींद आवे घूक।
इस ही से शान्ती प्रकाश हो और सत्य की भूंक ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८९॥

कुछ घंटों रह के सुमेरू पे वह नीचे उतरे।
छायों के मार्ग से गंगोत्री देखो पहुंचे ॥
कौन चल सकता है इस मार्ग पे? इनसे पहले।
पाँडव पाँचो थे इस मार्ग से बेशक गुज़रे ॥
रामतीरथ जी मराहाज का है जन्म-दिन आज ॥१९०॥

राम जी का था इरादा कि न नीचे उतरें।
कुछ दिनों और इनर्जी को वहीं रहके भरें ॥
स्वामि शिवगण हि के इसरार से नीचे आवें।
और पाताल तलके जाके उठा दुन्या दें ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१९१॥

क्योंकि जिस वक्त कोई मुक्त पुरुष प्रकट हो।
सारी दुनिया को उठा देता है ऊपर देखो!
वायू जब ऊपर उठे उसका खला भरने को।
नीचे से नीचे की भी वायु उठ ऊपर हो तो ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१९२॥

लगभग इक मास के गंगोत्री पे वास किया ।
बद्रिकाश्रम की फिर ओर गये मस्ताना ॥
वाँ से फिर लौट के मथुरा गये वाँ उत्सव था ।
शान्त्याश्रम में जो स्वामी शिवगण जी का ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८३॥

स्वामी शिवगण जी भी लाहौर से थे साथ गये ।
हां ऋषि केश में कुछ दिन वह बिला शक ठैरे ॥
मथुरा में शान्त्याश्रम फिर खोला आ के ।
साधु सेवा के लिए शिक्षा देने के लिए ॥
रामतीरथ जी महाराजका है जन्म-दिन आज ॥१८४॥

आश्रम का जो यह पहला ही महा उत्सव था ।
दूरो-नजदीक का हर एक वहां पर आया ॥
था प्लेटफार्म जो कामन तो हर इक यों समझा ।
मेरी ही बेदी यह मेरा ही है यह जलसा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८५॥

माडिरेटर थे इसी जलसे में सज्जन कितने ।
माडिरेटर इन चीफ हुए यह ही इन सब के ॥
बाद जलसे के तो यह यमुना के तट पर पहुंचे ।
और जाड़ो में बड़ी रात तक उपदेश दिए ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१८६॥

लोग दीवाने थे इस राम के पीछे इस जा ।
इन के पीछे लगे, जब जाने लगे लघु शंका ॥

बोले तब "ठैरो यह राम आता है" धन्य ए मथुरा ।
गोपियो ! कृष्ण का दृश तू ने दिखा फिर से दिया ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१९७॥

मथुरा से *अगरे होते हुए लखनौ आये ।
फैज़ाबाद फिर वां से यह सीधे पहुँचे ॥
धर्म साधारण सभा के यहां मेहमान हुए ।
यां भी कामन था प्लेटफ़ार्म, उसी पर बोले ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१९८॥

अद्वैत राम की सुन द्वैत के छक्के छूटे ।
मौलवी मुर्तिज़ा लड़ने के लिए फिर आये ॥
आप के तेज से हो प्रेम के वश रोने लगे ।
दोनों कर जोड़ के "कर राम मुआफ़' यों बोले ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥१९९॥

राम तीरथ के यहाँ आने का कारण यह था ।
ख़्वाब में हमको इशारत हुई लो उनको बुला ॥
फैज़ आबाद क्या फिर सब जगह यह ही चश्मा ।
फैज़ रूहानी का जारी हुआ देखो कैसा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२००॥

दिल में आया था मिरे ख़्याल कि कुछ राम को दूं ।
मुँह से यह शब्द निकलता न था किसतौर कहूँ ॥
हाँ कुली के ही बहाने से नज़र कुछ मैं करूं ।
भाँप के राम यह बोले कि "अलिफ ही मैं हूं" ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०१॥

---

*आगरा नगर से अभिप्राय है ।

पस वह जिस वक़् चले, कम्बलो अम्बर सब को।
फैंक के बोले कि लो राम अलिफ है देखो॥
राम है शाह कुली का नहीं मोहताज वह हो।
धनको फिर किस लिये ग्रहण करे वह बतलाओ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२०२॥

सन था उन्नीस सौ दो जब यह खबर फैल गई।
धर्म्म उत्सव हो यह जापान में इक जल्द अभी॥
जैसे उत्सव किया करते हैं शिवगण स्वामी।
जिनमें सब मत और मज़ाहिब की है व्याख्या होती॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२०३॥

यह खबर सुन के महाराजा टेहरी सीधे।
(राम ने जिनके शको-शुबहे थे सब दूर किये)॥
राम के चरणों पे कर दंडवत ऐसे बोले।
"आप गर जावें उधर दुनिया का उद्धार होवे"॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२०४॥

क्योंकि आयँगे सब ही देशों से वां पर सज्जन।
राम फिर चल दिये ले साथ में इक नारायण॥
पहुंचे जापान तो मालूम हुआ यह फौरन।
कोई उत्सव नहीं वाँ होगा कोई है कारन॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२०५॥

जिस जगह राम, उसी *जा को अयोध्या मानो।
जिस समय सूर्य, उसी वक़्त को दिन पहचानो॥

---

*स्थान।

राम अब आया यहां, इस ही को उत्सव जानों ।
इनके उपदेश से लो लाभ मिरे जापानों ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०६॥

जिस जगह सूर्य हो उस जा पै अन्धेरा कैसा ? ।
देखिये राम का उपदेश जहाज़ों पै हुआ ॥
हांगकांग पोर्ट में एक हफ्ते तलक रहना पड़ा ।
गुरु भक्ती पै बड़ा आपने उपदेश दिया ॥
रामतीरथ जी महाराम का है जन्म-दिन आज ॥२०७॥

जाते जापान को सिक्खों के मिले गुरुद्वारे ।
राम के दर्शनों को आते वहाँ के प्यारे ॥
करके सतसंग जो छिन मात्र में कितने तारे ।
फूले अंग अपने समाते नहीं प्यारे सारे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०८॥

राम पूरन से मिले जो के वहां पढ़ते थे ।
इन्डो जापान क्लब में दिए लेक्चर पहले ॥
टोकियो कालेज में फिर आप के लेक्चर्ज़ हुए ।
सारे जापान में फिर घूमे बड़ी इ़ज़्ज़त से ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०९॥

कामयाबी के जो भेदों पे हुए वां लेक्चर ।
खुल गई अँखड़ियां जापानकी जिन को सुनकर ॥
लिक्चर यह गीता बने, करली मुहिम इन्होंने सर ।
पूरबी ज्योति के अब बन गए ये पायोनियर ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१०॥

राम अमरीका को जापान से फिर चल ही दिया।
और नारायण को फिर स्वामी बना कर भेजा॥
हाँग कांग आदि जंजीरों में और जाकर लंका।
दिए लेक्चर गए लन्डन, बरे-अफरीका॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२११॥

गए जिस *शिप में अफरीका को थे जापान से ये।
केप्टिन उसका था कुर्बान हंसी पर इनके॥
बाद रोने के हंसी और खुशी यों होवे।
जैसे बरसात के पश्चात में धुप अच्छी लगे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२१२॥

कई सौ जर्मनी भी जाते थे अमरीका को।
सीखली उनकी जुबाँ थोड़े ही दिनमें देखो॥
सातवें दिन दिया जर्मन में लेक्चर उनको।
अक्ल और हाफिज़ा उनका था ग़ज़ब को अहो॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२१३॥

सैर जापान की कर देते उपदेश चले।
छत्र सरकस के सहित राम अम्रीका पहुँचे॥
अम्रीका में ज्यों ही उतरे यों ही कुछ लोग मिले।
एक सज्जन ने ही पास आके कहा यों उनसे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२१४॥

कैश बैग आपका किस जा पे, कहाँ है असबाब ?।
"राम आज़ाद है, असबाब से" ये ही है जवाब॥

---

*आवाज।

कोई चिट्ठी है ? यहाँ आप के हैं क्या-अहबाब।
राम सुन कर हँसे इस बात को और बोले शिताब॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१५॥

राम जब करता तहे-दिल से है सृष्टि को पियार।
सृष्टि भी करती है तब राम को प्यार और दुलार॥
फिर तो अहबाब हैं सब कोई नहीं है अग़यार।
राम है सब में रमा, राम की हर जा दरकार॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१६॥

पूँछा फिर कैसे मिटाओगे यहाँ भूँक की ताप।
*डालरी है यह ज़मीं बेज़री इस जा है पाप॥
भूँक का †राम न है राम, न ज़र ले बसे नाप।
राम को फ़िक्र हो किस बात की बतलाएं फिर आप॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१७॥

राम के लेने को लोग इतने में वाँ आ पहुँचे।
पढ़के ये राम की बातें किसी अख़बार से वे॥
छपती जाती थीं टिलीफ़ून के द्वारा सुनके।
राम तब जाके किसी लेडी के घर पर ठैरे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१८॥

उसही के घर पे लगे लोग बराबर आने।
और लेक्चर भी शबो रोज़ यहाँ होने लगे॥
कई दिन तक रहे दिन रात बराबर सोते।
बाद को राम जी फिर सैर को करने निकले॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१९॥

---

*Land of dollers अर्थात डालरों की भूमि †अधीन।

फिर कई रोज़ बराबर वहाँ वह घूमा किये।
मार्ग में जो मिले उपदेश उन्हें देते रहे॥
कुछ दिनों तलक फिर समाधि में आकर बैठे।
फिर तो पबलिक हि में लेक्चर्ज़ को वह देने लगे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२२०॥

ख़ुत्रे सर्कस में दिया राम ने लेक्चर अपना।
जिसको कह सकते हैं हम पब्लिक का लेक्चर पहला॥
रात दिन में कोई दस पन्द्रह लेक्चर होना।
साफ बतलाता है क्या शौक़ था औ जोश था क्या॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२२१॥

हरमिटिक *ब्रादरहुड या साधुओं की इक संगत।
हुई क़ायम जहाँ रोज़ाना हों उपदेश ये सत॥
इसही से राम के उपदेश मिले हमको बहुत।
इस से उम्मीद है फिर जग में ये लावे जुग सत॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२२२॥

†फाल्टलेस टाऊन बनाया था इन्हीं लोगों ने।
जिसमें मैजिस्ट्रेट, पुलिस और न मयख़ाने थे॥
अब न मालूम कि क़ायम है या वह जाता रहा।
शर्त थी यह ही निकम्मा न वहाँ कोई रहे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२२३॥

राम ने स्वामि शिवगुण को लिखा और मुझसे कहा।
करो वेदान्त की एक कालोनी क़ायम इस जा।

---

*Hermetic Brotherhood. †Faultless town.

और संसार में फिर लाओ सतयुग इस से।
यानी प्रचार हो सत शान्ति और आनन्द का ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२२४॥

आप अम्रीका में एकान्त जो सेवन करते।
तीन तिन मीलों की झीलों को तय कर करके ॥
तैरते कूदते और चढ़ते उतरते हुए।
आ पहुँचते वहाँ जिज्ञासु जो होते सच्चे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२२५॥

अपने लेक्चर की नहीं लेते थे कोई फ़ीस ज़रा।
कहते थे हमको नहीं ज़र की है मुतलक परवा ॥
लेक्चरों में कोई इनके न टिकट लगता था।
देख के इसको अचंभा भी वहाँ होता था बड़ा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२२६॥

लेक्चरों से वहां पड़ती थी अजब दिल पै चोट।
आप की जेब में रख देते थे लोग अक्सर नोट ॥
झाड़ देते थे मगर आप वहाँ अपना कोट।
नोटों के बीनने में लोग करें नोच खसोट ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२२७॥

एक सज्जन ने कहा आप यह क्यों लेते नहीं।
बोले हमको नहीं परवाह है रुपए की कहीं ॥
आप गर हमको इजाज़त दें तो हम ले लें वहीं।
और सोसाइटी क़ायम करें हम एक यहीं ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२२८॥

हिन्द के तुलबा को इम्दाद मिले जिस ही से।
जो यहाँ आते हैं तालीम को हासिल करने ॥
राम ने दे दी इजाज़त तब ही तो खोले गए।
इन्डो अफ्रीकन सोसायटीज़ के सत्संग बड़े ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२२९॥

*इन्ट्रोड्यूस ये करती हैं वहाँ पब्लिक में।
उनको जो हिन्द से उस देश में पढने जावें ॥
यही वेदान्त है अमली कि जो कुछ काम करें।
कर्म निष्काम हो, यानी नहीं फल को चाहें ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३०॥

अमली वेदान्त कहो या कहो साधारण धर्म्म।
पाथ कामन कहो उस ही को बिला खौफो शर्म ॥
किया प्रचार अमरीका में बताया यह मर्म।
"मैं ही एक सत्य हूं" जाहिरमें हूं ख़्वाह नर्मो गर्म ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३१॥

काम करते हुए तुम आगे बढ़ो, ठैरो नहीं।
प्रेम से त्यागो "अलग" होने के भावों को वहीं ॥
कसूरत-वहदत और जिलवतो-खिलवत है यहीं।
यह ही वेदान्त है अमली, चहे तुम समझो कहीं ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३२॥

सैकड़ों पब्लिक लेक्चर्ज और उपदेश दिये।
दूर जिससे हुए कितनों के शकूक और शुबहे ॥

---

*Introduce.

गाड़ वेदान्त का झण्डा दिया तीरथ जी ने।
"ओ३म् ॐम ओम" की ध्वनि होती है हर जानिब से ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३३॥

प्रेसीडेन्ट वाँ की रिपब्लिकके जो रूजविल्ट ही थे।
राम की कीर्ति सुन राम से मिलने आये ॥
बर्फ की देखा पहाडी पर जमे हैं बैठे।
बात की इनसे तो प्रसन्न हो कुछ देने लगे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३४॥

ज़र ज़मीं दोनों वह देते थे मगर था इनकार ॥
गो शाहन्शाह की जानिब से बहुत था इसरार ॥
बोले यों, राम के कुल पृथ्वी क्या सारा संसार।
राम ही का है, तू क्या देता है मत कर तकरार ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३५॥

राजों महराजों ने जो पाया है राम हि ने दिया।
मैं ही ने रात अन्धेरी दिवस उजियाला किया ॥
चाँद और सूरज ने है राम से प्रकाश लिया।
ज़िन्दगी राम से लेकर के जो ज़िन्दा है जिया ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३६॥

तब ये दरख्वास्त की हों आप हमारे मेहमान।
जब तलक आप हैं इस देशमें ऐ जान की जान ॥
शाही मेहमान बने, राम ने दरख्वास्त ली मान।
घूमे उस देश में फिर राम जी बा इज़्ज़ो शान ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३७॥

कच्चा दूध और फलो फूल वहाँ खाते रहे।
साल भर इस तरह जब खाते और पीते बीते॥
तब हो बीमार पड़े और लगे तब खाने।
उबली तर्कारी और फल फूल और दूध औटाके।
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३८॥

याँ भी खाते थे महाराज जी अब थोड़ा ही।
दूध बेशक वह पिया करते थे याँ खोल के जी॥
और पिलाते थे औरों को भी जब गृहस्थी थे।
जी के दलिए के आसन को थी रुच इनकी बड़ी॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२३९॥

कुछ दिनों तक रहे यह *शास्ता स्प्रिंग के पास।
†नैप के ही रहे मेहमान कभी हों न उदास॥
आप मेहमान रहे इनके बराबर छै मास।
‡इवोल्यूशन की किताबों का किया याँ अभ्यास॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२४०॥

§सैन फ्रांसिस्को में ये ¶हिल्लर के यहाँ थे मेहमान।
हिन्दू ‖टेम्पिल है जहां हिन्दूओं का एक मकान॥
⁕कैलीफोर्निया में यह है एक मुबारक अस्थान।
है जहाँ शान्त्याश्रम बड़ा आलीशान॥
रामतीरथ जी महाराजका है जन्म-दिन आज ॥२४१॥

आपने लिक्खा अमरीका से इक प्यारे को।
नागिनें याँ हैं स्फ़ेद, इनसे बचो तो आओ॥

---

*Shasta spring. †Dr. Knapp. ‡Evolution. §San Francisco. ¶Dr. Albert Hiller. ‖Hindu Temple. ⁕California.

एक लेडी ने कहा मुझको "मिसज़ राम" कहो।
राम की दृष्टि में मिस्टर और मिसिज़ कुछ भी न हो॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२४२॥

अपनी प्रशंसा के जो पत्र थे अब ये पाते।
उनको "जय गंगा जी" कह दरिया में फेंक आते॥
"ओम उम ओं" का राग ऐसे मज़े से गाते।
सुन के इस राग को सब ही के दिल खिंच जाते॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म दिन आज ॥२४३॥

मिसज़ *वेल्मैन बनीं सूर्यानन्द यही सुन कर।
डाक्टर †इश्टील बने नारदस्वामी यह सुना लेक्चर॥
अपने जन्मोत्सव पर जब उनकी अवस्था सत्तर।
रहनी-सहनी ने किया राम की कितनो पे असर॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२४४॥

नास्तिक लेडी बहस करने को इक वां आई।
इनको देखा कि समाधी में हैं तो बैठ गई॥
बैठी कुछ देर तो फिर दिल की हालत बदली।
शक शुभे दूर हुए, दिल की हो गई शुद्धी॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२४५॥

एक भाषण में किया ‡आईडियल और §रियल।
दर्शनों का झगड़ा है दम में फ़ैसल॥
और भी कितने ही लेक्चर हुए ऐसे अफ़ज़ल।
जिनसे अम्रीका में इक पड़ गई देखो हल चल॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२४६॥

---

*Mrs. Wellman. †Dr. Steal. ‡Ideal. §Real.

यां की अट्ठारा युनीवर्सिटियों ने मिल कर के ।
रामको डिग्री "*एल एल डी" की नज़र की सबने ॥
जिस को इन्कार थैन्क्स दे और यों बोले ।
"स्वामी" और एम० ए० दो कलंक हैं आगे पीछे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२४७॥

तीसरा कलंक एल. एल. डी का कहाँ रक्खे राम ।
वह तो आज़ाद है हर कलंक से और है निष्काम ॥
बादा-वैहदत से वह सर्शार है अब आठों याम ।
और रवाँ दरिया सा है जिसको नहीं रोको थाम ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२४८॥

अब तो अद्वैत के सिद्धाँत की इक धूम मची ।
देख के रहनी वो सहनी ये ही कथनी करनी ॥
लोग कहने लगे हैं ज़िन्दा मसीह राम ही जी ।
राम के भाषणों से दूर हो सब बीमारी ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२४९॥

बाद दो साल के अम्रीका से फिर घर लौटे ।
योरुप इङ्गलैण्ड और अफरीका में बोलते हुए ॥
सैन्ट लूई के मेले के यह ही हीरो थे ।
जाबज़ा लेक्चरों को देते हुए घर पहुँचे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२५०॥

जो यूरुप अम्रीका और जापानमें लिक्चर इनका ।
केवल अङ्गरेजी की भाषा में होता रहता ॥

---

*LL. D.

*कैहरो जब पहुँचे तब फ़ारसी भाषा में हुआ।
कायरों की जो मसजिद है वहीं लेकचर दिया॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२५१॥

याँके पाशा ने प्रीसाइड किया जलसे को।
देखो कुरआन में वेदान्त दिखाया अब तो॥
जो "अलिफ लाम औ मिम देखते कुरआँ में हो।
ओम् ही का है यह इक रूप अगर तुम समझो॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२५२॥

लाम बन जाता है पेश अरबी के "अल" में हो जो।
पेश तो वाओ का अपभ्रन्श है "ओम्" कहो॥
लिक्खो "अब्द-अल-समद,, "अब्दुस्समद उसहीको पढ़ो।
लाम यों पेश में बदले है जरा देखो तो॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२५३॥

मन अरफ़ा नफस हु फ़क़द अरफ़ा रब्बे हु।
आया, कुरआन में है अर्थ है ये ही इसका॥
जिसने पहचान लिया अपने को रब को जाना।
खुद शिनासी ही ज़रिया है खुदा शनासी का॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२५४॥

राम ने तार दिया स्वामी शिवगण को ये।
बम्बई आठ दिसम्बर को हैं वापिस आते॥
स्वामी जीं पहुँच गये बम्बई लेने के लिये।
राम जी मथुरा तलक साथ में आये इनके॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२५५॥

---

*Cairo.

मथुरा के शान्त्याश्रम में आकर ठहरे।
लोग मिलने के लिये राम को वाँ आते थे॥
मेला सा वाँ पे लगा है रहता जब तक वो रहे।
मुझ को फिर राम-दर्शन वहीं जाने से हुए॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२५६॥

राम शिष्यगण को अमेरीका से खत लिखते थे।
अपने प्रोग्रामों की राम इनको खबर देते थे॥
और अमरीका में साधारण धर्म के पर्चे।
राम जीने ही दिये सब को बहुत खुश हो के॥
रामतीरथ जी महाराम का है जन्म-दिन आज॥२५७॥

लेडी विलमैन बनीं स्वामिन श्री सूर्यानन्द।
राम की आज्ञा या हुकुम के हो के पावन्द॥
मथुरा के शान्त्याश्रम में ठैरीं दिन चन्द।
*प्रैक्टीकल विज़डम अखबार निकल होगया बन्द॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२५८॥

राम के ग्राम जन्म भूमि में फिर वह विलमैन।
नंगे पैरों गई दर्शन के लिये हो बेचैन॥
इनके मन्दिर को जो देखा तो खुली दिलकी नैन।
समझे इस रम्ज़ को गर प्रेम की हो सैन॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२५९॥

राम से मथुरा में इक प्यारे ने इस तौर कहा।
कीजे क़ायम नई सौसायटी या एक सभा॥

---

*Practical wisdom.

राम ने प्रेम के जज़बे से यों उत्तर में कहा ।
राम की सब ही सोसायटी हैं वह प्यारा सबका ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६०॥

हाथ फैला के और आँखों भरे आंसुओं को ।
इस तरह बोले कि "हिन्दू वा मुसलमाँ कोई हो ॥
"सिख हो, पार्सी हो, आर्य ईसाई कहो ।
"अपने ही आप हैं, भारत से पले हैं वह जो ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६१॥

"राम उनका है, यह सब लोगों से कह दो जा ।
"अपने बाहर वह किसी को भी नहीं है समझा ॥
"वह तो दुनिया पे करे प्रेम और सुख की वर्षा ।
"वह करेगा उसे विशकम जो कहे उनको बुरा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६२॥

"मैं शहंशाह हूँ और तख्त मिरा तेरा दिल ।
"मेरी आवाज़ है आवाज़ तिरी पे शामिल ! ॥
"राम का शिर है तिरा शिर तू जो काटे गाफ़िल ।
"शिर हज़ारों हों पैदा तुझे क्या जायेगा मिल ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६३॥

राम फिर मथुरा से पुष्कर को गये तप करने ।
वाँ से फिर यत्न पे लिख लेख हिमालय पे गये ॥
कुछ दिनों तक रहे फिर घूम के लेक्चर देते ।
उन्निस सौ पाँच के फिर अन्त में तप करने लगे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६४॥

उनका सिद्धांत था एकान्त में तप को करना।
यह इनर्जी को या शक्ति को है दिल में भरना॥
काम गर करते हो तो तप से न हरगिज़ डरना।
तब हो औरों की बिथा काम तुम्हार हरना॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६५॥

उत्तराखण्ड में, फिर आप गये तप करने।
व्यासाश्रम में "बी" बन के वह तप करते रहे॥
और एकान्त में फिर लूटे मज़े आनन्द के।
लिये उपदेश ये कुद्रत के हर इक ज़र्रे से॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६६॥

चार छे मास ये जाड़ों के उसी बन में रहे।
भाष्य पातजंली इस अर्से में वह देख गये॥
साम वेद और निरुक्त आपने यों ही तो पढ़े।
पढ़ने का शौक मिरे राम थे ज़्यादा रखते॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६७॥

जब थे अम्रीका में तब ही तो *इवोल्यूशन का।
आपने करके मुताला लिखा सारांश सदा॥
आप कहते थे कि कुल सृष्टी है कालिज मेरा।
एक इक ज़र्रे से उपदेशो-सबक हूँ लेता॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६८॥

सन था उन्नीस सौ छे फ़र्वरी स्वामी जी ने।
व्यासाश्रम दिया छोड़ और आगे को बढ़े॥

---

*Evolution.

शिमलासू बाग़में "टेहरी के वह, पहले ठैरे।
फिर वह वासिष्ट के आश्रम में जाकर पहुंचे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२६९॥

लो महाराजा टेहरी ने वहाँ रहने का।
कर दिया आप के प्रबन्ध वहाँ पर अपना॥
पहला प्रबन्ध जो था काली कमली वाला।
वो गया छूट रसोइयाँ तो मगर वह ही रहा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७०॥

देव संयोग से जो अन्न वहाँ आता था।
वह कुछ ऐसा था के जल्दी से नहीं पचता था॥
स्वामी जी पड़ गये बीमार तब उसको छोड़ा।
कुछ दिनो दूध पे ही आपने निर्वाह किया।
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७१॥

छोड़ वासिष्ट के आश्रम को नीचे आये।
सिमलासु बाग़ में गंगा के तट पे ठैरे॥
एक कोठी में लगे अब तो यहां पर रहने।
अब तो लेने लगे खिलवत में जिलवत के मज़े॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७२॥

इन दिनों राम ने पूरण से औ नारायण से।
यह कहा राम न अब बोले न अब कुछ लिक्खे॥
अपने पैरों पे खड़े होजिये अब तो प्यारे।
और पत्रों में भी कुछ ऐसे ही मज़मूँ निकले॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७३॥

राम का जिस्म बस अब बे हिस्सो हर्कत होगा।
राम आराम करे अब न क़लम छूएगा॥
आख़िरी लेख जो लिखा है ख़ुदमस्ती का।
जिसके पढ़ने से यह आता है मस्ती का मज़ा॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७४॥

सन था उन्नीस सौ छे और सम्बत त्रेसठ।
दिन दिवाली का जो आया, गये गंगा के तट॥
लगे अस्नान जो करने, थे वहाँ पर झट पट।
राम लुढ़के जो गया नीचे से इक पत्थर हट॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७५॥

था रसोइया जो किनारे पे बहुत चिल्लाया।
पर मदद को नहीं उस वक्त पे कोई आया॥
ढूंढने पर भी नहीं बाग में, कोई पाया।
सब थे महाराजा की स्वागत में यह देखो माया॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७६॥

राम ने पहले तो पानी से निकलना चाहा।
जब निकल वह न सके, तब ही तो गोता मारा॥
और आसन को जमा धारा के ऊपर फिर आ।
"ओम्" कहते हुए लो देखो रसोइये ने सुना॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७७॥

सच है जो ऐसे समय में भी नहीं खोते हैं होश।
सत्य संकल्प है उन ही का और सच्चा है जोश॥

वह समझता है कि यह तन मन बुद्धी है कोश।
हम तो हैं आत्मा, है जोकि अमर और निर्दोश॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७८॥

मौत से वह नहीं डरते हैं, समझते हैं इसे।
भ्रम या धोका, इसी से हैं वो ऐसे कहते॥
"मौत को मौत न आवे जो मिरा क़स्द करे।"
"मैं अजर और अमर, कौन मुझे मार सके"॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२७९॥

"है कहां वायु कि जो मुझको उड़ा सकती है।
है कहां अग्नि कि जो मुझको जला सकती है।
है कहां जल की धारा जो बहा सकती है।
है कहां पृथ्वी ज़ो मुझको दबा सकती है"॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२८०॥

मैं न हूं जिस्म न हूं इस्म न बुद्धी न प्राण।
मैं तो वह आत्मा हूं जान की भी जो है जान॥
फिर मुझे मौत कहां? मेरी तो है अद्भुत शान।
मिट्टी मिट्टी में मिले मेरा तो आतम अस्थान॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२८१॥

राम का तन गया बैह गंगा की मझधारा में।
तोपे फिर दगने लगीं लोग सबही इनकी सुनें॥
जो महाराजा के स्वागत में गो ज़ाहिर में दगें।
मोर्निङ्ग गन्स इन्हें राम की हम क्यों न कहें॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२८२॥

---

*Mourning guns.

सच है मौत और ज़िन्दगी दोनों तो भ्रम ।
रञ्जो राहत हैं मिलें दोनों से कैसे बाहम ॥
एक ही तौर से बेलकम यहां और यां मातम ।
कैसा मातम हो, अजी स्वर्ग में है ये विलकम ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२८३॥

देवताओं को खुशी हमको यहां रञ्जो-महन ।
इस ही से कहते हैं दुःख सुख हैं बस इक जान दो तन ॥
दुःख करें किस लिए है राम तो आनन्द का घन ।
हम भी आनन्द हों यही तो है उनका पूजन ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२८४॥

मौत तू करदे चाहे जिस्म के टुकड़े टुकड़े ।
राम मरता है नहीं, राम रमा हर ज़र्रे ॥
जितने अजसाम और अजराम हैं सब राम ही के ।
बीज को देख लो तुम डाल औ पत्ते पत्ते ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२८५॥

तब ही देहान्त के पश्चात मिला इक पर्चा ।
जिसमें इस तौर से लिखा हुआ सबने देखा ॥
"ब्रह्मा विष्णु औ शिव इन्द्र औ भारत गंगा ॥
"वे .क ऐ मौत उड़ा दे (चाहे) ये जिस्म मिरा ॥"
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२८६॥

"और अजसाम हों कुछ काम नहीं हैं मेरे लिए ॥"
"चाँद की किरणों जो चांदी की तारें पहिनें ॥"

"चैन से काट मैं सक्ता हूं। पहाड़ी नाले।"
"और नदियों के भी भेसों में फिरूंगा गाते॥"
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२८७॥

"वैहरे-मव्वाज में लहरा फिरूं (आठो याम)।
"बादे-खुश खराम हूं और हूँ मैं ही मस्ताने गाम॥
"मेरी यह सूरते-सैलानी रवानी में (मुदाम)।
"मैं पहाड़ों से इसी रूप में उतरा हूं (दवाम)॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२८८॥

किया पौदों को जो मुर्झाय थे मैं ने ताज़ा।
बुलबुलों को यह हँसा गुल को रुलाया कैसा॥
खार खटा दर को यह आंसू है किसी का पोंछा।
और घूंघट भी किसी का है उड़ा मैं ने दिया॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२८९॥

सोतों को मैं ने जगा, छेड़ा इसे और उसको॥
छेड़ के तुझको मैं बह गया, मैं बह गया, ओहो ओहो॥
साथ कुछ रक्खा न हाथ आया किसी के, देखो।"
राम हर रोम में अब रम गया, देखो अब तो॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२९०॥

राम था पहले इक जिस्म में मददगार मगर।
अब वह मुल्क है और हर जिस्ममें है जल्वागर॥
जिसके हों आँख वह देखे यह मुबारक मन्ज़र।
और प्रकाश करे औरों पे खुश हो हो कर॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज॥२९१॥

दिल में जब राम हो बाहर भी नज़र वह ही पड़े।
अब कि दिल में नहीं पाप तो बाहर कैसे॥
स्वर्ग हो दुनियां अभी स्वर्ग जो दिल में देखे।
राम थे इसके नमूना चहे जो देखे इसे॥
रामतीरथ जी महराज का है जन्म दिन आज ॥२६२॥

कंचनी रहती थीं अनार कली में प्यारे।
रोज़ कालिज को उसी राह से आते जाते॥
देखते राम थे पर वह न समझते यह थे।
एक दिन आप ने लिकचर में सुना तब समझे॥
रामतीरथ जी महराज का है जन्म-दिन आज ॥२६३॥

दिल में जब पाप न हो, कैसे निगः हो पापी।
दिल में जब राम बसे, देख पड़े बाहर भी॥
दिल में जब प्रेम हो, तो सर्प औ सिंहादि सब ही।
प्रेम करते हैं प्रेमी से, नहीं शक है ज़री॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६४॥

राम जब पढ़ते थे बी. ए. में तो इक कोठरी में।
सर्प दो रहते थे जो साथ में इनके खेले॥
राम के पैरों पै लोटें और बच्चा दूध पिये।
भाई ने इनके सुना जब यह, तो अज़हद वह डरे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६५॥

साथ में इनके जो पढते थे, कहा फिर उनसे।
इनको मजबूर करो छोड दे वह कोठरी वे॥

बोर्डिंग हाउस जो कायस्थों का है इक वाँ से ।
साथी कुछ आये और साथ अपने वहां ले ही गए॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६६॥

जब ऋषि केश में तप करते थे, तब इक दिनका ॥
माजरा यह सुनो, इक सर्प वहाँ पर निकला ॥
ले उठा उसको गले से ही लगा अपने लिया ।
तू कहाँ जाता है प्यारे का मिरे है प्यारा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६७॥

शेर और रीछ भी कितने ही इन्हें मिलते थे ।
बन में जब प्रेम की दृष्टि पड़े इनकी उन पे ॥
मूज़ीपन दुष्टता सब छोड दें इनके आगे ।
प्रेम की बिजली यह ही इसही को विद्युत कहिये ॥
रामतीरथ जी महराज का है जन्म-दिन आज ॥२६८॥

साफ जब दिल हो, करामात न हो क्या मानी ।
हैं ये कुद्रत के नियम, ऊंचे यह दैवी शक्ती ॥
राम को प्राप्त थी यह और थी उनकी कथनी ।
ये हर इकके लिये मुमकिन हैं, यह राह जिसने हो ली ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२६९॥

राम से पूछा कि क्या राह है, बतलाओ मुझे ।
बोले बस यह है कि "मन अपनेको वसमें कर ले ॥
जिसने मन जीता, जगत को नहीं कैसे जीते ।
देवी और देवता खिद्मत को न हों कैसे खड़े ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३००॥

अब तिरे काबू में मन इन्द्री क़ाबू होवे।
इन्द्रियाँ क़ाबू हों तब घर के चलें पीछे तिरे॥
घर के जब पीछे चलें, तब ही तो बाहर वाले।
और नगर प्रान्त क्या कुल देश तिरे पीछे चले॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०१॥

फिर तो इक देश क्या संसार तेरा गावे गीत॥
देवी और देवता क्या सब ही बने तेरे मीत॥
गर यक़ीं तुझको न हो आज़मा तब कर प्रतीत।
मन्त्र है यह ही जो मन जीते जगत को ले जीत॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०२॥

तब ही तो राम यह कहता है, सुन ले यह प्यारे।
हवा अटखेलियां करती है मिरे सैनों से॥
"मौत पर कोड़ा मिरा" ज़िन्दगी दम मेरा भरे।
मौत को मौत न आजावे अगर क़स्द मेरा करे॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०३॥

बातों बातों में कहा राम से मैंने यों ही।
मतला ग़मगीन है "[illegible]" दर्ज़ [illegible]॥
पाँच छे दिन से बराबर थी ये बादल बूँदी।
इससे लेक्चर की जगह आप की हमने बदली॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२०४॥

राम अब आ गया कोई नहीं ग़मगीन रहे।
मतले से भी कहो [illegible] तो और खुश होवे॥

शब्द ये निकले जूं ही राम के मुख से प्यारे।
सूर्य आया निकल और अब्र हटा फट कर के ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३०५॥

राम बैठा है पहाड़ी पै और है यह कहता।
राम फिरने नहीं जावेगा अरी सुन वर्षा ?
बादल इक आता है और राम को वह दे बैठला।
राम के हुक्म से वायू करे फौरन ही सफ़ा ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३०६॥

ओले पड़ते थे कहा राम ने "थम", थम वह गये।
हृदय हो शुद्ध तो वाक्य उसका न सिद्ध क्यों होवे ॥
राम के हुक्म के पाबन्द अनासिर सारे।
तब ही तो जल और वायू हैं हुकुम पर चलते ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३०७॥

जब तलक हिन्द न सर्सब्ज़ हो, यह तन न गिरे।
दैव संजोग से गर गिर पड़े तो हड्डी पे ॥
बाण बन द्वैत को, निश्वर को, यह संघार करे।
द्वैत जब नाश हो, भारत तब ही सर्सब्ज़ होवे ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३०८॥

ग़ैरियत दूर हो और एका हो सब लोगों में।
सारे संसार को तब देश हम अपना जानें ॥
सत्य ही धर्म हो और प्रेम की बैहें नहरें।
"बन भला कर भला" हम कर्म इसी को कहवें ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३०९॥

कर्म निष्काम हो मेहनत से कभी भागें नहीं।
सत्य संकल्प हो, शक दूर हो विश्वास यही॥
वह ही वेदान्त है, अमली वहे यह होवे कहीं।
जहाँ वेदान्त है वाँ राम है आराम वहीं॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१०॥

राम का यह ही है उद्देशो—मिशन या पैग़ाम।
स्वार्थ का त्याग हो और प्रेम से सब होवें काम॥
दूर ख़ुदग़रज़ी को कर काम यह ही है निष्काम।
और ख़ुदगरज़ी से कर काम का अपने अन्जाम॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२११॥

राम है कौन बताता है ख़ुद ही अपने को।
ले लो आईना और उसही में मुझ को देखो॥
अन्तर एकान्त में खामोशी की ताक़त समझो।
सूर्य में देखो मुझे ठीक तरह जानो तो॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१३॥

जिसने जाना मुझे, पैहचाना मुझे, उस का ही।
काम सब सिद्ध हुआ, शान्ती उसकी चेरी॥
वह तो आनन्द है, चेहरे पे चमक है कैसी।
जो "असल है" मेरा उसे देखो तो सही॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१४॥

कोई भी तू है, मुबारक है अगर आँखों से।
तेरे हट जाता है पर्दा कि मुझे देख सके॥

वह अगाह तीर्थ है जिस जा पे तिरा पाओं पड़े।
तेरी दृष्टी से सृष्टी बने नै स्वर्ग बने॥
रामतीरथजी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१४॥

ऋग्जा घर मेरा, तिरे दिल में धड़कता हूं मैं।
आँखों से देखूं, नाड़ी में फुड़कता हूं मैं॥
मुस्किरा फूलूँ मैं, बिजली में कड़कता हूं मैं।
चुप पहाड़ों में, और नद्यों में ढहलकता हूं मैं॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१५॥

ब्राह्मण औ स्वामी पन, सब ही को तुम दूर करो।
होवे जिन चीज़ों से कुछ भेद, उन्हें तुम फूँको॥
राम है साथ तिरे प्यारे तू चाहे हो जो।
मूर्ख पंडित हो चहे पापी पुण्यात्मा हो॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१६॥

तेरे अन्तर में मैं आ बैठा हूं, आ बैठा हूं।
जो पुराने हैं उन्हें अब तो लिये जाता हूं॥
योरुप अफ़्रीका औ भारत अम्रीका को झकोरता हूं।
यानी संसार में इक दौर नया लाता हूं॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१७॥

चलने वाले मिरे स्वपने का बस अब हो हुश्यार।
भेड की यह नहीं मैं मैं, यह है सिंह की ललकार॥
यह नहीं छाया है, निर्बल यह है आतम का विचार।
राम का हुक्म है, आज़ाद हो सारा संसार॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥२१८॥

बुद्ध ईसा और मुहम्मद की तरह पर प्यारे ।
राम तो अपने बनाता नहीं हरगिज़ चेले ॥
राम तो राम ही करता है प्रकट हर इक से ।
राम का यह ही है उद्देश हर एक बने ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३१९॥

राम कहता है कि इस तन को कुचल तुम डालो ।
इस व्यक्ती को हड़प करके मुझको पीलो ॥
और कर हज़म मिरे आप को तुम आप बनो ।
राम हर रोम से प्रकाश करे तब ही तो ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३२०॥

राम है तीर्थ जो इस तीर्थ में अस्नान करे ।
पाप मल दूर हो उसका, वह किसी से न डरे ॥
शान्ती करे प्रकाश और औरों का दुःख दर्द हरे ।
राम क्या बनना, हर इक रोम में राम उसके रमें ॥
रामतीरथ जी महाराज का है जन्म-दिन आज ॥३२१॥

पं० हरीश्चन्द्र वाजपेई के प्रबन्ध से विश्व प्रेस में छपी ।

स्वामी रामतीर्थ

[बनस्पति से]

स्वामी रामतीर्थ की असामयिक घटना अभी कल की बात है। इन के जल समाधि लेते ही सच तो यह है कि इस देश की बहुत-सी आशाओं पर पानी फिर गया और बहुत-सी अभिलाषाओं का खून हो गया, बहुत-सी लालसायें मन की मन ही में रह गईं और बहुत-सी उमंगें उभरते-उभरते बैठ गईं। इस में संदेह नहीं है कि कई बर्षों से हमारे पथ-आदर्शकों, नेताओं और गौरवास्पद गुरुजनों की यात्रा-मंडली अत्यंत त्वरित गति से परमधाम की ओर प्रस्थानित हो रही है। एक दुःख मुश्कल से अंत होने पर आता है कि अकस्मात् दूसरा उपस्थित हो जाता है। दुःख और शोक प्रकट करने के लिये न आँखों में आँसू बाक़ी रहे हैं और न लेखनी और जिह्वा की नोक में बोलने की सामर्थ्य। विपत्ति पर विपत्ति और शोक पर शोक, फिर एक से एक बढ़कर। अंततः मनुष्य है, कहाँ तक धैर्य के साथ सहन करे। शब्द भी इस अवसर पर ऐसे क्षीण और शक्तिहीन दिखाई देते हैं कि उन से काम लेना एक प्रकार अपने शोक-संताप की गुरुता और गंभीरता को कम करना है। फलतः ईश्वर की इच्छा के सम्मुख शिर झुका लेने के अतिरिक्त और कोई बश नहीं।

स्वामी रामतीर्थ उन पवित्र आत्माओं में से एक थे कि जिन से बहुत-से पुरुषों को आत्मिक लाभ पहुँचा है। यदि इन की आयु कुछ दिन और साथ देती, तो एक बहुत बड़े समुदाय का आंतरिक अंधकार बहुत कुछ दूर हो जाता।

संयुक्तप्रदेश में, जहाँ उनके जीवन का अंतिम समय अतिवाहित हुआ है, थोड़े दिनों उनके प्रवास-प्रतिवास से सौभाग्यशाली हुआ। उनके जीवन का बहुत बड़ा भाग पंजाब में बीता है। संभव है वह बड़ा भाग सर्व-साधारण की दृष्टियों में प्रकट रूप में अधिक मनोरंजक और अर्थपूर्ण न हो, परंतु बुद्धिमान् और प्रतिभाशाली व्यक्ति आरंभिक बातों से पूर्व-पक्ष और उत्तर-पक्ष करके बड़ी-बड़ी गुत्थियाँ सुलझा लिया करते हैं। आरंभ ही से मनुष्य का सांगोपांग पूर्ण होना (जैसा कि मनुष्य पूर्ण हो सकता है) कल्पना योग्य नहीं है, परंतु विकास और पूर्णता के लक्षण सहृदय और सूक्ष्मदर्शी व्यक्तियों की जानकारी के लिये अत्यंत आत्मानंद और मनस्तुष्टि का कारण हुआ करते हैं। यथा—

साले कि निकोस्त अज़ बहारश पैदास्त।

अर्थ—उत्तम संवत्सर के लक्षण उसके आरंभ ही में प्रकट हो जाते हैं।

स्वामी रामतीर्थजी का जीवन चरित्र लिखने की, संभव है, विशेष तैयारियाँ हो रही हों, परंतु इस अवसर पर उनके आरंभिक जीवन के संबंध में कुछ दृश्य लिपिबद्ध करना कदाचित निरर्थक न होगा।

लेखक का मृत महात्मा के साथ, जब कि वे विद्यार्थी थे, एक दीर्घ समय तक, एक साथ रहने का संयोग हुआ है। जिन दिनों वे फ़ोरमन मिशन कालेज लाहौर में प्रोफ़ेसर थे, उन दिनों भी प्रायः उनके दर्शन होते रहते थे। अब तक लेखक का यही खयाल है कि उस समय लेखक से जिस कोटि की बेतकल्लुफ़ी उनके साथ थी, कदाचित् ही लाहौर में उनकी किसी से हो। लेखक के साथ उनके संबंध मैत्री के थे। कुछ समय तक एक ही कमरे में रहने, एक साथ

खाने-पीने, उठने बैठने के कारण हर प्रकार की बातचीत करने का अधिक अवसर मिला करता था। इस मेल जोल और स्वभाव-समता और प्रमोद के कारण परस्पर एक प्रेम ही नहीं, बरन् एक आत्मिक संबंध होगया था। अनेक अवसरों पर, विशेष विश्वास होने के कारण, वह अपने मनो रहस्य भी प्रकट कर दिया करते थे और लेखक भी समयानुसार अपनी सम्मति प्रकट कर देने में आगा पीछा न किया करता था। लेखक के निजी सिद्धांत और धार्मिक संबंधों से वह भली भाँति परिचित थे, और इस कारण वह अपने सिद्धांत और अपने भविष्य कार्य-क्रम के प्रकट करने में कभी संकोच न करते थे। यह बात लेखक के स्वभाव और प्रकृति के विरुद्ध है कि वह पवित्रात्मा और सत्योपासक महानुभावों के सिद्धांतों और कार्य-प्रणालियों को सुनकर कटु आलोचना से काम ले, अथवा अनुचित और विरुद्ध सम्मति प्रकट करे। यह एक विशेष कारण था कि जिससे प्रेम का नाता नित नई उन्नति पर रहा।

गोसाईं-वंश में होने के कारण उन दिनों सब लोग उन्हें गोसाईंजी कहा करते थे। यों तो लेखक ने उन्हें पहले भी कई बार देखा होगा, परंतु जबसे उनका निवास लाहौर के कायस्थ बोर्डिंग हाउस में हुआ, तब से विशेष अनुराग का आरंभ समझना चाहिए। कायस्थ-महाशयों की उदारता के कारण यह बोर्डिंग हाउस उन दिनों केवल कायस्थ-विद्यार्थियों के लिये रक्षित न था, बरन् कभी-कभी इसमें ब्राह्मण और वैश्य आदि विद्यार्थियों की संख्या अधिक हुआ करती थी। आरंभ में गोसाईं जी ला० ज्वालाप्रसाद जी के साथ यहां पर निवास करने के लिये पधारे थे। उन दिनों लाला जी कदाचित् बी० ए० की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। बी०

ए० एल्-एल् बी० होने के पश्चात् एक दीर्घ काल से वे फ़ीरोज़पुर में वकालत करते हैं। गोसाईं जी इन्हें अपना प्रियजन समझते और गणित सिखाया करते थे। उस समय, यह ठीक स्मरण नहीं है कि, गोसाईं जी भी उन्हीं के साथ बी० ए०-परीक्षा की तैयारी कर रहे थे या क्या। लाला ज्वाला प्रसाद जी अपने विद्यार्थि-काल में भी अमीरी प्रकृति के पुरुष थे। विद्वानों की संरक्षकता के अतिरिक्त वे कवियों के भी कुछ कम आदरकर्ता न थे, और इस कारण एक आध कवि सदैव उनकी सेवा में उपस्थित ही रहा करता था। गोसाईं जी का निजी व्यय अति अल्प था और उसका भार संभवतः लाला जी के ही शिर था। लाला साहब गोसाईं जी के साथ इसी बोर्डिंग हाउस के ऊपर कमरे में रहा करते थे। यह ऊपर का कमरा उन दिनों कुछ जीर्ण दशा में था। इस की कुछ दीवारें दरक गई थीं, परतु तत्काल गिर जाने का भय कम था। एक दिन वर्षा वेग से हो रही थी और बिजली चमक रही थी। मेघ का गर्जन भी भयानक था। लाला जी गोसाईं जी के साथ प्राण-रक्षा के विचार से निचले कमरे में आकर भूमिष्ठ हुए। लेखक भी वहीं एक ओर विद्यमान था। इस अवसर पर लेखक को पहली बार यह बात विदित हुई कि गोसाईं जी चारपाई की अपेक्षा भी भूमि पर शयन करने को अधिक पसंद करते हैं। वे आराम के भी कम अभ्यासी थे। सवेरे लगभग चार बजे जगकर अध्ययन आरंभ कर देते थे। लाला जी का सुख शय्या से चौंक कर जगने के लिये तत्परता प्रकट करना और फिर सो जाना और गोसाईं जी का लगातार अत्यंत प्रेम के स्वर में अध्ययन के लिये उनसे आग्रह करना लेखक को सुगमता से नहीं भूल सकता।

लाहौर के कायस्थ बोर्डिंग हाउस में गोसाईं जी के पिता

बहुत कम और उनके गुरुजी प्रायः पधारा करते थे। गोसाईं जी ज़िला गुजराँवाला के एक गाँव के जिसका नाम संभवतः मुरालीवाला था, निवासी थे। उनके पिताजी का स्वभाव बहुत ही सादा था और वह केवल देवनागरी और संस्कृत जानते थे। लेखक को उनसे वार्तालाप का प्रायः अवसर मिला करता था। उन्हीं के द्वारा मालूम हुआ था कि उनके शिष्य बहुत दूर तक हैं, कहते थे कि कभी-कभी उनके पास बाग़िस्तान तक जाने का संयोग होता है। गोसाईंजी के कुलगुरु, जिन्हों ने यज्ञोपवीत-संस्कार कराया था, ब्राह्मण थे; परंतु वह कहा करते थे कि हमें जो कुछ आत्मोन्नति लाभ हुई है, वह धन्ना भगतजी से हुई है। उन्हीं को वह गुरुजी कहा करते थे। कुल की दृष्टि से कदाचित् यह (भगतधन्नाराम) अरोड़े थे और गुजराँवाला-नगर में रहा करते थे। गोसाईंजी उनके प्रति अतिशय श्रद्धा करते थे और कभी-कभी लेखक से उनकी सिद्धाई और चमत्कार की चर्चा किया करते थे। जिन दिनों का यह ज़िक्र है, उन दिनों गोसाईंजी के केवल एक पुत्र था। इस समय भगवद् कृपा से वह वयः प्राप्त होगा। लेखक ने उसे देखा है, चाहे अब कठिनता से पहचान सके। गोसाईंजी छुट्टी के दिनों में कुछ दिनों के लिये अपनी जन्मभूमि जाया करते थे। यद्यपि वह किसी दशा में गृहस्थी के कर्तव्यों से बेसुध न रहते थे, परंतु लेखक ने उनके भाषण और चित्त-वृत्ति से यह परिणाम निकाल लिया कि संभव है यह इन झगड़ों से बहुत जल्द छूट जायँ।

पंजाब युनिवर्सिटी की बी० ए० परीक्षा में गोसाईंजी प्रथम रहे थे, इसलिये उन्हें ६०) मासिक छात्रवृत्ति मिलगई थी। इस द्रव्य में से कुछ तो वह अपने निज के व्यय के लिये रख लिया करते और शेष घर भेज दिया करते या अवसर

अनुसार अपने गुरुजी की स्वल्प आवश्यकताओं के लिये भेंट कर दिया करते थे। गोसाईंजी को पुस्तकें मोल लेने में बहुत कुछ खर्च करना पड़ता था।

जिस साल बी० ए० की परीक्षा में गोसाईंजी ने पूर्ण सफलता प्राप्त की थी, कदाचित् उसी वर्ष पंजाब युनिवर्सिटी के लिये यह अनिवार्य था कि इँगलैंड जाने के लिये अपने किसी श्रेष्ठ विद्यार्थी को निर्वाचित करे। सफल अभिलाषी के लिये कदाचित् सौ पौंड वार्षिक छात्रवृत्ति सरकार की ओर से स्वीकृत थी। लेखक ने गोसाईंजी को विवश किया कि इसके लिये कुछ प्रयत्न करें। पहले उन्होंने इसके लिये आश्चर्य प्रकट किया और कई प्रकार की भीतरी-बाहरी कठिनाइयाँ दिखलाईं। किंतु काटने वाली युक्तियों ने उन्हें किञ्चित महत्त्व नहीं दिया। अंततः विवश होकर उन्होंने इधर उधर ध्यान दिया। पारिवारिक विरोध को उन्होंने शीघ्र अपने भविष्य कार्य-क्रम के प्रकाश से दूर कर दिया और नियमानुसार उसी छात्रवृत्ति के लिये अभिलाषियों के समूह में सम्मिलित होगए। जहाँ तक स्मरण है, गोसाईं जी के अतिरिक्त केवल एक अभिलाषी और था। मिस्टर बेल जो इन दिनों पंजाब के शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर हैं, उस समय गवर्नमेंट कालेज के प्रिंसिपल थे। गोसाईंजी की उक्त साहब महोदय सदैव प्रशंसा किया करते थे। उन्होंने इन्हें बहुत बड़ी आशा दिलाई थी। परंतु परिणाम आशा के अनुकूल नहीं हुआ। गोसाईंजी की योग्यता और अधिकारों की दृष्टि से यह परिणाम सर्वानुमोदित नहीं था, तो भी गोसाईंजी को इस अकृतकार्यता का तनिक भी खयाल नहीं हुआ, और न वह कभी उलाहने का एक शब्द जिह्वा पर लाए। इँगलैंड जाकर केवल गणित की विशेष शिक्षा की उन्हें रुचि थी।

सिविल सार्विस, बैरिस्टरी या किसी अन्य विभाग का वह नाम तक लेना नहीं चाहते थे। परिणाम आने से पहले इँगलैंड के निवास की भी चर्चा हुआ करती थी, जिसका वह यह संक्षिप्त उत्तर दे दिया करते थे कि वहाँ जाकर भी वर्तमान भोजन और पहनावे में परिवर्तन नहीं हो सकता।

एम० ए० की परीक्षा के लिये उन्होंने गणित का विषय चुन लिया था और उसी की ओर आरंभ से उनका चित्त जाता था। गवर्नमेंट कालेज लाहौर में अध्ययन के लिये वह नियत समयों पर जाया करते थे। इस अवसर में लाहौर के बहुत बड़े रईस स्वर्गवासी राय बहादुर मेलाराम जी के सुपुत्र राय रामसरनदास ने उन्हें अपना शिक्षक नियत कर लिया था। उनकी कोठी में एक विशाल अट्टालिका पर वह रहा करते थे। लेखक कभी-कभी वहाँ उनसे प्रातःकाल में मिलने जाया करता था। उस समय प्रायः वह एक प्रकार का व्यायाम किया करते थे जिसे उनके सिवाय लेखक ने और किसी को करते नहीं देखा। एक चारपाई को पट सीधी दीवार के सहारे खड़ी कर दिया करते थे। उसके बाद दोनों हाथों से दोनों ओर चौड़ाई से पकड़ जहाँ तक ऊपर ले जा सकते, ले जाते और इसी तरह नीचे ले आते थे। मुँह बंद करके शीघ्र शीघ्र इस व्यायाम को देर तक करते रहते थे। राय रामसरनदास जी के छोटे भाई ला० हरिकृष्णदास से भी जो पिछले दिनों पूर्ण युवावस्था में मृत्यु को प्राप्त हुए, गोसाईंजी को बड़ी प्रीति थी। एक दिन लेखक के साथ वह कोठी के बागीचे से आ रहे थे। मार्ग में ला० हरिकृष्ण अंगूर कुंज से अंगूर तोड़ कर आस्वादन कर रहे थे। गोसाईंजी ने पूछा, क्या हो रहा है। लालाजी ने उत्तर देने के स्थान पर गुच्छे उपस्थित कर दिये, जिससे प्रयोजन यह था कि आप

भी इसमें सम्मिलित हो जाइए।

गोसाईंजी का आहार केवल दूध कहना चाहिए। कभी कभी दिन में वह भोजन भी कर लिया करते थे। प्रायः निकट बैठकर भोजन करने का संयोग हुआ करता था। स्मरण नहीं है कि कभी उन्होंने पतले पतले दो फुलकों से अधिक भोजन किया हो। लगातार कई कई दिन दोनों समय वह केवल दूध पर संतोष करते थे। यदि लेखक कभी उन्हें मेवा आदि खाने में सम्मिलित होने के लिये विवश करता, तो मेरे सम्मान के लिये नाम-मात्र को कुछ खा पी लिया करते थे। औषधियाँ व्यवहार करते लेखक ने उन्हें कभी नहीं देखा। हाँ, जब कभी विरले उन्हें जुकाम की अधिक शिकायत हुआ करती थी, तो अनारकली के एक हिंदू कारखाने की एक आध सोडे की बोतल पी लिया करते थे। मांस-भक्षण को वह खुल्लम-खुल्ला महान् पाप कहा करते थे, और उसकी चर्चा से भी उन्हें घोर घृणा उत्पन्न हुआ करती थी। कहा करते थे कि यदि राह चलते इसकी कहीं से गंध भी आ जाय, तो मस्तिक देर तक व्याकुल रहता है। इसी तरह मादक द्रव्यों को भी वह हलाहल विष से उपमा दिया करते थे।

उनका पहरावा अत्यंत सादा था। गरमी और बरसात के दिनों में गजी की सादी धोती और कुरता पहनते थे और शिर नंगा रखते थे। हजामत भी पंजाबी ढंग की बनवाते थे। बाहर जाने के लिये साधारण मलमल का दुपटा बांध लिया करते थे। जहां तक इस समय स्मृति काम देती है, टोपी कभी उनके शिर पर देखने का संयोग नहीं हुआ। जाड़े की ऋतु केवल एक मोटी कशमीरी पट्टी के कोट में निर्वाह कर देते थे। रात के समय भी बहुत ही स्वल्प ओढ़ने-बिछौने का सामान हुआ करता था। विद्योपार्जन के पश्चात् वह

स्यालकोट के मिशन-कालेज में प्रोफेसर हो गए थे। कहते थे कि जाड़े भर में सिवाय एक धुस्से के और कोई गरम कपड़ा व्यवहार नहीं किया। लिहाफ़ का भी काम वही दे देता था। स्यालकोट-नगर के शिक्षित पुरुष और प्रत्येक संप्रदाय के हिंदू उनके पूरे अनुवर्ती थे। वहाँ विद्यार्थियों को यह सवेरे-शाम स्वयं ही वायु-सेवन कराया करते थे। और उन्हें योगाभ्यास के भी ढँग सिखाते थे।

अँगरेज़ी-ढँग के कपड़ों और जूतों से बराव (परहेज़) करते थे। एक दिन लेखक ने उन्हें संदिग्धावस्था में देखा। पूछने पर ज्ञात हुआ कि युनिवर्सिटी का वार्षिक उत्सव दो-एक दिन में होने वाला है। प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए उसमें सम्मिलित होना आवश्यक है। कहने लगे कि इस अवसर पर विलायती चोगा और बूट पहनने पड़ेंगे। यह बात अपनी प्रकृति के विरुद्ध है। कुछ देर तक तर्क के पश्चात् अंत में यह निश्चय हुआ कि यह दोनों चीज़ें कालेज ही में ज़रा देर के लिये किसी से माँग ली जायँ। अंत में इसी निश्चय के अनुसार काम हुआ। ऐनक वह हर समय लगाते थे।

स्यालकोट से लौट आने पर वह फ़ोरमैन मिशन कालेज में प्रोफ़ेसर हो गए थे। संभवतः बी० ए० की परीक्षा में वह इसी क़ालेज से सम्मिलित हुए थे। इन दिनों लाहौर में पानी की टंकी के निकट उन्होंने एक मकान ले लिया था, और स्त्री-पुत्रों को भी बुला लिया था। इंट्रेंस-परीक्षा के किसी गणित के परचे के वह परीक्षक थे जिसके लिये उन्हें कुछ द्रव्य मिला था। इससे उन्होंने बढ़िया लकड़ी का समान ख़रीद लिया था। परन्तु आनंद यह कि आप उसे बहुत कम व्यवहार करते थे। मकान के चौड़े कमरे में एक बड़ा सा

ताक था जिसकी कार्निस आगे को निकली हुई थी । उसपर उन्होंने एक कपड़े का टुकड़ा बिछा लिया था। आवश्यकतानुसार लिखने के लिये उससे मेज़ का काम लेते थे, और लगातार दो-दो चार-चार घंटे उसीपर किताबें खोल कर पढ़ते रहते थे। इस मकान में उन्हें बैठकर लिखते-पढ़ते बहुत कम देखा है। मित्र विशेष का भोजन-सत्कार वह दूध से किया करते थे।

इन्हीं दिनों में कभी कभी वह सनातन-धर्म-सभा के जल्से में भी जाया करते थे और कुछ व्याख्यान भी दिया करते थे। साधु शिवगुणाचार्य जी ने भी उन्हें अपने महोत्सव का कुछ काम सुपुर्द कर दिया था, परंतु अधिक ध्यान करने पर वह उससे तत्काल पृथक होगए थे। बाद में साधूजी के साथ की ठी[illegible]अवस्था लेखक को ज्ञात नहीं है। हाँ, यह एक पत्र में [illegible]ा था कि साधुजी व्यास-पूजा के दिन लाहौर में एक मिठाई की थाली भेंट करके गोसांईजी से दीक्षा ग्रहण की थी

दुःखों को भी गोसांईजी बड़े धैर्य और संतोष के साथ सहन किया करते थे। एक दिन वह अपने निवास-स्थान पर नित्य से अधिक देर के पश्चात् पधारे। मुखमंडल से शोक-संताप के चिन्ह परिलक्षित थे। लेखक ने कारण पूछा। एकांत में कहने लगे कि "आज दोपहर के पश्चात् कालेज में एक पत्र मिला जिससे बड़ी बहन की असमय मृत्यु की घटना ज्ञात हुई। यही एक बहन थी और इसीने शिशुपन में मुझे बच्चों की नाईं पाला था। पत्र पढ़कर मौनता की अवस्था में मैं रावी नदी की ओर चला-गया। एकांत में रक्त की स्वाभाविक उष्णता अश्रुपात द्वारा कम करके इष्ट देव से प्रार्थना की कि इस दुःख को वीरता के साथ सहन करने की शक्ति प्रदान हो और इस समय से स्वर्गीया बहन की

केवल एक पवित्र स्मृतिशेष रह जाय। और किसी प्रकार का अधिक रंज न हो, जिससे कर्तव्यों के पालन में भूल न होने की आशंका न रह जाय।"

गोसाईंजी के मनो-विनोद के कृत्य अत्यंत स्वल्प थे। सवेरे शाम वाटिका-विचरण अथवा रावी नदी के नीर-प्रवाह एवं तरंगों के परस्पर टकराने को ध्यान-पूर्वक देखना था और कभी-कभी मित्रों से भी अवकाश के समय मिलने जाया करते थे। स्मरण नहीं है कि लेखक ने उन्हें कभी समाचार पत्र या साहित्य-पत्रों को पढ़ते देखा हो। हाँ, कभी-कभी वह उर्दू-फ़ारसी की सूफ़ी-मत-संबंधी शैरें लेखक को सुनाया करते थे। कुछ कवियों के वचन सुनकर उनपर निस्तब्धता छा जाती थी। मतलब यह कि या तो गोसाईं जी पढ़ते या बातें करते रहते थे, या जब इन बातों से अव[illegible]ाश पावें, तत्काल आँखें बंदकर के महाप्रणव "ॐ" का जप आरंभ कर के उ[illegible]के ध्यान में तन्मय हो जाते थे। उन का कथन था कि चित्त पारे के समान चंचल है, इसे प्रतिक्षण अपने अधिकार में रखना चाहिए, अन्यथा यह धृष्टता पर तुल जाता है।

माला फेरने को गोसाईंजी अधिक महत्त्व नहीं दिया करते थे। कहते थे कि चिरकालिक अभ्यास के पश्चात् अँगुलियाँ चला करती हैं, परंतु चित्त भाग जाता है।

ईश्वर से एकांत वार्तालाप के वे बड़े ही पक्षपाती थे। एक दिन लेखक ने उन से एकांत में चर्चा की कि इस देश के कल्याण के लिये अनेक प्रयत्न हो रहे हैं, सब से प्रभावशाली उपाय क्या हो सकता है? कहने लगे कि "हर एक अच्छा काम अपने स्थान पर अच्छा है, परंतु हमारा कुछ और विचार है। आरंभ में यह चाहिए कि कुछ थोड़े से

पवित्र हृदय और सदाचारी पुरुष एकत्रित किए जाँय। इस के बाद एक नियत समय तक रात-दिन बारी-बारी से परमात्मा के निकट में इस देश की यथार्थ भलाई के लिये ईश्वर से प्रार्थना का क्रम जारी रक्खा जाय। एक समाप्त करे, दूसरा उसकी जगह बैठ जाय। २४ घंटों के भीतर एक क्षण भी ऐसा न हो कि एक न एक व्यक्ति पूजा के आसन पर ईश्वर से प्रार्थना न कर-रहा हो। इस प्रकार हमारी सद्भावनाएँ अवश्य उचित समय पर पूरी होजायँगी। और देश में पवित्र स्वभाव और शुद्ध अंतःकरण वाले मनुष्यों का एक ऐसा समाज विद्यमान हो जायगा जो प्रत्येक विभाग में वीरता और सचाई के साथ काम कर सकेगा। साथ ही एक संदूक में कुछ नगद द्रव्य भी रखदिया जाय और इस समुदाय के व्यक्तियों को सूचित कर दिया जाय कि अत्यंत निजी आवश्यकताओं के लिये विना पूछे इस द्रव्य को काम में लाया करें। इस के बाद फिर बाहु-बल से उत्पन्न करें। जितना लिया गया था, उतनाही या उससे कुछ अधिक फिर संदूक में डाल दिया करें।"

एक दिन लेखक ने गोसाईं जी से पूछा कि "आप की हार्दिक इच्छा क्या है, विद्यार्थियों को कॉलेज में पढ़ाना या कुछ और?" कहने लगे कि "यह क्रम अस्थायी है, स्त्री-पुत्रों की आवश्यकता के लिये कुछ एकत्रित कर देने के पश्चात् दिन-रात सारे देशमें सदुपदेश (देना) मेरा अंतिम ध्येय है। जिस जगह जाया करेंगे, विद्यार्थियों को कुछ पढ़ाकर केवल दूध के लिये कुछ ले लिया करेंगे; और हमें किसी वस्तु से प्रयोजन न होगा। सदुपदेशों के द्वारा इस देश के आत्मिक अँधकार को दूर कराना मुख्य समझता हूँ"।

मिस्टर रोज़वेल्ट प्रेज़िडेंट संयुक्त प्रदेश अमेरिका का स्वयं

उनके दर्शनों को आना सिद्ध करता है कि इस युग में भी भारतभूमि के साधु-महात्माओं में वह गुण विद्यमान हैं जिनके आगे सांसारिक विभव और ऐश्वर्य, तेज और प्रताप नत-शिर हैं।

लेखक को गोसाईं जी ने दो अँगरेज़ी पुस्तकें स्मृतिरूप में प्रदान की थीं। एक स्टोरी ऑफ़ दी इँगलिश लिटरेचर, जो इँगलैंड की किसी कर्मनिष्ठ महिला की लिखी हुई है। गोसाईं जी इस महिला को कृपालु माता कहा करते थे। वह कहते थे कि जिस प्रकार माता अपने बच्चों को अच्छी कहानियों के द्वारा विज्ञानमय लाभदायक बातें सिखाती है, इसी तरह उन्होंने मुझे अँगरेज़ी सभ्यता के इतिहास से परिचित किया है। दूसरी पुस्तक लाइट ऑफ़ एशिया जिसके लेखक सर एडविन आर्नल्ड थे। यह महात्मा बुद्ध का जीवन चरित्र है। इसे भी प्रायः गोसाईं जी पढ़ा करते थे।

किं बहुना, अब इन बातों में क्या रक्खा है। स्मरण करने से और चित्त को दुःख होता है।

एक आली दमाग़ था न रहा ;
मुल्क में इक चराग़ था न रहा।